

**वीर  
उसको जानिए**

# वीर उसको जानिए

नवीन गुलिया

## अनुक्रमणिका

1.	कर्मयुद्ध	9
2.	बचपन	12
3.	सत्य की परीक्षा	14
4.	मेरा बचपन	16
5.	एक कहानी : एक दिशा	19
6.	आत्म-विश्लेषण एवं परिवर्तन	20
7.	सत्य और सिद्धांत	26
8.	ग्रामीण जीवन का अनुभव	27
9.	मेरे स्कूली जीवन के अंतिम पाँच साल	31
10.	राष्ट्रीय रक्षा अकादमी	37
11.	एक दुर्घटना : एक चुनौती	39
12.	‘कर्म ही अधिकार है’	41
13.	जीवन का सबसे बड़ा सत्य	41
14.	‘वीर’	44
15.	भारतीय सैन्य अकादमी	46
16.	मृत्यु से एक मुलाकात	48
17.	जीवन पाने का संघर्ष	52
18.	अपने जीवन को फिर बनाने का मेरा संघर्ष	59
19.	जरा सा जीवन	62
20.	कंप्यूटर और शतरंज	65

21.	जीवन में वापसी	69
22.	स्वावलंबन : एक प्रयास और सफलता	73
23.	दिल्ली में मेरी वापसी	76
24.	दिल्ली में वापसी	78
25.	एक असंभव लक्ष्य	79
26.	हिमालय की ओर : पहला प्रयास	82
27.	हिमालय की ओर दूसरा प्रयास	87
28.	अंतिम विजय : एक खोज	96
29.	असंभव से भी असंभव अभियान	99
30.	एक असंभव मिशन	103
31.	मिशन मार्सिमिक की शुरुआत	105
32.	वो जरूरतमंद बच्ची	117
33.	जीवन की सीख	120
34.	प्रेरणात्मक शायरी	126

## वीर उसको जानिए

### दृश्य एक—

वर्ष 1996 की सर्दियों का दिन, दोपहर के बाद का समय। पुणे शहर के खडकी सैन्य अस्पताल का दृश्य। ढाई किलोमीटर की हलकी चढ़ाई की एक सड़क। अस्पताल की एक व्हीलचेयर (पहियोंवाली कुरसी) पर बैठा मैं कुछ इधर-उधर लुढ़कता-सा, पहियों के घेरों में अपने अँगूठे को फँसा, कुरसी को इस चढ़ाई पर चढ़ाने की कोशिश कर रहा हूँ। एक बार के धकेलने में मात्र एक से दो फीट ही चला पाता हूँ। लगभग आधे घंटे का समय हो चुका है और इतने समय में मैं मात्र सौ मीटर ही आ पाया हूँ। पता नहीं कितना समय और लगे इस चढ़ाई के ऊपर तक पहुँचने में; किंतु मुझे इसकी अधिक चिंता नहीं है।

पिछले कई माह से प्रतिदिन यही रास्ता तय करते-करते मेरे हाथों में छाले पड़ गए हैं। अँगूठे और उँगलियों में गाँठें पड़ गई हैं। बाँहों की कुछ काम करती मांसपेशियाँ दर्द करने लगी हैं। लेकिन इन सबसे बेखबर-सा एक सैनिक की तरह एकटक ध्यान के साथ, बिना कुछ सोचे-समझे, पूरी लगन और पूरे श्रम के साथ, अपनी लिखी एक कविता 'कर्मयुद्ध' की पंक्तियाँ दोहराता मैं अपने लक्ष्य की ओर एक-एक कदम बढ़ रहा हूँ।



## कर्मयुद्ध

राह है कठिन बड़ी, परिस्थिति विरुद्ध है  
जीवन है यह युद्ध है, यह युद्ध है, यह युद्ध है।  
राह चलते मिट गई, आस वो तू नहीं  
कदम तले जो दब गई, घास वो तू नहीं  
समय से पहले बुझ गई, प्यास वो तू नहीं  
आँधी में बिछ गई, कपास वो तू नहीं।  
विराट् एक वृक्ष तू, शक्ति से समृद्ध है  
जीवन है यह युद्ध है, यह युद्ध है, यह युद्ध है।  
आँधियाँ चल रहीं, राह है खल रही  
हिम्मत आँखें मल रही, लौ फिर भी जल रही  
हार को न मान तू, राह को पहचान तू  
सृष्टि का अभिमान तू, है वही इनसान तू।  
साहस से संकल्प कर, विश्वास तेरा दृढ़ है  
जीवन है यह युद्ध है, यह युद्ध है, यह युद्ध है।

अपनी यह कविता दोहराता मैं एक सैनिक की तरह अपने लक्ष्य की ओर  
एक-एक कदम बढ़ रहा हूँ।

क्या ? एक सैनिक की तरह ?  
हाँ, एक सैनिक की तरह।  
किंतु सैनिक तो कुरसी पर नहीं होते ?  
क्या ? सैनिक कुरसी पर नहीं होते ?

## वीर उसको जानिए

दृश्य दो—

वर्ष 1994 का अप्रैल का महीना। भीषण गरमी पड़ रही है। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में सैन्य प्रशिक्षण पा रहे प्रशिक्षणार्थियों का अंतिम प्रशिक्षण शिविर। महाराष्ट्र प्रांत की सह्याद्रि पहाड़ियों की श्रृंखला में एक टीलेनुमा पहाड़ी के ऊपर हम बारह सह प्रशिक्षणार्थी, सैन्य युद्ध की वरदी पहने हुए और सैन्य सामान व हथियार से लदे हुए एक साथी को घेरकर खड़े हैं, जो धूप और गरमी में चलते रहने के कारण गिरकर बेहोश हो चुका है। उसे जल्दी किसी अस्पताल में पहुँचाने की आवश्यकता है, अन्यथा उसकी जान को खतरा हो सकता है। सब साथी, सुबह से बिना खाने और पानी के धूप में चलते रहने के कारण, खुद ही बहुत बुरी, थकी हुई हालत में हैं।

एक सैनिक अपने सामान और हथियार को किसी हालत में नहीं छोड़ सकता, बेशक जान से हाथ धोना पड़े। अतः हमें अपने सामान को भी नहीं छोड़ना था और अपने बेहोश साथी को भी अस्पताल तक पहुँचाना था।

हमारे कमांडर ने फैसला किया कि हम में से पाँच सबसे सेहतमंद लड़के अपने दोस्त को जल्द-से-जल्द अस्पताल पहुँचाने की कोशिश करेंगे और बाकी वहीं किसी छाँव में सामान के साथ रुकेंगे। मैं भी उन पाँच में था, जिन्हें अपने साथी की मदद करने के लिए चुना गया था। हम अधिक शक्तिशाली अवश्य थे, लेकिन हम भी अपनी थकान की सीमा को बहुत पहले पार कर चुके थे। चुनौती कठिन थी, किंतु यह सामान्य परिस्थिति नहीं थी।

हमें अपने साथी की जान बचानी थी। हम सबको उस साथी को कंधे पर उठाकर बारी-बारी से भागना था। जब एक थक जाए तो दूसरे को उसे उठा लेना था। हमारी सोच के अनुसार इस तरीके को अपनाकर हम शीघ्र-से-शीघ्र अपने साथी को अस्पताल तक पहुँचा सकते थे।

हमने पहाड़ियों के बीच से भागना शुरू किया और एक-एक कर बारी-बारी से अपने साथी को उठाकर हम दौड़ रहे थे। दौड़ते-दौड़ते शाम होने को



### वीर उसको जानिए

आ गई। हमारे पैर थकान से लड़खड़ाने लगे थे। एक स्थान पर खड़े रहना भी कठिन प्रतीत हो रहा था। हम अपने मुख्य शिविर के पास पहुँच चुके थे। वहाँ चिकित्सा सुविधा उपलब्ध थी और अस्पताल ले जाने के लिए एंबुलेंस गाड़ी भी उपलब्ध थी। वहाँ पहुँचते-पहुँचते हमारा एक साथी और गिर पड़ा था; लेकिन हम पहुँच गए थे और अब दोनों के ठीक हो जाने की पूरी संभावना थी।

सैनिक हमेशा एक सैनिक होता है और यह आवश्यक है कि हम अपने जीवन में सर्वप्रथम एक सैनिक बनें; क्योंकि युद्ध सेनापतियों द्वारा नहीं जीते जाते, सैनिकों द्वारा जीते जाते हैं। और यदि आप एक अच्छे सैनिक नहीं बन सकते तो आप कभी एक अच्छे सेनापति नहीं बन पाओगे। ऐसा कुछ मैंने प्रशिक्षण के समय सीखा था।

## बचपन

**मैं** नवीन गुलिया, मेरा जन्म 16 जुलाई, 1973 को दिल्ली छावनी के सैन्य अस्पताल में हुआ। माता का नाम निर्मला देवी एवं पिता का नाम नारायण सिंह गुलिया। पिता सेना में अधिकारी थे और माता एक गृहिणी।

मुझे बताया जाता है कि मैं बचपन में भारी वजन का एक आलसी-सा बालक था, जिसने चलना भी बहुत कठिनाई से और परिवारजनों के अथक प्रयासों के बाद सीखा था।

मेरी बचपन की प्रारंभिक स्मृतियाँ बहुत छुटपन की हैं, जब मुझे शायद चलना भी नहीं आता था। और यह एक दो नहीं, बल्कि बहुत सी स्मृतियाँ हैं। मैंने अपने माता-पिता से समय-समय पर यह पूछकर निश्चित भी किया है कि ये स्मृतियाँ मेरी कल्पना मात्र नहीं हैं, अपितु सत्य हैं।

मुझे अपने बचपन की पहली स्मृतियों से याद है कि मैं बाकी बच्चों से सब खेलों में कुछ पिछड़ा ही रहता था। मैं उनसे तेज दौड़ने में समर्थ नहीं था। मैं पतंग नहीं उड़ा पाता था। मैं एक कंचे से दूसरे को नहीं मार पाता था। मैं फेंकी हुई गेंद को पकड़ नहीं पाता था और क्रिकेट जैसे खेल में तो बाकी बालक आपस में लड़ते थे कि उनको मुझे अपने दल में नहीं रखना। यह सब शायद इसलिए था कि मैं उम्र में उनसे कम था, कद-काठी में भी छोटा था, या शायद मैं बस कमजोर ही था। किंतु यह हर चीज में सबसे पिछड़ना मुझे कुछ व्यथित अवश्य करता था। मैं भी बाकी बच्चों के साथ दौड़ में आगे आना चाहता था, अच्छा खेलना चाहता था और प्रशंसा

## वीर उसको जानिए

का पात्र बनना चाहता था। किंतु प्रयत्न करने पर भी मैं उनसे बेहतर नहीं कर पाता था।

एक समय की बात है, शायद मैं पहली या दूसरी कक्षा में था। हिमाचल प्रदेश की एक छोटी सी छावनी योल कैम्प के पास एक छोटे से कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ता था। हमारे स्कूल का वार्षिकोत्सव समीप था। तैयारियाँ जोरों पर थीं। मेरी कक्षा में से आठ सबसे तेज दौड़नेवाले बच्चों को छाँटा जाना था। उन आठ बच्चों को वार्षिकोत्सव के दिन सब दर्शकों के सामने दौड़ने का अवसर प्राप्त होना था। मेरा बहुत मन था कि मैं भी उन आठ में चुना जाऊँ; किंतु जब चयन करने के लिए दौड़ हुई तो मैं पहले आठ तो क्या, अंतिम एक-दो में आया।

किंतु मेरा मन फिर भी न माना। जिस दिन अंतिम दिन था और दौड़ प्रारंभ होने का समय निकट था, मैं वहीं आस-पास चक्कर लगा रहा था कि शायद मौका मिल जाए। मेरे सौभाग्य से उन आठ में से एक बालक अनुपस्थित था। किंतु मैं फिर भी चिंतित था कि कहीं ऐसे ही घुस जाऊँ तो पकड़ा न जाऊँ! मैं आस-पास चक्कर लगा ही रहा था कि एक अध्यापक ने मुझे पकड़कर रिक्त स्थान भरने के लिए उन आठ में खड़ा कर दिया।

हमें पंक्तिबद्ध कर मैदान के एक छोर पर ले जाया गया, जहाँ दौड़ प्रारंभ होने की रेखा बनी थी। मैदान के बगल में सिलसिलेवार लगे बहुरंगी शामियानों में कुरसियों पर दर्शक बैठे थे। दौड़ शुरू होने की सीटी बजाई गई और मैं बहुत तेज दौड़ पड़ा। किंतु कुछ ही पलों में सब बालक आगे निकल गए और मैं सबसे बहुत पीछे रह गया। जब मैंने सबसे इतना पीछे दौड़ खत्म की तो दर्शक मुझे देख उहाके लगा रहे थे।

□

## सत्य की परीक्षा

पहली या दूसरी कक्षा की ही बात है। एक दिन कुछ बच्चे कुछ शैतानी कर रहे थे। मैं उन बच्चों में नहीं था। बात हमारी अध्यापिका तक पहुँची तो उन्होंने कक्षा में उन बच्चों को आगे आने को कहा। सजा के डर से कोई बच्चा आगे नहीं आया। इस पर अध्यापिका ने बाकी बच्चों से उन बच्चों का नाम लेने को कहा। कक्षा के बच्चे एक-एक बच्चे का नाम लेने लगे। जिस बच्चे का नाम लिया जाता, उसे कक्षा के सामने आकर अपनी हथेलियों पर एक-एक डंडा खाना पड़ता और वह अपने हाथ मसलता पहले सजा मिल चुके बच्चों के साथ आकर खड़ा हो जाता।

जब सब ऊधमी बच्चों को सजा मिल चुकी तो अध्यापिका ने कक्षा के बच्चों से पूछा, “क्या कोई और बच्चा भी था?”

पता नहीं एक बच्चे के मन में क्या आया और वह जोर से बोला, “नवीन भी था।”

मेरे तो होश उड़ गए और मैं अध्यापिका की ओर मुख कर बोलने ही वाला था कि मैंने नहीं किया; किंतु मैं कुछ कह पाता, इससे पहले ही मेरी अध्यापिका ने बड़ी-बड़ी आँखें कर सिर हिलाकर ‘नहीं’ का इशारा किया। अर्थात् मैं असत्य न बोलूँ। मैं कुछ सहम गया और चुपचाप सजा पाने आगे आ गया। इसमें अध्यापिका की गलती नहीं थी, किंतु यह घटना मेरी यादों में कहीं छप-सी गई है।

मैं मात्र खेलकूद में ही पीछे नहीं था, बल्कि मेरा लेख भी खराब था और

### वीर उसको जानिए

परीक्षा में मेरे अंक भी कुछ अच्छे नहीं आते थे। मैं सबसे पिछड़-सा रहा था। किंतु मैं चाहता था कि मैं भी अच्छा कर सकूँ और प्रशंसा का पात्र बन सकूँ। अपने बचपन की कुछ प्रारंभिक स्मृतियों और उन स्मृतियों से जुड़े भावों को लेकर मैंने एक कविता लिखी। उस कविता को नीचे प्रस्तुत कर रहा हूँ।



## मेरा बचपन

मेरा बचपन

आशाओं और उम्मीदों का बचपन

रेत में उँगलियों के चलने से बनता-बिखरता वो बचपन

कभी सकुचाता, कभी उगते सूरज-सा उभरता वो बचपन

अकेले में खिलखिलाता कभी, कभी भीड़ में खो जाता वो बचपन

कभी गगन में पंछी-सा उड़ता, कभी सागर में सीप-सी उम्मीदों को निभाता वो बचपन

कभी बहुत दूर-दूर, कभी बहुत समीप-सा बचपन

नन्हे कदमों पर डगमगाता-सा अजीब सा बचपन

आशाओं और उम्मीदों का बचपन

मेरा बचपन

आशाओं और उम्मीदों का बचपन

चाहकर भी चाह को छिपाता वो बचपन

संकोच में शरमाकर कुछ कह जाता वो बचपन

रेत में बैठ कंकड़-पत्थरों के खेल सजाता वो बचपन

धीरे-धीरे कर, एक-एक सीढ़ी चढ़कर आता वो बचपन

चुप-सा इधर-उधर देखता, कभी गाता-गुनगुनाता वो बचपन

कभी थोड़ा निडर, कभी सहम जाता वो बचपन

थोड़ा सा मिलता, फिर खो जाता वो बचपन

आशाओं और उम्मीदों का बचपन

मेरा बचपन।

## वीर उसको जानिए

क्या मैं हमेशा एक कमजोर बालक ही रहूँगा ?

क्या खेल-कूद में, पढ़ाई में या जीवन में मैं कभी अच्छा कर पाऊँगा ?  
इन सब प्रश्नों के उत्तर तो एक दिन समय ही दे पाएगा।

### तीसरा दृश्य—

वर्ष 2006 के दिसंबर महीने की 3 तारीख। राष्ट्रपति भवन के निकट स्थित विज्ञान भवन के भव्य समारोह केंद्र का दृश्य। एक विशाल सुसज्जित मंच के समक्ष लगभग 1,500 दर्शक बैठे हैं। विशेष अतिथियों के लिए विशेष स्थान है। पत्रकारों के लिए एक ओर भिन्न स्थान है। मैं आगेवाली पंक्ति में अपनी व्हीलचेयर पर बैठा हूँ। आज मुझे भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के द्वारा सम्मानित किया जा रहा है और वे मुझे 'राष्ट्रीय आदर्श' की उपाधि व पारितोषिक से सम्मानित करने वाले हैं।

मंच पर स्वयं भारत के राष्ट्रपति डॉ. कलाम कुछ अन्य गणमान्य मंत्रिगण के साथ बैठे हैं। मेरी उपलब्धियों के साथ मेरा नाम पुकारा जाता है और मैं अपनी व्हीलचेयर को चलाकर मंच की ओर बढ़ता हूँ। पूरा भवन तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठता है। व्हीलचेयर से मंच के ऊपर जाने के लिए एक ओर एक ढलान बनाई गई है। एक उपस्थित सहायक की सहायता से मैं मंच पर पहुँचता हूँ।

जैसे-जैसे मैं राष्ट्रपतिजी के पास पहुँचता हूँ, तालियों की गड़गड़ाहट बढ़ती जाती है, और जैसे ही राष्ट्रपतिजी मुसकराते हुए मुझसे हाथ मिलाते हैं, सब लोग इस उपलक्ष्य के सम्मान में ताली बजाते हुए अपने स्थान पर खड़े हो जाते हैं। राष्ट्रपति महोदय मेरी ओर मुसकराते हुए मेरे प्रोत्साहन में कुछ शब्द बोलते हैं, जो तालियों की आवाज में साफ सुनाई नहीं देते। वे मुझे मेरा पारितोषिक देते हैं और मैं उनके साथ कैमरे की ओर मुख करता हूँ—इस यादगार पल की फोटो खिंचवाने के लिए। विभिन्न टी.वी. चैनल भी इस पल को प्रसारित कर रहे हैं। और मैं उस समय को याद कर रहा हूँ, जब मुझे एक कमजोर बालक समझा जाता था—एक ऐसा बालक, जो हर चीज में पिछड़ता

### वीर उसको जानिए

ही रहता था। वह बालक मुझमें अब भी जिंदा है। वह इस पल से प्रसन्न तो बहुत है, किंतु वह बहुत शांत भी है।

यह परिवर्तन कैसे आया ?

वह कमजोर बालक आज एक राष्ट्रीय आदर्श बन गया !

ऐसा कैसे संभव हुआ ?

राष्ट्रीय आदर्श कोई एक क्षेत्र में सफल होकर तो नहीं बन सकता ! उसके लिए तो बहुत से क्षेत्रों में बहुत परिश्रम करना पड़ा होगा, बहुत धैर्य से काम लेना पड़ा होगा।

ऐसा कैसे हो गया ?

□



## एक कहानी : एक दिशा

तब मैं शायद दूसरी कक्षा में था। एक दिन मेरी माँ ने हम दोनों भाइयों को बिठाकर हिरण्यकशिपु और भक्त प्रह्लाद की कहानी सुनाई। यह कहानी सुनने-पढ़ने में बहुत से लोगों को बहुत साधारण सी कहानी लगे; किंतु जब मैंने यह कहानी सुनी तब एक बालक के रूप में मैं एक ऐसी दिशा की खोज में था, जहाँ मुझे स्नेह व प्रोत्साहन मिले। उस कहानी को सुनकर मुझे यह ज्ञात हुआ कि यदि आप एक अच्छे व्यक्ति बनें तो लोगों का तो क्या, ईश्वर का भी प्रेम आपको मिलता है।

इस कहानी को सुनने के बाद ही मेरी रुचि एक अच्छा बालक बनने की ओर हो गई।

एक बालक का मन किसी एक छोटी सी बात से भी अपनी दिशा पा लेता है। अब इस छोटी सी कहानी से ही मुझे दिशा मिल गई थी। मैंने ठान लिया था कि मैं एक अच्छा बालक बनकर दिखाऊँगा और सबके प्रेम व प्रशंसा का पात्र बनूँगा।

□

## आत्म-विश्लेषण एवं परिवर्तन

सन् 1980 में हिमाचल प्रदेश के उस छोटे से कस्बे से मेरे पिता का तबादला देश की राजधानी दिल्ली में हो गया। उस छोटे से स्कूल से निकल मैंने उस समय के देश के सबसे प्रसिद्ध स्कूलों में से एक में दाखिला ले लिया। यहाँ हर कक्षा में 60 के ऊपर विद्यार्थी होते थे और खेल-कूद व शिक्षा दोनों में ही स्पर्धा का स्तर बहुत ऊँचा था। मैं तो पहले ही कमजोर था; किंतु मैंने भी ठान लिया था कि मैं भी एक श्रेष्ठ विद्यार्थी बनकर रहूँगा। दूसरों के द्वारा अपने को एक कमजोर बालक समझे जाने से हतोत्साहित होने के बजाय मैंने उसे अपनी प्रेरणा माना और स्वयं को प्रोत्साहित किया।

‘किसी भी परिस्थिति से हम हतोत्साहित भी हो सकते हैं और प्रोत्साहित भी। अब यह निर्णय हमें लेना है कि हम हतोत्साहित होंगे या प्रोत्साहित।’

तीसरी कक्षा में ही एक दिन हमारी शिक्षिका ने हमें दीपावली के त्योहार पर एक कविता लिखने को कहा। अन्य छात्रों को यह करना बहुत कठिन लगा और अधिकतम छात्रों ने या तो अपने बड़ों से लिखवा लिया या इधर-उधर से देख कुछ लिख लिया। मुझे तो यह बहुत सरल कार्य लगा। मैंने अपने भाव कुछ मेल खाती पंक्तियों के रूप में व्यक्त कर दिए और कविता बन गई। मेरी शिक्षिका ने कक्षा के सामने मेरी कविता पढ़ी और उसकी प्रशंसा भी की। मुझे बहुत अच्छा लगा। इससे मेरा रुझान कविताएँ लिखने और लेखन की ओर हो गया। मैं समय-समय पर कविताएँ लिखता रहता।

## वीर उसको जानिए

मेरा लेख खराब था, लेकिन कोई भी मुझे यह न बताता कि लेख को अच्छा कैसे किया जा सकता है। मेरे अध्यापक मेरा लेख खराब होने के कारण मुझे कई सौ बार कुछ पंक्तियाँ लिखने की सजा दे देते, किंतु मेरा लेख न सुधरता। फिर मैंने ऐसा किया कि जिन छात्रों के लेख की अध्यापक प्रशंसा किया करते थे, उन छात्रों के लेख को मैंने गौर से देखा एवं विश्लेषण किया। उससे मुझे अपने लेख की कमियाँ ज्ञात हुईं। इस प्रकार मैं अपने लेख को सुधार सका।

मुझे गणित में भी बहुत कठिनाई हो रही थी और चौथी कक्षा की प्रथम परीक्षा में तो मैं फेल ही हो गया। फिर मेरी अध्यापिका ने मुझे अलग से बुला गणित पढ़ाया और मेरी कमजोरियों को दूर किया। उनकी इस सहायता के कारण अगली परीक्षा में ही मेरे बहुत अच्छे अंक आए और कक्षा के छात्रों ने ताली बजाकर मेरा प्रोत्साहन किया।

क्योंकि तब मैं छोटा था और उन अध्यापिका ने मुझे उसी कक्षा में पढ़ाया था और अब इतना समय हो चुका है कि मुझे उन अध्यापिका का नाम बिलकुल भी याद नहीं है, अन्यथा मैं उनसे अवश्य मिलता और उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता। मैं अब भी आशा करता हूँ कि एक दिन मैं उनसे संपर्क कर पाऊँगा और उनके द्वारा की गई सहायता के लिए उनका धन्यवाद कर पाऊँगा।

**‘श्रम सुधार एवं परिवर्तन का एकमात्र साधन है। यदि आपको सुधार लाना है, परिवर्तन लाना है तो उस दिशा में परिश्रम करो।’**

जब मैं तीसरी या चौथी कक्षा में ही था तब से ही मैंने प्रतिदिन दो-तीन किलोमीटर दौड़ना प्रारंभ कर दिया। मैं प्रतिदिन सुबह अपने कुत्ते ‘जोय’ को लेकर दो-तीन किलोमीटर दौड़ आता। इससे मेरे कुत्ते की नियमित सैर भी हो जाती और मेरी कुछ कसरत भी हो जाती। धीरे-धीरे मेरी सेहत और दौड़ में सुधार होने लगा। मैं फुटबॉल भी खेलने लगा। मुझे फुटबॉल खेलने में बहुत

## वीर उसको जानिए

आनंद आता था। गेंद के पीछे दौड़ना, विरोधी खिलाड़ियों को छकाना और अपने गोल अथवा लक्ष्य की ओर बढ़ना—सब बहुत अच्छा लगता था।

फुटबॉल को मैं जीवन के समान ही समझता हूँ। फुटबॉल में विपक्षी टीम के ग्यारह खिलाड़ी आपको अपने लक्ष्य तक पहुँचने से रोकने का प्रयास करते हैं और आपको चुनौती होती है कि आप उन खिलाड़ियों को मात, लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास करें। इसी के समान जीवन में आनेवाली कठिनाइयाँ हमारे लिए एक चुनौती के समान हैं, जिन्हें हराकर हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचना होता है।

फुटबॉल में मैं अच्छा खेल पाता था और मुझे आनंद भी बहुत आता था। फुटबॉल खेलने से मेरे अंदर एक नई ऊर्जा आ जाती थी।

किंतु मैं क्रिकेट नहीं खेल पाता था। बहुत प्रयास करने के बाद भी मैं गेंद को बल्ले से नहीं मार पाता था। जब विरोधी गेंदबाज गेंद फेंकता तो मैं घबरा जाता कि कहीं गेंद छूट न जाए और इसी घबराहट में गेंद मुझसे हमेशा छूट जाती और मैं आउट हो जाता। पता नहीं मैं क्रिकेट में कभी बेहतर कर पाऊँगा या नहीं!

**‘भय ही विफलता का मुख्य कारण है। यदि सफल होना है तो निर्भय बनो।’**

इसी बीच मेरे पिता का तबादला देश की राजधानी दिल्ली से पंजाब के एक छोटे से जिले गुरदासपुर के एक छोटे से कस्बे तिब्ड़ी में हो गया। मेरा दाखिला वहाँ के एक छोटे से स्कूल में हो गया। कक्षा में मेरे अंक प्रथम दो-तीन बच्चों में ही आते और मैं खेल-कूद में भी बेहतर कर पा रहा था। मैं विभिन्न वाद-विवाद, भाषण और नाट्य स्पर्धाओं में भी हिस्सा लेने लगा था।

इसी समय में मैंने प्रतिदिन चार-पाँच किलोमीटर दौड़ना और घंटा भर कसरत करना भी शुरू कर दिया। मैं मुक्केबाजी के खेल का भी प्रशिक्षण लेने लगा। मेरे उस्ताद ने मुझे एक बहुत आवश्यक पाठ पढ़ाया—

## वीर उसको जानिए

‘अगर अपने में सुधार लाना चाहते हो तो जिस दिशा में सबसे अधिक कठिनाई हो, उस दिशा में कार्य करो।’

इसी शिक्षा का मैंने अपने जीवन में बार-बार प्रयोग किया और अपने जीवन को सार्थक बनाया। आज मेरा यह मानना है कि—

‘जब भी जीवन में आपके समक्ष कई विकल्प उपलब्ध हों तो आप उनमें से सबसे कठिन विकल्प को चुनो।’

(अर्थात् कठिन विकल्पों को चुनकर ही आप अपने जीवन को सार्थक बना पाओगे। जीवन के अलग-अलग पड़ाव पर जो सबक मैंने सीखे और जिन सब शिक्षाप्रद बातों को मैंने अपने जीवन में गाँठ बाँधकर रख लिया, उन्हीं सबके कारण मैं जीवन में हर कठिन परिस्थिति को मात दे सका।

मैंने देखा है कि लोग कोई भी अच्छा पाठ पढ़कर भूल जाते हैं। कभी भी जीवन में सीखी अच्छी बातों का स्मरण नहीं करते। जीवन का सार ही यह है कि जीवन में जहाँ जो अच्छी बात सीखो, उसे मोती की तरह सँजोकर रख लो और आवश्यकता पड़ने पर उनका प्रयोग करो।)

मैं नियमित कसरत करने और दौड़ने के कारण स्वस्थ व शक्तिवान तो बन रहा था, किंतु क्रिकेट का खेल मैं फिर भी नहीं खेल पाता था। हर बार पहली गेंद पर ही आउट हो जाता था। फिर एक दिन मेरी बारी आई। अपनी टीम की ओर से मैदान में उतरनेवाला मैं आखिरी खिलाड़ी था। मुझमें कोई डर नहीं था और मेरे साथियों को मुझसे कोई विशेष प्रदर्शन की आशा भी नहीं थी, क्योंकि वे जानते थे कि मैं क्रिकेट नहीं खेल पाता था। मैंने भी सोचा कि आज कुछ अलग करूँ। तो मैंने ठान लिया कि मैं पूरी ताकत से अपना बल्ला घुमा दूँगा।

विरोधी टीम के सबसे तेज गेंदबाज ने दौड़कर बहुत तेज गेंद मेरी ओर फेंकी और मैंने अपना बल्ला घुमा दिया। गेंद सीमा रेखा के पार जाकर गिरी और मेरी टीम के खिलाड़ियों में हँसी व उल्लास की लहर-सी दौड़ गई। वे

### वीर उसको जानिए

तालियाँ बजा रहे थे। दूसरी गेंद पर मैंने फिर बल्ला घुमाया और अबकी बार गेंद टप्पा खाकर सीमा रेखा के पार चली गई। लगातार छक्का और चौका मारने से माहौल ही बदल गया। मेरी टीम के खिलाड़ी, जो पहले चुप बैठे थे, अब उठकर तालियाँ बजा रहे थे और चिल्ला-चिल्लाकर मेरा उत्साह-वर्धन कर रहे थे। मेरी रगों का खून तेज दौड़ने लगा था। मैंने क्रिकेट में भी जीत हासिल कर ली थी।

उस दिन के बाद से मैं क्रिकेट में निरंतर अच्छा प्रदर्शन करने लगा। कुछ समय बाद तो मैं टीम में आखिरी स्थान से हटकर पहले स्थान पर आ गया। अपनी टीम के लिए मैं हमेशा पहले नंबर पर बल्लेबाजी करता। मैं गेंदबाजी भी करने लगा और मुझे एक श्रेष्ठ खिलाड़ी माना जाने लगा।

मैंने जीवन का सबसे आवश्यक पाठ सीख लिया था—

‘भय ही विफलता का मुख्य कारण है। यदि सफल होना है तो निर्भय बनो।’

यह मेरे जीवन का सबसे आवश्यक पाठ था और मैं इस पाठ को हमेशा याद रखना चाहता था।

□

## वीर उसको जानिए

अब तक :-

‘किसी भी परिस्थिति से हम हतोत्साहित भी हो सकते हैं और प्रोत्साहित भी। अब यह निर्णय हमें लेना है कि हम हतोत्साहित होंगे या प्रोत्साहित।’

‘श्रम सुधार एवं परिवर्तन का एकमात्र साधन है। यदि आपको सुधार लाना है, परिवर्तन लाना है तो उस दिशा में परिश्रम करो।’

‘भय ही विफलता का मुख्य कारण है। यदि सफल होना है तो निर्भय बनो।’

‘अगर अपने में सुधार लाना चाहते हो तो जिस दिशा में सबसे अधिक कठिनाई हो, उस दिशा में कार्य करो।’

‘जब भी जीवन में आपके समक्ष कई विकल्प उपलब्ध हों तो आप उनमें से सबसे कठिन विकल्प को चुनो।’

‘भय ही विफलता का मुख्य कारण है। यदि सफल होना है तो निर्भय बनो।’

## सत्य और सिद्धांत

एक बार एक राष्ट्रीय स्तर की सामान्य ज्ञान परीक्षा हो रही थी। उस परीक्षा का केंद्र हमारे स्कूल में भी था। यहाँ पर निरीक्षण की अच्छी व्यवस्था नहीं थी, क्योंकि यह एक छोटा सा स्कूल था—और फिर यह कोई मुख्य परीक्षा भी नहीं थी। कम निरीक्षण के कारण सब छात्र एक-दूसरे से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर पूछ रहे थे और नकल कर रहे थे।

मैंने और मेरे मित्र ने यह निर्णय लिया कि हम नकल नहीं करेंगे और जितने प्रश्न स्वयं हमें आते हैं, हम मात्र उन्हीं प्रश्नों का उत्तर देंगे। हमने ऐसा ही किया। कुछ माह बाद जब उस परीक्षा का परिणाम आया तो सब छात्रों के अंक 90 प्रतिशत से ऊपर थे और मेरे व मेरे मित्र के अंक मात्र 60 प्रतिशत के आस-पास थे।

मेरे अंक सबसे कम आए थे, लेकिन मुझे स्वयं पर गर्व था और इस परीक्षा के अंकों का प्रमाण-पत्र मेरे जीवन का अब तक का सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण-पत्र है, ऐसा मैं मानता हूँ।

‘यदि कठिन समय में या प्रलोभन के समय में आप अपने सिद्धांतों से समझौता न करें तो आपको स्वयं पर गर्व होता है और आप एक मजबूत इनसान बनते हैं। वहीं, यदि आप अपने सिद्धांतों से समझौता कर लें तो आप कमजोर हो जाते हैं। अतः कभी भी अपने सिद्धांतों से समझौता न करें।’

□



## ग्रामीण जीवन का अनुभव

मेरा ननिहाल हरियाणा राज्य के जिला झज्जर के गाँव बरहाना में था और मैं अपनी छुट्टियाँ अपने ननिहाल में ही बिताता था। साल में दो-तीन महीने गाँव में ही बीतते थे। गाँव का जीवन मुझे बहुत लुभाता था। मिट्टी की खुशबू, पक्षियों का चहचहाना, पशु, तालाब, खेत, हरियाली और सादा जीवन—सब लुभाते थे।

मेरे नाना सेना से सेवानिवृत्त होकर गाँव में ही रहते थे और ग्राम-सुधार के लिए बहुत काम करते थे। नानाजी सत्संग, योग शिविर और शिक्षाप्रद कार्यक्रम आयोजित करते और मैं इन सब में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता। मैंने उन्हें बिना किसी लाभ की इच्छा के निस्स्वार्थ भाव से दिन-रात लोगों की सेवा करते देखा। और यही देख मेरे मन में भी एक अच्छा इनसान बनने की इच्छा सुदृढ़ हुई। मैं भी चाहता था कि एक दिन समाज के लिए कुछ अच्छा कर सकूँ।

मैंने नानाजी के साथ खेत में काम भी किया। पशुओं को तालाब पर पानी पिलाकर लाना, उनका चारा काटना और अन्य ऐसे ग्रामीण जीवन की दिनचर्या के काम किए। मैंने व्यायाम और कुश्ती में भी हिस्सा लिया।

एक बार गाँव की सालाना कुश्ती का समारोह था। उसमें दूर-दूर के गाँव से पहलवान भाग लेने आते और एक-दूसरे से जोर आजमाते। मेरी भी इच्छा थी कि मैं भी हिस्सा लूँ। लेकिन मेरे नानाजी ने मुझे समझाया कि कुश्ती सिर्फ ताकत से ही नहीं लड़ी जाती, इसके दौंव-पेंच भी सीखने पड़ते हैं। उन्होंने

## वीर उसको जानिए

मुझे सलाह दी कि मैं कुश्ती न लडूँ। लेकिन मैं अपने निर्णय पर अडिग था। मैंने तो कह दिया कि मैं कुश्ती लड़कर रहूँगा।

जब नानाजी ने देखा कि मैं माननेवाला नहीं हूँ तो उन्होंने स्वयं मुझे कुछ दाँव सिखाए। मेरे नाना कद-काठी में छोटे थे, लेकिन उनमें बहुत ताकत थी। उन्होंने तुरंत पंजे लड़ाते हुए मुझसे कहा, 'लगाओ ताकत।' ज्यों ही मैंने जोश में अपनी ताकत लगाई तो वे मेरे हाथों को घुमाकर नीचे बैठ गए और मैं उनके ऊपर से दूसरी तरफ जा गिरा। उन्होंने मेरी ताकत का इस्तेमाल कर मुझे पटक दिया था। मेरी समझ में बात आ गई कि सिर्फ ताकत से काम नहीं चलेगा, इसके लिए दिमाग भी लगाना पड़ेगा और सीखना भी पड़ेगा।

मुझमें बचपन से ही यह प्रवृत्ति आ गई थी कि मुझे जब भी कुछ नया अनुभव करने का या सीखने का अवसर मिलता तो मैं पीछे नहीं हटता। चाहे कुश्ती लड़ना हो, खेल-कूद हो या कला अथवा अध्ययन का क्षेत्र हो, मैं विभिन्न क्रियाओं में पूरे उत्साह के साथ हिस्सा लेने का प्रयास करता।

**‘जीवन का मूल है कि उसमें हम अधिक-से-अधिक अनुभव करने और सीखने का प्रयास करें।’**

मेरे घर में भी कुछ सादगी का माहौल था और कुछ गाँव के जीवन के अनुभव ने भी मुझे सादगी-पसंद बना दिया। और इसके लिए मैं स्वयं को सौभाग्यशाली समझता हूँ।

मेरे पिता का गाँव झज्जर जिले में ही बरहाना गाँव से लगभग तीस-चालीस कोस की दूरी पर था। उस गाँव का नाम 'खेड़ी' था और वह एक बहुत ही छोटा सा गाँव था, जहाँ जाने के लिए सड़क भी नहीं थी। आखिरी के कुछ किलोमीटर तो पगडंडी से पैदल जाना पड़ता था।

मेरा वहाँ भी जाना होता था। मेरे लिए वहाँ जाना सदैव एक प्रेरणात्मक अनुभव होता था; क्योंकि मेरे पिता इसी छोटे से गाँव के एक छोटे से ईंट और मिट्टी के घर से निकल, परिश्रम कर सेना में अधिकारी के पद तक पहुँचे थे।

## वीर उसको जानिए

उनके जीवन के संघर्ष की कहानी मेरे लिए सदैव एक प्रेरणास्रोत रही है। हमारे जीवन में कोई भी पाठ्यक्रम हमें उतना नहीं सिखा सकता, जितना हम अपने आदर्श बड़ों से सीख सकते हैं। मैंने अपने जीवन में बहुत कुछ अपने पिता और नाना के जीवन को देखकर सीखा है।

**‘स्वयं को प्रेरित करना और स्वयं को सदैव प्रेरित रखना जीवन में अति आवश्यक है।’**

ग्रामीण जीवन में रहते और मेरे नानाजी तथा उनके साथियों की संगति में रहकर मेरा रुझान अध्यात्म व दर्शन की ओर भी हुआ। विभिन्न विषयों पर चिंतन-मनन करना मेरे स्वभाव का अंग बन गया। मेरा मानना है कि जीवन आपके अंदर उठ रहे प्रश्नों के उत्तर की खोज का नाम है।

इसी खोज को दर्शाती अपनी कविता ‘खोज’ मैं यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ—

## खोज

रेत की पगडंडियों पर तनहा उठती हुई धूल में  
उभरते हुए एक साए-सा चल रहा हूँ रोज मैं  
कर रहा हूँ सत्य की खोज मैं।

आधी बंद, आधी खुली आँखों से राह को टटोलता  
कभी सन्नाटे में चुप, कभी खुद ही से कुछ बोलता  
पर्वतों में, वादियों में चल रहा हूँ रोज मैं  
कर रहा हूँ सत्य की खोज मैं।

रेत की पगडंडियों पर तनहा उठती हुई धूल में  
उभरते हुए एक साए-सा चल रहा हूँ रोज मैं  
कर रहा हूँ सत्य की खोज मैं।

### वीर उसको जानिए

सुबह होती हुई रोशनी में हरे पत्तों की ओस को निहारता  
चिड़ियों की चहक को, मिट्टी की महक को दिल में यूँ उतारता  
कभी भावनाओं में बहकर, कभी आस्थाओं से उठकर  
हर पल, हर लमहा कर रहा हूँ सत्य की खोज में  
चल रहा हूँ रोज मैं।

रेत की पगडंडियों पर तनहा उठती हुई धूल में  
उभरते हुए एक साए-सा चल रहा हूँ रोज मैं  
कर रहा हूँ सत्य की खोज मैं।



## मेरे स्कूली जीवन के अंतिम पाँच साल

सन् 1986 में पंजाब राज्य के उस छोटे से कस्बे से निकल अबकी बार मेरा दाखिला मेरठ शहर के एक ख्याति-प्राप्त स्कूल में हो गया। मैं अब नौवीं कक्षा में था। मैं अब हॉकी, फुटबॉल, दौड़, तैराकी जैसे विभिन्न खेलों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगा था। मैंने विभिन्न स्तर पर ये खेल खेले। मैंने वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ, कवि सम्मेलनों और नाट्य प्रस्तुतियों में भी हिस्सा लिया। मुझे भिन्न-भिन्न क्षेत्रों और विषयों के बारे में अध्ययन करना अच्छा लगता था। भाषा, विज्ञान, कला एवं खेल-कूद सब विषयों में मेरी रुचि थी।

मैं नियमित रूप से प्रतिदिन चार-पाँच किलोमीटर दौड़कर आता और एक-दो घंटे व्यायाम करता था। फिर एक दिन मुझे साँस फूलने की दिक्कत होने लगी और दौड़ा बिलकुल नहीं जा रहा था। जब मैं डॉक्टर के पास गया तो उन्होंने मुझे बताया कि मुझे दमे की बीमारी है। उन्होंने मुझे पास बिठाया और बड़े शांत तरीके से समझाया कि मुझे खेल-कूद से अपना ध्यान हटा लेना चाहिए, क्योंकि इस बीमारी के रहते मैं कभी खेल-कूद में अच्छा नहीं कर पाऊँगा।

लेकिन मेरा निर्णय इतनी आसानी से परिवर्तित होने वाला नहीं था। मैंने अगले दिन से अपने दौड़ने की दूरी को दोगुना कर दिया और प्रतिदिन आठ किलोमीटर दौड़ने लगा। मैं दोगुना तैराकी भी करने लगा। साँस की दिक्कत के साथ ऐसा परिश्रम करना बहुत कठिन था; लेकिन इसी परिश्रम के कारण मैं उस साँस की समस्या से निजात पा सका। उस समस्या से मैं पहले से और अधिक ताकतवर होकर निकला।

## वीर उसको जानिए

‘परिस्थितियों को कभी स्वयं पर हावी न होने दें। यदि आप में साहस है तो आप जीवन की हर विपरीत परिस्थिति में भी सफल हो सकते हैं।’

‘विपरीत परिस्थितियाँ आग की भट्ठी की तरह होती हैं। उसमें तपकर हम और भी मजबूत व शक्तिशाली होकर निकलते हैं।’

जब मैं ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा में पहुँचा तो यह निर्णय करने की आवश्यकता थी कि मैं कौन सा विषय पढ़ना चाहूँगा। मैं विज्ञान का छात्र तो था, किंतु उसमें भी यह देखना था कि मैं एक डॉक्टर बनने के उद्देश्य से जीव-विज्ञान पढ़ना चाहूँगा या एक इंजीनियर बनने के उद्देश्य से गणित पढ़ना चाहूँगा। मैं बहुत दुविधा में पड़ गया। सही मार्गदर्शन का अभाव तो था ही, ऊपर से सबके सलाह देने से सही निर्णय लेने की क्षमता और भी कम हो गई।

अंत में निर्णय कर मैं दोनों विषय ही पढ़ने लगा। यह मेरे हिसाब से एक चूक थी। यदि आपको सफल होना है तो आपको अपने चुने एक क्षेत्र में अपना पूरा ध्यान लगा देना चाहिए।

जब बारहवीं कक्षा का परिणाम आया तो मेरा परीक्षा फल सराहनीय नहीं आया। यह मेरे स्कूली जीवन की सबसे महत्वपूर्ण परीक्षा थी और इसमें मेरे बहुत कम अंक आए थे। एक छात्र के रूप में यह मेरे लिए बहुत निराशा की घड़ी थी। किंतु मैंने स्वयं को हतोत्साहित नहीं होने दिया। मैंने सोच लिया कि अब मैं दृढ़ और स्पष्ट निर्णय लूँगा। मैंने खेल-कूद की विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेकर यह सबक सीखा था—

‘यदि सफल होना चाहते हो तो दृढ़ व स्पष्ट निर्णय लो और फिर उस निर्णय की सफलता के लिए अथक प्रयास करो।’

मुझे अपने बचपन का सपना याद आ गया। मैं भी अपने पिता की भाँति सेना में अधिकारी बनना चाहता था। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रवेश पाने हेतु प्रवेश परीक्षा के लिए दो-तीन महीने का समय ही शेष था। मैंने उस परीक्षा की

## वीर उसको जानिए

तैयारी में अपने सारे प्रयास लगा दिए। इस प्रवेश परीक्षा में गणित मुख्य विषय था। ढाई घंटे के समय में एक परीक्षार्थी को 120 प्रश्नों के उत्तर देने होते थे। राष्ट्रीय स्तर की यह परीक्षा इतनी कठिन थी कि इस परीक्षा में यदि कोई 120 में से आधे, यानी कि 60 प्रश्नों के उत्तर भी सही दे सके तो वह अपने आपको उत्तीर्ण होने का प्रबल दावेदार मानता था।

मैंने अपने खेल जीवन में सीखा था—

**‘यदि आप सफल होना चाहते हैं तो अपनी तैयारी और अपनी जीत के अंतर को इतना बढ़ाओ कि जीत सुनिश्चित हो जाए।’**

इसीलिए मेरा उद्देश्य 60 प्रश्नों के सही उत्तर देना नहीं था। मेरा उद्देश्य और प्रयास था कि मैं पूरे 120 प्रश्नों के सही उत्तर दे सकूँ। परीक्षावाले दिन जहाँ बाकी विद्यार्थी पूरे समय में आधे प्रश्नों के उत्तर देने के प्रयास में थे, वहाँ मैंने समय पूरा होने से आधा घंटा पहले ही 120 में से 118 प्रश्नों का सही हल निकाल लिया था। दो प्रश्न मुझे आते नहीं थे। जब मैं परीक्षा भवन से निकला तो मैं जानता था कि मैं इस परीक्षा में अवश्य सफल होऊँगा।

मेरा यह मानना है कि—

**‘जीत एक संभावना नहीं होनी चाहिए। जीत एक निर्णय होना चाहिए। यदि आप निर्णय कर लें कि आपको सफल होना है तो कोई आपको रोक नहीं सकता।’**  
**‘विफलता विकल्प नहीं है।’**

कुछ महीने बाद जब उस परीक्षा का परिणाम एक दैनिक समाचार-पत्र में घोषित हुआ तो मैंने एक पुस्तकालय में जाकर अपना परिणाम देखा। मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ था, अतः बहुत खुश हुआ। लेकिन मैं यह भी जानता था कि अभी तो मात्र आधी लड़ाई ही जीती थी।

इस परीक्षा के पश्चात् सफल हुए विद्यार्थियों को एक और परीक्षा से निकलना पड़ता था। सभी सफल हुए विद्यार्थियों को इसी उद्देश्य के लिए बने विभिन्न

## वीर उसको जानिए

सैन्य केंद्रों में चार दिन बिताने थे और इन चार दिनों में उनकी विभिन्न प्रकार से एक गहन परीक्षा होनी थी, जिसमें उनकी योग्यताओं को जाँचा जाना था।

मैंने इस परीक्षा के लिए गहन अध्ययन किया। जहाँ से जो भी सीखने को मिला, मैंने सीखा। इस परीक्षा की तैयारी के समय में मुझे बहुत अच्छे सबक सीखने को मिले, जो मेरे जीवन में हर समय मेरे काम आने वाले थे। उनमें से कुछ सबक मैं यहाँ लिख रहा हूँ—

1. अपना ध्यान हमेशा अपने उद्देश्य पर केंद्रित रखो। व्यर्थ की बातों में समय मत गँवाओ।
2. जब भी तैयारी करो, पूरे विस्तार से तैयारी करो। एक-एक बात का ध्यान रखो। जितनी अच्छी तैयारी करोगे उतना ही अच्छा परिणाम आएगा। तुम्हारी सफलता सिर्फ और सिर्फ तुम्हारी तैयारी पर निर्भर करती है।
3. हर कार्य को उसकी प्राथमिकता और आवश्यकता के अनुसार महत्त्व दो। आवश्यकता से अधिक या आवश्यकता से कम महत्त्व देने पर ही समस्या उत्पन्न होती है।
4. अपने काम को सबसे ऊपर रखो। किसी भी वस्तु या विचार का तुम्हारे कार्य पर नकारात्मक प्रभाव न हो। विफलता का भय या सफलता की चाह उसपर हावी न हो।

जिस केंद्र में मेरी परीक्षा होनी थी वह मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में था। चार दिन की परीक्षा में मैंने पूरी लगन से काम किया और जब चार दिन के बाद नतीजे सुनाए गए तो मैं सफल हुआ था। वह दिन मेरे जीवन का तब तक का और अब तक का सबसे प्रसन्नता का दिन था। मैंने अपने जीवन में और भी बहुत सफलताएँ प्राप्त कीं, लेकिन उस दिन से अधिक प्रसन्नता मुझे कभी नहीं हुई।

कुछ महीने पश्चात् 28 जून, 1991 को मुझे राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में तीन वर्ष के प्रशिक्षण हेतु जाना था। □



## वीर उसको जानिए

अब तक :-

‘जीवन का मूल है कि उसमें हम अधिक-से-अधिक अनुभव करने और सीखने का प्रयास करें।’

‘स्वयं को प्रेरित करना और स्वयं को सदैव प्रेरित रखना जीवन में अति आवश्यक है।’

‘परिस्थितियों को कभी स्वयं पर हावी न होने दें। यदि आप में साहस है तो आप जीवन की हर विपरीत परिस्थिति में भी सफल हो सकते हैं।’

‘विपरीत परिस्थितियाँ आग की भट्ठी की तरह होती हैं। उसमें तपकर हम और भी मजबूत व शक्तिशाली होकर निकलते हैं।’

‘यदि सफल होना चाहते हो तो दृढ़ व स्पष्ट निर्णय लो और फिर उस निर्णय की सफलता के लिए अथक प्रयास करो।’

‘यदि आप सफल होना चाहते हैं तो अपनी तैयारी और अपनी जीत के अंतर को इतना बढ़ाओ कि जीत सुनिश्चित हो जाए।’

‘जीत एक संभावना नहीं होनी चाहिए। जीत एक निर्णय होना चाहिए। यदि आप निर्णय कर लें कि आपको सफल होना है तो कोई आपको रोक नहीं सकता।’

‘विफलता विकल्प नहीं है।’

1. अपना ध्यान हमेशा अपने उद्देश्य पर केंद्रित रखो। व्यर्थ की बातों में समय मत गँवाओ।
2. जब भी तैयारी करो, पूरे विस्तार से तैयारी करो। एक-एक बात का ध्यान रखो। जितनी अच्छी तैयारी करोगे उतना ही अच्छा परिणाम आएगा। तुम्हारी सफलता सिर्फ और सिर्फ तुम्हारी तैयारी पर निर्भर करती है।

### वीर उसको जानिए

3. हर कार्य को उसकी प्राथमिकता और आवश्यकता के अनुसार महत्त्व दो। आवश्यकता से अधिक या आवश्यकता से कम महत्त्व देने पर ही समस्या उत्पन्न होती है।
4. अपने काम को सबसे ऊपर रखो। किसी भी वस्तु या विचार का तुम्हारे कार्य पर नकारात्मक प्रभाव न हो। विफलता का भय या सफलता की चाह उसपर हावी न हो।

## राष्ट्रीय रक्षा अकादमी

( सन् 1991-94 )

मैंने 28 जून, 1991 की शाम को लगातार हो रही बूँदाबाँदी और बारिश के बीच महाराष्ट्र प्रांत की सह्याद्री की पहाड़ियों के बीच स्थित राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रवेश किया। इस अकादमी में पूरे देश से चुने गए युवकों को कठिनतम सैन्य प्रशिक्षण से गुजरना पड़ता है और यह अकादमी अपने कठिनतम प्रशिक्षण के लिए विश्व-विख्यात है। मेरे अंदर कुछ भय भी था, लेकिन बहुत सा विश्वास भी था कि न सिर्फ मैं इस प्रशिक्षण को पूरा करूँगा बल्कि मेरा प्रदर्शन भी अच्छा रहेगा।

जब मैंने राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में नया-नया प्रवेश लिया था तो मेरे कुछ वरिष्ठ प्रशिक्षणार्थियों ने मुझसे पूछा कि प्रशिक्षण पूरा होने पर मैं सेना के कौन से अंग में सेवा करना चाहूँगा। मैंने कहा कि 'मैं एक कमांडो बनना चाहूँगा।' (कमांडो बनना सबसे कठिन होता है।)

इस बात पर वे सब हँसे और उन्होंने कहा, 'चार दिन के कठिन प्रशिक्षण को झेलकर ही तुम अपना निर्णय बदल दोगे। चार साल का प्रशिक्षण तो दूर की बात है।'

लेकिन पूरे चार साल के प्रशिक्षण में मैंने अपना निर्णय कभी नहीं बदला।

'मुश्किलों के सामने अगर हम अपना फैसला बदली कर दें तो हम अंदर से कमजोर हो जाते हैं।'

## वीर उसको जानिए

प्रशिक्षण कठिन था और मुझे बहुत सी कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। लेकिन दोस्तों के साथ खूब हँसी-मजाक भी किया और उस समय का आनंद भी लिया।

‘कठिन समय में जो आपके मित्र बनते हैं, वे ही आपके सबसे श्रेष्ठ मित्र होते हैं।’

कठिन समय और कठिन परिश्रम में जीवन के बहुत महत्वपूर्ण पाठ भी सीखे। कठिन समय ही जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। इसीलिए हमें कठिनाइयों से कभी दूर नहीं भागना चाहिए। जीवन में आनेवाली चुनौतियाँ ही हमारे लिए सीखने और अनुभव करने का एक अवसर होती हैं। इसी को दरशाता मेरा एक शेर है—

ऐ खुदा दे कुछ और तकलीफ मुझे, नई कोई चुनौती तो दे,  
कि जिंदगी को और जीने को जी चाहता है।  
कुछ तो आँधियों को उठा, कुछ तूफान तो हों  
कि आसमानों को फिर छूने को जी चाहता है।

□

## एक दुर्घटना : एक चुनौती

वर्ष 1993 के अप्रैल महीने की बात है। बाकी खेलों की तरह मुझे घुड़सवारी भी बहुत पसंद थी। एक दिन घुड़सवारी करते समय मेरे हाथ एक अड़ियल घोड़ा आ गया। मैं उस घोड़े को लेकर अस्तबल से बाहर आया। लेकिन इससे पहले कि मैं उस पर सवार हो पाता, वह घोड़ा मुझसे छुड़ाकर भाग खड़ा हुआ।

इस पर मैं उस घोड़े को पकड़ने के लिए उसके पीछे-पीछे गया। वह घोड़ा मुझे एक खुले इलाके में घास चरता हुआ दिखा। जैसे ही मैं लगाम पकड़ने के लिए उस घोड़े के पास गया और मैंने उसकी लगाम को थामा तो वह बिदक गया और उछल-उछलकर लातें घुमाने लगा, जिसमें से एक लात मेरी दाहिनी आँख तथा सिर पर जा लगी और मैं बेहोश हो गया।

उस विशालकाय घोड़े के पैर के तले में लगी बड़ी लोहे की नाल की चोट से मेरी दाहिनी आँख की पलकों और उसके आस-पास के गाल व सिर की चमड़ी के चीथड़े उड़ गए थे और तेज खून बह रहा था।

संयोगवश मेरे कुछ साथियों ने मुझे देख लिया और वे मुझे उठाकर वापस घुड़साल तक ले आए। मेरे अच्छे संयोग से वहाँ एक जीप उपलब्ध थी, जिसमें डालकर मुझे तुरंत सैन्य अस्पताल पहुँचाया गया।

मेरी आँख खुली तो मैं अस्पताल के बिस्तर पर पड़ा था। कुछ साथी मुझे घेरे खड़े थे और उन्होंने मेरी दाहिनी आँख पर ढेर सारी पट्टियाँ दबा रखी थीं। उन पट्टियों के बीच से खून निकल रहा था। मुझे बताया गया कि मुझे घोड़े ने लात मारी थी और मेरे दाहिनी आँख के आस-पास की चमड़ी पूरी तरह कट-

## वीर उसको जानिए

फट गई थी। मेरी आँख पर दबाई गई पट्टियों के बाद भी पट्टियों के किनारे से निकलकर बहुत खून बह रहा था।

ऐसा लग रहा था कि हो न हो, मेरी दाहिनी आँख जा चुकी थी, लेकिन मैं बहुत सौभाग्यशाली था, क्योंकि इतने ताकतवर घोड़े की नालवाले पैर की लात से किसी की भी जान अवश्य चली जाती; लेकिन मैं सौभाग्यशाली था, जो बच गया।

जब डॉक्टर आया तो उसने मेरी पट्टियों को हटवाया। फिर उसने मेरी आँख के आस-पास की कटी-फटी चमड़ी को हटा मुझे पूछा कि क्या मुझे दिख रहा है? मेरा उत्तर था—‘हाँ, मुझे दिख रहा है।’ डॉक्टर बहुत अचंभित था कि इतनी क्षति पहुँचने पर भी मुझे दिखाई दे रहा था और इतने नुकसान के बाद भी मेरी आँख बच गई थी।

चूँकि मेरी आँख की आस-पास की चमड़ी कट और उधड़ गई थी, इसलिए उसमें आँख के पास दर्द को सुन्न करनेवाला इंजेक्शन नहीं लगाया जा सकता था। अतः बिना सुन्न किए मेरी आँख और उसके आस-पास टाँके लगाए जाने थे। यह मेरे जीवन का सबसे दर्द भरा अनुभव था, जिसमें दर्द के कारण मैं कई बार बेहोशी के करीब पहुँच गया था।

डॉक्टर ने मेरी आँख और गाल पर लगभग 28 टाँके लगा मेरी कटी हुई चमड़ी व पलकों को जोड़ा और फिर ढेर सारी पट्टियाँ बाँध दीं। उसके कुछ दिन पश्चात् पुणे शहर के एक बड़े सैन्य अस्पताल में मेरा ऑपरेशन भी किया गया।

चोट गंभीर थी, लेकिन मैं एक माह के समय में ही पूर्ण रूप से स्वस्थ हो वापस अपने प्रशिक्षण में जुट गया। यह मेरा सौभाग्य ही था कि इतनी गंभीर चोट लगने के बाद भी मैं इतना जल्दी ठीक हो वापस आ गया था।

जब मैं वापस आया तो मैं नहीं चाहता था कि मेरे अंदर घुड़सवारी का भय आए, इसलिए आते ही मैंने पुनः घुड़सवारी प्रारंभ की और उसी घोड़े पर (जिसने मुझे लात मारी थी) फिर से सवार होकर उसे सफलतापूर्वक दौड़ाया। □

## ‘कर्म ही अधिकार है’

जीवन का सबसे बड़ा सत्य

श्रीमद्भगवद्गीता का मुख्य श्लोक है—

कर्मव्योवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।  
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

इस श्लोक का साधारणतः अर्थ बताया जाता है, ‘कर्म करो फल की इच्छा न करो’ किंतु इस श्लोक का संधि-विच्छेद होगा, ‘कर्मणि एव अधिकारः ते’ और इसका अर्थ बनता है—कर्म करने में ही अधिकार है तुम्हारा, कर्म के फल की इच्छा में कभी नहीं है। और ऐसा जानकर कभी भी तुम्हारी आसक्ति कर्म न करने की ओर न हो। अर्थात् हमारा ध्यान सदैव अपने कर्म पर होना चाहिए।

हम पुस्तक से शिक्षा पढ़ तो सकते हैं, लेकिन वह हमें समझ में तभी आती है जब हम जीवन में किसी घटना अथवा होनी के द्वारा उसका अनुभव करते हैं। ऐसी ही एक विशेष घटना मेरे जीवन में प्रशिक्षण के समय हुई।

जीवन की परिस्थितियाँ हमें सीखने का अवसर प्रदान करती हैं। एक दिन सब कैडेट किसी खेल अथवा प्रशिक्षण गतिविधि के लिए अपने कमरों से निकल दौड़ रहे थे। मैंने देखा कि गिलहरी का एक बच्चा घबराया-सा इधर-उधर दौड़ रहा है। मुझे पशु-पक्षियों से सदैव प्रेम रहा है।

मुझे लगा कि कहीं यह किसी के पैर के नीचे न आ जाए! मैं बिल्डिंग

## वीर उसको जानिए

की तीसरी मंजिल पर था। पेड़ों की शाखाएँ तीसरी मंजिल की खिड़कियों में आकर लगा करती थीं और उन टहनियों से गिलहरियाँ बिल्डिंग में आ जाया करती थीं। मैंने सोचा कि मैं गिलहरी को खिड़की से लगी टहनी पर छोड़ दूँगा और वह सुरक्षित भाग जाएगी।

मैंने गिलहरी के बच्चे को हाथों में उठा लिया। वह बहुत डरा हुआ था। जब मैंने उसे खिड़की के बाहर बने समतल स्थान पर रखा तो वह जोर से भागा और नीचे जा गिरा। गिलहरी इतने ऊपर से गिरकर भी नहीं मरती। वह कुछ पल में ही वहाँ से उठकर पेड़ की तरफ भागी; लेकिन इतने में ही वहाँ पास बैठी बिल्ली ने उसे देख लिया और उसे वहीं दबोच लिया।

आह! मेरा उद्देश्य तो उस गिलहरी के बच्चे को नुकसान से बचाना था, लेकिन उसकी मृत्यु हो गई। इस कहानी का अंत दुःखद अवश्य है, लेकिन इसमें हमारे लिए एक आवश्यक सीख छिपी है—

**‘कर्म ही हमारा अधिकार है। अंत क्या होगा, यह हमारे हाथ में नहीं है। अर्थात् हमें हमेशा बिना फल की अधिक परवाह किए अच्छी मंशा से काम करते रहना चाहिए।’**

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी का तीन साल का प्रशिक्षण समाप्त होने को आया। इस प्रशिक्षण के अंत में वह छह दिन का प्रशिक्षण शिविर था, जिसमें हमारा एक साथी बेहोश हो गया था और हमें उसे उठाकर दौड़ना था तथा अस्पताल तक पहुँचाना था। इसका वर्णन मैं पुस्तक के आरंभ में कर चुका हूँ, अतः दोबारा नहीं दोहराऊँगा। हाँ, लेकिन इस प्रशिक्षण के समय का एक सिद्धांत, जो मेरे जीवन का आधार-स्तंभ बन गया है, उसे मैं यहाँ लिखना चाहूँगा—

**‘हम में शारीरिक व मानसिक रूप से असीमित क्षमता होती है। हमारी क्षमता हमें कुछ पाने से नहीं रोक सकती। हमारी सोच हमें रोक सकती है। यदि हम यह सोचते हैं और विश्वास रखते हैं कि हम किसी कार्य को सफलतापूर्वक कर पाएँगे तो अवश्य ही हम कर पाएँगे। और यदि हममें कोई शंका घर कर जाती है**



वीर उसको जानिए

कि शायद हम सफल नहीं होंगे तो हम अवश्य ही सफल नहीं होंगे ।’

‘विश्वास सफलता का पहला कदम है और शंका पराजय की पहली सीढ़ी ।’

इस कठोर प्रशिक्षण के समय लिखी अपनी एक कविता ‘वीर’ में आगे प्रस्तुत कर रहा हूँ।

□

## ‘वीर’

न करे विचलित, मुश्किल न जिसको झुकाए  
हार जिससे हार गई, सोचे बहुत उपाय  
वीर उसको जानिए, जो हर संकट हर जाए।

विवेक को अपनी शक्ति बना, संयम को कर प्रबल  
विकट स्थिति में रह अपने उसूलों पर तू अडिग अचल  
जो डगमगा गया अपनी कर्मभूमि पर, वो इनसान ही क्या कहलाएगा  
जो चलता रहेगा तूफानों में, अपनी मंजिल को वो ही तो पाएगा।

संकट जिसकी शक्ति बने, आँधी न जिसको हिलाए  
हार जिससे हार गई, सोचे बहुत उपाय  
वीर उसको जानिए, जो हर संकट हर जाए।

जब्बा, जोश, जुनून, जतन, यह जो तेरी पहचान है  
वो इनसान क्या, जिसे अपने होने पर नहीं अभिमान है  
चार दिन आगे, चार दिन पीछे, हर कोई मिट्टी में मिल जाएगा  
चार दिन में जो कर गया कुछ, वो ही तो महान् कहलाएगा।

न करे विचलित, मुश्किल न जिसको झुकाए  
संकट जिसकी शक्ति बने, आँधी न जिसको हिलाए  
हार जिससे हार गई, सोचे बहुत उपाय।

### वीर उसको जानिए

वीर उसको जानिए, जो हर संकट हर जाए  
वीर उसको जानिए, जो हर संकट हर जाए।

रक्षा अकादमी में मेरा तीन साल का सफर वर्ष 1994 के जून माह में समाप्त हुआ।



## भारतीय सैन्य अकादमी

( सन् 1994-95 )

वर्ष 1994 के जुलाई माह में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में अपने प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक समाप्त कर मैंने भारतीय सैन्य अकादमी में प्रवेश लिया, जो उत्तराखण्ड राज्य की राजधानी देहरादून में स्थित थी। वहाँ मुझे एक वर्ष के गहन सैन्य प्रशिक्षण से गुजरना था।

अपने पिछले तीन साल के प्रशिक्षण से पककर हम इतने मजबूत हो चुके थे कि हमें यह एक वर्ष का प्रशिक्षण तो औपचारिकता मात्र ही लग रहा था। लेकिन यह सोचने में हम कुछ गलत थे। इस प्रशिक्षण के प्रशिक्षण शिविर पहले से भी कठिन होने वाले थे।

मैं अपने प्रशिक्षण के अतिरिक्त खेल-कूद, वाद-विवाद और अन्य प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता रहता। मुश्किल-से-मुश्किल समय में भी मैंने अच्छा प्रदर्शन किया था और मुझे स्वयं पर गर्व था—

**‘यह आवश्यक है कि हमें स्वयं पर गर्व हो और हम स्वयं को उस गर्व के योग्य बनाएँ।’**

जिस व्यक्ति को स्वयं पर गर्व हो, वह कभी हार नहीं मानता और उसका प्रदर्शन व व्यवहार हमेशा अच्छा होता है। अतः हमें स्वयं पर गर्व होना चाहिए। लेकिन यह भी याद रखें कि हमें स्वयं पर गर्व होना चाहिए, घमंड नहीं। हमेशा निजी व्यवहार और सोच में सौम्यता, सज्जनता एवं सादगी का प्रदर्शन करें।

## वीर उसको जानिए

देखते-ही-देखते इस एक वर्ष का अंत होने को आ गया। मैंने सभी परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन किया था। मेरा निर्णय अब भी एक कमांडो बनने का ही था। पूरे चार साल के कठिन प्रशिक्षण में भी मैंने अपना निर्णय कभी नहीं बदला। अपितु मैंने तो प्रशिक्षण के समय में ही छुट्टियों में हवाई जहाज से छाता लेकर कूदने वाला प्रशिक्षण भी कर लिया था। इस प्रशिक्षण को अन्य लोग कमांडो बनने के बाद ही प्राप्त करते हैं।

इस प्रशिक्षण का अंतिम प्रशिक्षण शिविर कठिनतम था। सैन्य साजो-सामान से लदे हुए हमें दिन-रात जंगलों में से गुजारना था। हमें दिन-रात चलना था और खाने की व्यवस्था भी स्वयं ही करनी थी। इस प्रशिक्षण शिविर के सफलतापूर्वक समाप्त होने के बाद अब हमारा सेना में अधिकारी बनना तय था। अब हमें सिर्फ उस अंतिम परेड की तैयारी करनी थी, जिसके बाद हम सेना में अधिकारी बन जाते। मैं अपने उद्देश्य के बहुत निकट था।

एक बाधा दौड़ का मुकाबला शेष था। यह कोई अनिवार्य स्पर्धा नहीं थी। इसमें भाग न लेने से भी अधिकारी बनना तो तय ही था, लेकिन यह एक खेल मुकाबला था। इसमें हमारी अकादमी की विभिन्न सैन्य कंपनियाँ आपस में मुकाबला करती थीं। जो कंपनी सबसे कम समय में सब बाधाओं को दौड़कर पार कर लेती थी, वह जीत जाती। मैं अपनी कंपनी का कैप्टन था। मैंने अपनी कंपनी की अच्छी तैयारी करवाई थी और हमें विश्वास था कि हमारा प्रदर्शन अच्छा होने वाला था।

□

## मृत्यु से एक मुलाकात

29 अप्रैल, 1995

**आ**ज बाधा दौड़ मुकाबले का अंतिम दिन था। मेरी कंपनी को बाधा दौड़ की बाधाओं पर से गुजरने के लिए शाम 5.45 का समय दिया गया था। मैं मैदान में पहुँच अपने कंपनी के साथियों की तैयारी करवाने लगा। मैं एक कैप्टन के तौर पर उनका नेतृत्व कर रहा था और कंपनी के अच्छे प्रदर्शन की जिम्मेदारी मुझ पर अधिक थी।

फुटबॉल खेल के मैदान से भी दोगुने मैदान में यह सत्रह सैन्य बाधाओं की श्रृंखला थी। मेरी कंपनी में लगभग 50 कैडेट थे और हमें इन बाधाओं के ऊपर से अपनी पूरी तेजी व क्षमता के साथ दौड़कर और कूद-फाँद कर निकलना था। शाम के 5.45 होने को आए तो हम शुरुआती रेखा के पीछे चार पंक्तियों में जमा हो गए। हम चार पंक्तियों में इसलिए जमा हुए थे, क्योंकि किसी भी बाधा को एक साथ सिर्फ चार व्यक्ति ही पार कर सकते थे। मुझे विश्वास था कि मेरी टीम अच्छा प्रदर्शन करने वाली थी।

उसी समय मेरी नजर मैदान के एक छोर पर गई। वहाँ सिलसिलेवार लगे शामियानों में दर्शक इस दौड़ को बैठे देख रहे थे। यह देख मुझे अचानक मेरे बचपन की वह दौड़ याद आ गई, जिसमें मैं सबसे पीछे आया था और लोग मुझे देखकर हँस रहे थे। मेरे अंदर ऊर्जा का एक विस्फोट-सा हो गया और मैं एकदम तेज दौड़ने को उत्साहित हो गया। मैं श्रेष्ठतम प्रदर्शन करना चाहता था।

दौड़ प्रारंभ हुई और मैं बहुत तेज दौड़ पड़ा। पहली बाधा 9 फीट का

## वीर उसको जानिए

एक गड्ढा था, जिसे देखते-ही-देखते मैं फाँद गया। कुछ ही पल में मैं सबसे आगे था। मैंने एक टेढ़ी-मेढ़ी बाधा को अपना संतुलन बनाकर पार किया और तीसरी बाधा के ऊपर चढ़ने लगा। उसमें तकरीबन 9 फीट की ऊँचाई तक चढ़कर नीचे कूदना था। मैं बहुत गति में था। जैसे ही मैं ऊपर पहुँचकर कूदने लगा, मुझे पीछे से जोर से धक्का लगा। संभवतः मेरे पीछे जो प्रतियोगी था, उसने मुझे धक्का दिया था। उस धक्के के कारण, और चूँकि मैं कूदनेवाली अवस्था में था, अतः संतुलन खोकर सिर के बल ऊपर से गिर पड़ा। (उस 'धक्का लगने' को मैं मात्र संयोग मानता हूँ और उस खिलाड़ी के प्रति मेरे मन में कोई बुरी भावना नहीं है। मैंने कभी उस व्यक्ति से इस विषय में पूछना भी उचित नहीं समझा है। खेल-कूद में ऐसी घटनाएँ हो सकती हैं और होती रहती हैं।)

नौ फीट की ऊँचाई से मैं सिर के बल धरती की ओर पूरी गति से बढ़ रहा था। इतनी ऊँचाई से अगर मैं सिर के बल कठोर जमीन पर गिरता तो मेरे सिर व गले की सारी हड्डियाँ टूट जातीं और मेरी मृत्यु निश्चित थी।

उस एक पल में मुझे यही लगा कि अगर मैं गरदन अंदर मोड़कर कलाबाजी खा जाऊँ तो पीठ के बल गिर सकता हूँ और उस परिस्थिति में चोट कम लगेगी; लेकिन समय क्षण भर का ही था। कलाबाजी खाने का समय नहीं था। किंतु कलाबाजी खाने में ही मेरे बचने की कुछ संभावना थी। मैंने कलाबाजी खाने के लिए अपनी गरदन अंदर मोड़ी; लेकिन समय इतना कम था कि कलाबाजी खाते-खाते मैं अपनी गरदन और कंधे के बल जमीन पर जा गिरा। अपनी फुरती के कारण ही मैं एकदम से कलाबाजी खाने में सफल हुआ था, अन्यथा यह मेरे जीवन का अंतिम क्षण होता।

मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे शरीर में से सैकड़ों वोल्ट की बिजली निकल गई हो। मैं धरती पर लुढ़कता एक ओर जा गिरा। मेरा शरीर मानो गायब हो गया था। मुझे अपने शरीर का कुछ भी आभास नहीं था। ऐसे लग रहा था मानो चेहरे के नीचे का शरीर था ही नहीं। मैं साँस भी नहीं ले पा रहा था। सिर्फ हलकी-हलकी हवा ही मेरे नाक में आ-जा रही थी। मेरी आँखें खुली थीं और

## वीर उसको जानिए

उनसे मैं वहाँ पड़ा शाम के साफ आसमान को देख रहा था। और कुछ भी न दिख रहा था और न किसी चीज का अहसास था। एक पल को मैंने सोचा, 'कहीं मैं मर तो नहीं गया हूँ? अगर जीवित होता तो अपने शरीर का अहसास तो होता!'

आँखों और हलकी साँस के सिवा मुझे कोई अहसास न था। मुझे लगा कि मैं मर चुका हूँ और कहीं परलोक के रास्ते में हूँ।

इतने में एक डॉक्टर अपने दो चिकित्साकर्मियों के साथ दौड़ता हुआ आया और मेरी बगल में अपने घुटनों के बल बैठ गया।

डॉक्टर ने पूछा, 'क्या हुआ?'

क्योंकि मुझे साँस नहीं आ रही थी, मैंने बहुत कठिनाई से फुसफुसाते हुए कहा, 'मुझे अपने शरीर का कुछ अहसास नहीं है। साँस भी बहुत कम है।'

डॉक्टर तुरंत समझ गया कि मेरी रीढ़ की गले की हड्डी टूट गई है और मेरा शरीर लकवाग्रस्त (Paralysed) हो गया है। ऐसा होने के कारण मेरे मस्तिष्क का संपर्क बाकी के शरीर से टूट गया था और इसी कारण मुझे अपने शरीर का कोई आभास नहीं हो रहा था। परिस्थिति बहुत जटिल थी। एक हलकी सी चूक मेरी मृत्यु का कारण बन सकती थी। हर पल अत्यंत कठिन था। मुझे बिलकुल भी हिलाया नहीं जाना था। थोड़ा सा भी गलत हिलने से मेरी मृत्यु हो सकती थी। छह चिकित्साकर्मियों की मदद से मुझे बिलकुल सीधा उठाकर स्ट्रेचर पर लिटा दिया गया। स्ट्रेचर समेत मुझे सावधानीपूर्वक उठाया गया और पास खड़ी एंबुलेंस में ले जाया गया।

मेरा गुजरता हर पल मृत्यु के साथ मेरा संघर्ष था। मैंने अपने जीवन की सारी शक्ति और योग्यता इस परिस्थिति से सामना करने में लगा रखी थी। मैंने अपने जीवन में यह सबक सीखा था कि परिस्थिति जितनी जटिल हो उतना ही आपको शांत रहने की आवश्यकता होती है। शांत रहकर ही आप किसी कठिन परिस्थिति का सामना कर सकते हैं—



## वीर उसको जानिए

**‘परिस्थिति जितनी भी कठिन हो, आपको उतना ही शांत होना चाहिए। तभी आप उस परिस्थिति का सफलतापूर्वक सामना कर पाएँगे।’**

मुझे देहरादून छावनी के सैन्य अस्पताल में ले जाया गया और गहन चिकित्सा कक्ष में भरती कर दिया गया। विभिन्न प्रकार के जीवन-रक्षक यंत्र मेरे शरीर से जोड़ दिए गए। मैं कतई हिल नहीं पा रहा था और उस बिस्तर पर लेटा मात्र छत के कुछ हिस्से को ही देख पा रहा था।

यदि कोई मुझसे मिलने आता तो उस व्यक्ति को मेरे ऊपर झुकना पड़ता, ताकि मैं उसे देख सकूँ। परिस्थिति बुरी थी और मुझे भयंकर कष्ट झेलना पड़ रहा था। न मैं हिल पा रहा था, न ठीक से साँस ही ले पा रहा था और न ही ठीक से बोल पा रहा था।

इस अस्पताल का वरिष्ठ डॉक्टर लखनऊ में एक वरिष्ठ और विशेषज्ञ डॉक्टर से फोन पर संपर्क साधे हुए था और मुझे किस तरह की प्राथमिक चिकित्सा दी जानी है, यह हिदायत फोन पर दी जा रही थी। यह असामान्य और असाधारण चोट थी। जैसे-जैसे रात हुई, मेरी आँखों के आगे मेरा जीवन एक तेज गति से चलती किसी फिल्म की तरह गुजर रहा था। मेरी नाक में साँस लेने की नली लगा दी गई थी। किंतु कुछ समय बाद उसे निकालना पड़ा, क्योंकि वह मेरी नाक में बहुत कष्ट दे रही थी। मैं सिर्फ अपनी धीमे-धीमे चलती साँसों के सहारे जिंदा था।

इस हादसे ने मुझे अपने जीवन के सबसे अच्छे समय से उठाकर सबसे जटिल समय में ला खड़ा किया था। एक ओर मैं अपने जीवन में एक शक्तिशाली युवक था, जो कुछ ही दिनों में सेना में अधिकारी बनने वाला था, और एक ही पल में मैं यहाँ एक शव की भाँति निर्जीव-सी अवस्था में पड़ा था। क्या इतनी भयंकर दुर्घटना और चोट के बाद भी मैं कभी अपने जीवन को फिर से पा सकूँगा? इस बड़े प्रश्न का सही उत्तर तो समय ही दे सकता था।

□

## जीवन पाने का संघर्ष

मैंने अपने जीवन में सिर्फ सफलता और विजय की ओर बढ़ना सीखा था। 'हार की संभावना से बेपरवाह अपना पूरा ध्यान सिर्फ जीत पर लगाकर रखो', यही मेरे जीवन का निष्कर्ष था। इस परिस्थिति में भी मेरे मन में कोई शक नहीं था। मैं इस परिस्थिति से बाहर आने और अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए हर संभव प्रयास करने वाला था। डॉक्टरों ने कहा था कि पहले तीन दिन खतरे से भरे हुए दिन होने वाले थे। मेरे स्वास्थ्य में किसी भी जटिलता किसी भी समय आ सकती थी और वह जानलेवा हो सकती थी। क्या मेरा शरीर बदले हुए हालात में खुद को ढाल पाएगा, यह देखनेवाली महत्वपूर्ण बात थी। अगर मैं तीन दिन बच जाऊँगा तो मेरे जीवित बच जाने की संभावना हो जाएगी, ऐसा डॉक्टरों का मानना था।

मैंने अपनी पलकें मूँद लीं और कल्पना की कि मैं अपने कंधों पर भारी सैन्य सामान उठा जंगलों व पर्वतों के बीच से गुजर रहा हूँ। बहुत थकी हुई हालत में भी मैं इन दुर्गम रास्तों पर एक-एक कदम बढ़ाता चला जा रहा हूँ। इसी कल्पना के साथ उस अवस्था में मेरी पहली रात निकल गई। सुबह हुई तो मैं जीवित था।

मेरे माता-पिता को रात में ही फोन पर सूचित कर दिया गया था कि मुझे इतनी भयंकर चोट लगी है। रात भर सफर कर मेरे माता-पिता सुबह अस्पताल में पहुँचे। मुझे देख मेरे पिता फूट-फूटकर रो पड़े, लेकिन मेरी माँ शांत रहीं। उन्होंने मेरी हिम्मत बढ़ाई। मैं वैसे भी अपने बारे में अधिक चिंतित नहीं था। मुझे यह भी ज्ञात था कि मेरे पिता मेरे सामने ही रोए थे और मेरी माँ मेरे सामने

## वीर उसको जानिए

ही नहीं रोई थीं। वह सिर्फ मुझे हिम्मत देने के लिए नहीं रोई थीं।

दिल्ली से विशिष्ट डॉक्टर मेरी जाँच और इलाज के लिए पहुँच गए। मेरी जाँच और एक्स-रे के बाद डॉक्टरों ने बताया कि मेरे गले की हड्डी कई जगह से टूट गई है और उसके अंदर से होकर जानेवाली तंत्रिकाएँ (जो मस्तिष्क को बाकी शरीर से संदेश पहुँचाने और पाने के लिए जोड़ती हैं) टूट चुकी हैं। अतः मेरे मस्तिष्क का मेरे शरीर से संपर्क टूट गया था। इसलिए मुझे अपने शरीर का आभास नहीं हो रहा था। पूरे विश्व में चिकित्सा विज्ञान में कहीं भी इस चोट का इलाज नहीं था। यही आशा की जा सकती थी कि आनेवाले समय में कुछ स्वयं ही सुधार हो।

मेरे सिर में दोनों ओर चमड़ी में सुराख कर मेरे सिर की हड्डी में एक यंत्र कस दिया गया। इस यंत्र ने मेरी खोपड़ी को दोनों ओर से जकड़ रखा था। फिर इस यंत्र से एक वजन को टाँग दिया गया। इस तरह मेरे सिर और गरदन के एकदम सीधा रहने की संभावना थी और यह मेरी गरदन की हड्डी वापस जुड़ने के लिए आवश्यक था। गरदन की हड्डी को तो वापस जुड़ जाना था, लेकिन उसके अंदर की तंत्रिकाओं को जोड़ने के लिए कुछ नहीं किया जा सकता था।

आनेवाले दिनों में मुझे या तो इतना तीव्र बुखार रहता कि मैं अपनी सुध-बुध खो बैठता या मेरा शरीर इतनी बुरी तरह ठिठुरने और काँपने लग जाता कि मेरे जबड़े की हड्डियाँ दर्द करने लगतीं। खाना तो असंभव-सा कार्य था। मैं किसी नम पदार्थ को चबा तो सकता था, पर निगल नहीं पाता था। पानी पीना तक कठिन था और कभी नली से पीने की कोशिश करता भी तो साँस की नली में पानी उलझ जाता।

कुछ ही दिनों में मैं एक शक्तिशाली युवक से परिवर्तित हो अस्पताल में पड़ा एक हड्डियों का ढाँचा-सा रह गया था। लेकिन मैंने हार कतई नहीं मानी थी। मैं अपनी कठिनाइयों को तपस्या समान समझता था। जो भी लोग, दोस्त, रिश्तेदार मुझसे मिलने आते, वे मुझे मुसकराता और हँसता हुआ पाते। उनको

## वीर उसको जानिए

यह देख बहुत हैरानी होती कि कोई ऐसी परिस्थिति में भी इतना हँसमुख और शांत हो सकता है।

अस्पताल के उस गहन चिकित्सा कक्ष (ICU) में धीमी रोशनी रहती थी। हलचल न के बराबर थी। आने-जानेवालों पर बहुत पाबंदी थी। उस स्थिति में सीधे पड़े हुए मैं कुछ भी करने की अवस्था में नहीं था। मेरी स्थिति इतनी कष्टदायक थी कि मुझे कतई नींद नहीं आती थी। मुझे सिर्फ कमरे की छत का एक हिस्सा दिखाई देता था।

मैंने देखा कि छत के एक कोने में एक मकड़ी अपना जाला बुनती रहती थी। सफाई कर्मचारी उस जाले को प्रतिदिन सफाई करते समय साफ कर देते, लेकिन वह मकड़ी बिना इस बात की परवाह किए कि जाला बार-बार मिटाया जा रहा है, तुरंत फिर से अपना जाला बनाने लग जाती। उस मकड़ी ने मुझे अपना महत्त्वपूर्ण सबक फिर याद दिला दिया—

**‘कर्मण्ये वाधिकारस्ते’—कर्म ही आपका अधिकार है। बिना हार-जीत की परवाह किए कर्म करते रहो।**

मेरी हालत थोड़ी सुधरने पर मुझे दिल्ली के बड़े सैन्य अस्पताल में ऑपरेशन करने के लिए ले जाया जाना था। किंतु मेरी हालत बिगड़ती ही गई। ऐसी परिस्थिति में पड़े-पड़े मैं सोचता कि काश, मैं एक करवट लेकर सो पाता तो कितना अच्छा होता या काश, मैं ठंडे पानी से नहा पाता तो कितना अच्छा होता!

**‘हमारे जीवन में विकट परिस्थितियों का समय ही वह समय होता है, जब हमें छोटी-छोटी चीजों का महत्त्व पता चलता है और खुद जीवन का महत्त्व पता चलता है।’**

लगभग पंद्रह दिन ऐसी परिस्थिति में रहने के बाद मुझे दिल्ली के बड़े सैन्य अस्पताल ले जाने का निर्णय लिया गया। संयोग से यह वही अस्पताल था, जिसमें तब से बाईस वर्ष पूर्व मेरा जन्म हुआ था। और संयोगवश

## वीर उसको जानिए

अब बाईस वर्ष बाद मैं उसी अस्पताल में दोबारा जीवन पाने के प्रयास में जा रहा था।

एक हेलीकॉप्टर की व्यवस्था की गई। देहरादून से दिल्ली की उड़ान लगभग दो घंटे में तय की जानी थी। वह एक छोटा सा हेलीकॉप्टर था। उसकी पिछली सीट पर मुझे लिटाया गया और जिस डॉक्टर को मेरे साथ सफर करना था, वह भी उसी सीट पर टेढ़ा होकर बैठ गया। आगेवाली सीट पर चालक और सहचालक थे। हेलीकॉप्टर की छत शीशे की थी और तेज धूप मेरे चेहरे पर आ रही थी। मुझे तेज बुखार था, लेकिन हेलीकॉप्टर के ऊँचे शोर में कोई मेरी बात नहीं सुन सकता था। गनीमत थी कि डॉक्टर मेरे चेहरे पर पानी छिड़ककर मेरे तापमान को नियंत्रित रखे रहा।

एक तो वह सफर मेरे लिए बहुत कष्टदेह था और ऊपर से कुछ तकनीकी समस्याओं के कारण हेलीकॉप्टर को दिल्ली पहुँचने में दो के बजाय छह घंटे लग गए। शाम होते-होते हेलीकॉप्टर दिल्ली में अस्पताल में जा उतरा। मुझे तुरंत उस अस्पताल के गहन चिकित्सा कक्ष (ICU) में ले जाया गया। मैं सकुशल पहुँच गया था।

पहुँचने के तीन दिन बाद विशिष्ट डॉक्टरों की एक टीम ने मेरा ऑपरेशन किया। मेरे गले की हड्डी की चोट को ठीक करने के लिए और मेरे गले की हड्डी को मजबूत करने के लिए मेरे कूल्हे की हड्डी से हड्डी की एक हलकी परत उतारकर मेरी गरदन की हड्डी पर लगाई गई। इस ऑपरेशन के द्वारा मेरी रीढ़ की हड्डी के बीच से गुजरती तंत्रिकाओं पर टूटी हुई हड्डी से पड़ रहे दबाव को भी दूर किया गया। ऑपरेशन के पश्चात् मुझे फिर ICU में ले जाया गया।

उस गहन चिकित्सा कक्ष (ICU) में एकदम सन्नाटा सा रहता था। रोशनी धीमी थी। मुझे कुछ चिकित्साकर्मियों से और कुछ अपने परिजनों से, जो मुझसे मिलने आते रहते थे, बात कर यह ज्ञात हुआ कि इस कक्ष में जो मरीज थे, वे इतने गंभीर मरीज थे कि उनमें से कोई भी बोलनेवाली अवस्था में नहीं था। मेरे

## वीर उसको जानिए

वहाँ रहते कोई मरीज ठीक होकर उस वार्ड से नहीं गया। वहाँ से मृत होकर ही मरीज गए।

कभी-कभी ऐसा भी होता कि मैं किसी चिकित्साकर्मी से पीने का पानी माँगता तो मुझे बताया जाता कि मुझे कुछ समय प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, क्योंकि किसी मरीज की मृत्यु हो गई है और वे उसके शरीर को पैक कर रहे हैं। उस गहन चिकित्सा कक्ष में रहकर मैंने अपने आस-पास जीवन और मृत्यु को रोज करीब से देखा। लेकिन मैं फिर भी शांत ही था। मैं इस समय को एक तपस्या के रूप में ही ले रहा था।

उस कक्ष में रहकर समय काटना बड़ा दूभर था। नींद आती ही नहीं थी। मैंने सोचा कि अब ऐसी चोट के बाद मेरे फिर दौड़ सकने की संभावना तो थी नहीं, तो क्यों न मैं अपने दिमाग पर काम करूँ! इससे मेरा दिमाग भी तेज होगा और समय भी कटेगा।

इस कक्ष में लगी कोई मशीन रह-रहकर नियमित अंतराल पर टूँ-टूँ की आवाज कर रही थी। मैंने उस आवाज को गिनना शुरू कर दिया। मैं उस आवाज को 16,00 तक गिनता और फिर उलटी गिनती करता शून्य तक आ जाता। एक बार ऐसा करने में दो घंटे का समय निकल जाता। फिर जब मैं ऐसा करने से ऊब गया तो मैंने अपने मन में गणित की संख्याओं को गुणा और भाग करना शुरू कर दिया। मैं बड़ी-बड़ी संख्याओं को आसानी से गुणा-भाग कर लेता।

जब उससे भी मन भर गया तो मैंने शतरंज का एक खाली बोर्ड अपने बिस्तर के ऊपर लटकवा दिया। इस खाली बोर्ड पर मैं शतरंज की चालें सोचता रहता। मैं बहुत समय ध्यान में भी लगाता। मेरे जीवन का यह कठिन समय एक तपस्या के समान था, जिससे मैं बहुत कुछ सीख रहा था। अध्यात्म व दर्शन में मेरी सदैव रुचि रही थी और इस कठिन तपस्या के समय में मैं अपनी सोच व समझ को एक नए आयाम और एक नए स्तर तक ले जा सका था।

## वीर उसको जानिए

कष्ट ही जीवन का सार है। मैं अपने जीवन के अत्यंत कष्ट के समय को अपना दुर्भाग्य नहीं, सौभाग्य समझता हूँ। जीवन में हम जो भी सीखते हैं, समझते हैं और कर गुजरते हैं, वह कष्ट और तप के समय में ही होता है। आराम के समय में तो हम मात्र समय काटते हैं। कष्ट का समय हमें स्वयं को साबित करने का अवसर प्रदान करता है। यदि अभिमन्यु को एक दिन के लिए लड़ाई बचाने का कार्य नहीं दिया जाता तो उसके जीवन का उद्देश्य ही क्या था? यदि भीष्म पितामह 'भीष्म प्रतिज्ञा' नहीं लेते तो उन्हें भीष्म कौन कहता?

'जीवन में हमारा कष्ट और चुनौती का समय ही हमारा धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र है। ऐसे समय को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखना चाहिए। यह कष्ट और चुनौती का समय हमारे लिए शिक्षा व परीक्षा दोनों का समय होता है। हमारा कर्तव्य है कि हम कठिन समय में स्वयं को और स्वयं की योग्यताओं को साबित करें।'

लगभग एक महीने बाद मुझे उस वार्ड से निकालकर एक शल्य चिकित्सा वार्ड में रख दिया गया। मैं उस गहन चिकित्सा वार्ड से जीवित निकल आया था, लेकिन मेरी हालत वैसी ही थी। मेरे सिर में वे सरिये अब भी लगे हुए थे। मैं हिल नहीं पाता था और मुझे तेज बुखार या कँपकँपी होती रहती थी।

फिर एक दिन मेरे हाथ कुछ हिलने लगे और हाथों के कुछ हिस्सों में आभास होने लगा, लेकिन मेरे हाथ की मांसपेशियाँ इतनी कमजोर हो चुकी थीं कि मैं उन्हें अपने स्थान में मात्र थोड़ा सा ही हिला-डुला पाता था। इससे अधिक करने में मैं असमर्थ था। फिर एक दिन तकरीबन एक घंटे का समय लगा। मैं अपने हाथ को धीरे-धीरे लुढ़काता घसीटता अपनी नाक तक लाया और मैंने अपनी नाक खुजाई।

समय ने मुझे ऐसे स्थान पर ला खड़ा किया था कि जहाँ मैं ऐसी लाचार परिस्थिति में था। इतना असहाय तो मैं अपने जन्म के समय भी नहीं रहा होऊँगा। इससे बड़ी चुनौती किसी के लिए और क्या हो सकती है! लेकिन मेरे में अंश मात्र शंका भी नहीं थी। मैं जीवन में न सिर्फ वापस आऊँगा, अपितु पहले से श्रेष्ठ उपलब्धियाँ प्राप्त करूँगा, ऐसा मेरा विश्वास था—

वीर उसको जानिए

‘हमारा स्वयं में विश्वास ही हमारी शक्ति है। स्वयं में अपने विश्वास को कभी कम न होने दें।’

ईश्वर ने मेरे हाथों में शक्ति लौटाकर मुझे एक अवसर दिया था कि मैं अपने जीवन का पुनर्निर्माण कर सकूँ और मैं इस अवसर को छोड़ने वाला नहीं था।

□



## अपने जीवन को फिर बनाने का मेरा संघर्ष

इस विकट परिस्थिति से मैंने अपना संघर्ष प्रारंभ किया। यह न सिर्फ मेरी परीक्षा थी अपितु उन सब सिद्धांतों व विचारधाराओं की भी परीक्षा थी, जिनको मैंने अपने जीवन में अपनाया था और जिन पर मैं विश्वास करता था। अपनी कविता 'वीर' को मैं यहाँ पुनः दोहराना चाहूँगा—

### 'वीर'

न करे विचलित, मुश्किल न जिसको झुकाए  
हार जिससे हार गई, सोचे बहुत उपाय  
वीर उसको जानिए, जो हर संकट हर जाए।

विवेक को अपनी शक्ति बना, संयम को कर प्रबल  
विकट स्थिति में रह अपने उसूलों पर तू अडिग अचल  
जो डगमगा गया अपनी कर्मभूमि पर, वो इनसान ही क्या कहलाएगा  
जो चलता रहेगा तूफानों में, अपनी मंजिल को वो ही तो पाएगा।

संकट जिसकी शक्ति बने, आँधी न जिसको हिलाए  
हार जिससे हार गई, सोचे बहुत उपाय  
वीर उसको जानिए, जो हर संकट हर जाए।

जब्बा, जोश, जुनून, जतन, यह जो तेरी पहचान है  
वो इनसान क्या, जिसे अपने होने पर नहीं अभिमान है  
चार दिन आगे, चार दिन पीछे, हर कोई मिट्टी में मिल जाएगा

## वीर उसको जानिए

चार दिन में जो कर गया कुछ, वो ही तो महान् कहलाएगा।  
न करे विचलित, मुश्किल न जिसको झुकाए  
संकट जिसकी शक्ति बने, आँधी न जिसको हिलाए  
हार जिससे हार गई, सोचे बहुत उपाय।

वीर उसको जानिए, जो हर संकट हर जाए  
वीर उसको जानिए, जो हर संकट हर जाए।

मैंने अपने हाथों को हिलाना-डुलाना शुरू किया। पहले-पहल मैं अपने हाथों को मोड़ तो पाता था, किंतु सीधा नहीं कर पाता था; क्योंकि मेरे हाथों की हाथ मोड़नेवाली पेशियाँ तो काम करती थीं, लेकिन हाथ सीधा करनेवाली पेशियाँ काम नहीं करती थीं। धीरे-धीरे मैंने झटके से हाथ सीधा करना सीख लिया। अब मैं अपने जीवन में वापस पाने के संघर्ष के लिए पूर्णतया तैयार था।

28 जून, 1995 की एक शाम मुझे एक सैन्य हेलीकॉप्टर द्वारा पुणे शहर के सैन्य अस्पताल में पहुँचाया गया। जब मुझे इस अस्पताल में एक स्ट्रेचर पर लाया गया तो शाम का समय था और बारिश हो रही थी। संयोगवश इससे ठीक चार साल पहले इसी तारीख को तकरीबन इसी समय और ऐसे ही मौसम में मैं इस शहर में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी पहुँचा था। आज मैं यहाँ भिन्न परिस्थितियों में आया था अपने जीवन का युद्ध लड़ने के लिए।

दुनिया भी शायद मेरे वापस आने की उम्मीद छोड़ चुकी थी। किसी को यह उम्मीद नहीं थी कि मैं वापस जीवन में आकर कुछ कर पाऊँगा। लेकिन मेरा विश्वास अडिग था। अपने परिश्रम और अपने विश्वास के दम पर मैं अवश्य जीवन में वापस आऊँगा।

मेरे यहाँ पहुँचने पर मेरे सिर में से उस सरिए नुमा यंत्र को आखिरकार निकाल दिया गया। मैंने अपने हाथों से व्यायाम करना प्रारंभ कर दिया। पहले-पहल मैं मात्र एक तकिए को उठा पाता था, फिर एक रेत से भरी थैली को उठाना प्रारंभ किया और धीरे-धीरे करके मैं फिर वजन उठाने लगा। लेकिन यह सब व्यायाम मैं लेटकर ही करता था।

### वीर उसको जानिए

अस्पताल में बिस्तर पर लेटे-लेटे भी मैंने कई कविताएँ लिखीं, जिन्हें मैं बोलकर लिखवाता था। जीवन के विभिन्न रंगों को दर्शाती अपनी कविता 'जरा सा जीवन' में आगे प्रस्तुत कर रहा हूँ।

□

## जरा सा जीवन

घिरता हुआ गम जीवन है, बिखरती हुई खुशी भी जीवन है  
गिरते हुए आँसू जीवन हैं, फूटती हुई हँसी भी जीवन है  
इस जीवन में बस एक जरा सा जीवन है  
मूसलधार बारिश है, भयंकर आँधी है, तूफान है  
कड़कती धूप है, गहरी छाँव है  
सन्नाटे की रात है, महकता-चहकता-सा दिन है  
भीनी सी खुशबू है, भटकती खोजती-सी पवन है  
इस जीवन में बस एक जरा सा जीवन है  
चुभता सा धुआँ है, सुहाते-से बादल हैं  
बाट देखता बगुला है, दौड़ता हुआ हिरन है  
सूखे हरे तनहा घिरे से पेड़ हैं, हिलते हुए, रुके हुए पत्ते हैं  
ठंडी बर्फ-सी चुभन है, जलती आग-सी अगन है  
इस जीवन में बस एक जरा सा जीवन है  
उठती हुई लहरें हैं, घूमता समेटता हुआ भँवर है,  
गिरता, बहता, रुकता, चलता पानी है  
कभी शांत तो कभी पुकारते-से पर्वत हैं  
खुली सी हँसी है, दबी सी सिहरन है  
इस जीवन में बस एक जरा सा जीवन है।

फिर एक दिन मुझे वापस बिठाने का प्रयास प्रारंभ हुआ। चार महीने लेटी हुई अवस्था में रहने से मेरा शरीर बैठ पाने में असमर्थ हो गया था। थोड़ा-बहुत भी बैठने वाली अवस्था में आने से मेरे सिर से खून बह जाता

## वीर उसको जानिए

और मुझे चक्कर आ जाते।

बहुत दिनों के प्रयासों के बाद मैं बैठ सकने में समर्थ हुआ और डॉक्टरों ने फिर कहा कि शायद यह एक दिन अपनी व्हीलचेयर (पहियोंवाली कुरसी) खुद चला पाएगा। लेकिन मुझे यह विश्वास था कि मैं अपनी व्हीलचेयर तो अवश्य चला ही पाऊँगा, लेकिन और भी मैं बहुत कुछ कर पाऊँगा।

### ‘अपनी योग्यता को आपको स्वयं परिभाषित करना है।’

आप क्या कर सकते हैं और क्या नहीं कर सकते, यह निर्णय आपको लेना होता है। और मैं अपना निर्णय ले चुका था।

मेरा शरीर अपना संतुलन बनाए रखने में असमर्थ था और किसी भी तरफ को लुढ़क जाता था, क्योंकि मेरे शरीर की मांसपेशियाँ काम नहीं कर रही थीं। अतः मुझे एक पेटी (बेल्ट) से कुरसी के साथ बाँध दिया जाता। अपने हाथों की उँगलियों और अँगूठे को व्हीलचेयर के पहियों में फँसा मैंने पहले दिन से ही अपनी कुरसी को चलाना शुरू कर दिया। हालाँकि पहले दिन तो मैं मात्र कुछ गज तक ही अपनी कुरसी को ले जा सका और ऐसा करने में मुझे एक घंटे का समय लग गया।

प्रारंभ में तो मैं मात्र एक या दो घंटे ही कुरसी में बैठ पाता, लेकिन इस समय में मैं बाहर जाकर दुनिया को देखता। पेड़, पत्ते, पक्षी, आकाश सब देखे महीनों गुजर गए थे। जब मैंने चार महीने बाद आसमान देखा तो मेरी आँखें रोशनी से चौंधिया कर बंद हो रही थीं, जब कि उस समय आसमान बादलों से ढका हुआ था।

अपने बैठनेवाले समय में मैं बाकी मरीजों से जाकर मिलता, जो अब तक चलनेवाली परिस्थिति में नहीं थे या मेरे बाद आए थे। मैं उनकी भी हिम्मत बँधाता। पिछले चार माह में भी मैं हँसमुख बना रहा था। मैं चिकित्साकर्मियों से हँसी-मजाक की बातें करता, बाकी मरीजों से भी भेंट करता। मैं हमेशा इतना हँसमुख और सकारात्मक रहता कि डॉक्टर मेरा उदाहरण बाकी मरीजों को भी देते। जब कोई मरीज अपनी चोट या बीमारी के कारण दुःखी व परेशान होता तो डॉक्टर मुझे बुलवा भेजते और कहते कि मैं उस मरीज से जाकर मिलूँ,

## वीर उसको जानिए

जो उदास है और उसकी हिम्मत बढ़ाऊँ।

क्योंकि मैं इतना हँसमुख और सकारात्मक रहता था, इसके लिए मुझे कोई विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता था। मुझे देख अन्य लोग ऐसे ही प्रोत्साहित हो जाते। उन्हें लगता कि जब नवीन इतनी बड़ी चोट लगने और नुकसान होने के बाद भी इतना प्रसन्न व सकारात्मक हो सकता है तो हम लोग क्यों नहीं हो सकते!

‘जीवन में प्रेरणा, प्रसन्नता और सकारात्मकता फैलाने के लिए हमें कुछ विशेष नहीं करना होता। हमें बस खुद प्रसन्न और हँसमुख रहना होता है। इससे खुद ही चारों ओर सकारात्मकता फैलती है।’

□

## कंप्यूटर और शतरंज

शतरंज तो मैं पहले से ही खेल रहा था और बाकी खिलाड़ियों को हराकर मैं उसमें महारत भी हासिल कर रहा था। फिर मेरे बड़े भैया ने मेरी रुचि कंप्यूटर में जगाई। यहाँ मुझे सिर्फ शौक और समय व्यतीत करने के लिए खेलनेवालों के साथ ही शतरंज खेलने को मिल रहा था। अतः शतरंज में मेरी योग्यता एक स्तर से ऊपर नहीं जा रही थी; लेकिन एक कंप्यूटर होने से मैं उसमें कंप्यूटर के साथ शतरंज खेल सकता था और अपनी योग्यता एवं कुशलता को और बढ़ा सकता था।

सन् 1995-96 में कंप्यूटर सीखने की सुविधा बहुत कम जगहों पर उपलब्ध थी। मेरा सौभाग्य था कि मेरे अस्पताल के समीप ही एक तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र था, जहाँ मैं कंप्यूटर सीख सकता था।

अस्पताल में रहते हुए ही मैंने कंप्यूटर कोर्स में दाखिला ले लिया। यह केंद्र मेरे अस्पताल से लगभग 1 किलोमीटर की दूरी पर था। मैं किसी तरह अपनी व्हीलचेयर धकेलकर वहाँ तक प्रतिदिन जाता। मैं टूटा-फूटा ही कुछ लिख पाता था, अतः मुझे गणना (हिसाब/calculation) अपने मन में ही करनी पड़ती। मैं पढ़ाए गए पाठ को लिख पाने में भी असमर्थ था, लेकिन मैंने अस्पताल में रहते हुए अपनी मानसिक योग्यताओं को इतना बढ़ा लिया था कि मैं यह सब कर पाता। मैं शिक्षक के पढ़ाते-पढ़ाते ही पाठ को याद कर लेता।

एक साल बाद जब उस कोर्स की परीक्षा हुई और परिणाम घोषित हुए तो मैं 99 प्रतिशत अंकों के साथ कक्षा में प्रथम स्थान पर आया था।

## वीर उसको जानिए

मैंने इसी प्रशिक्षण केंद्र में आयोजित की गई एक शतरंज प्रतियोगिता में भी अपने सब विरोधी खिलाड़ियों को हराकर प्रथम पुरस्कार भी प्राप्त किया।

यद्यपि मैं इन उपलब्धियों को विशेष नहीं मानता था, (क्योंकि मुझे तो जीवन में बहुत कुछ अनुभव और उपलब्धियाँ हासिल करनी थीं, लेकिन मेरी इन उपलब्धियों के चर्चे होने लगे। इतनी भयंकर चोट से इतने कम समय में बाहर आकर मैंने ये उपलब्धियाँ भी हासिल की थीं। अतः मुझे सबके लिए एक आदर्श माना जा रहा था।

कुछ समाचार-पत्रों में मेरी उपलब्धियों के विषय में लेख लिखे गए और उसके बाद तो मेरे पास प्रतिदिन पचासों पत्र आने लग गए। वह इ-मेल का जमाना नहीं था, अतः सब पत्राचार ही करते थे। मैं भी समय निकालकर सभी पत्रों के उत्तर देता। मेरे कई पत्राचार मित्र भी बन गए।

यद्यपि मैं परिस्थितियों को हराकर कामयाब हुआ था, लेकिन मुझे घमंड नहीं था। हाँ, गर्व अवश्य था। मैं परिस्थितियों और समय का सम्मान भी करता हूँ। किसी दिन मैं परिस्थितियों से हार भी सकता हूँ; लेकिन न मुझे उस दिन की परवाह है, न प्रतीक्षा। मैं मात्र अपने लक्ष्य और उद्देश्य की ओर बढ़ना जानता हूँ। और यही मेरा कर्म है। कर्मण्येवाधिकारस्ते—कर्म ही अधिकार है।

□



## वीर उसको जानिए

अब तक :-

‘मुश्किलों के सामने अगर हम अपना फैसला बदली कर दें तो हम अंदर से कमजोर हो जाते हैं।’

‘कठिन समय में जो आपके मित्र बनते हैं, वे ही आपके सबसे श्रेष्ठ मित्र होते हैं।’

ऐ खुदा दे कुछ और तकलीफ मुझे, नई कोई चुनौती तो दे,  
कि जिंदगी को और जीने को जी चाहता है।

कुछ तो आँधियों को उठा, कुछ तूफान तो हों  
कि आसमानों को फिर छूने को जी चाहता है।

‘कर्म ही हमारा अधिकार है। अंत क्या होगा, यह हमारे हाथ में नहीं है। अर्थात् हमें हमेशा बिना फल की अधिक परवाह किए अच्छी मंशा से काम करते रहना चाहिए।’

‘हम में शारीरिक व मानसिक रूप से असीमित क्षमता होती है। हमारी क्षमता हमें कुछ पाने से नहीं रोक सकती। हमारी सोच हमें रोक सकती है। यदि हम यह सोचते हैं और विश्वास रखते हैं कि हम किसी कार्य को सफलतापूर्वक कर पाएँगे तो अवश्य ही हम कर पाएँगे। और यदि हममें कोई शंका घर कर जाती है कि शायद हम सफल नहीं होंगे तो हम अवश्य ही सफल नहीं होंगे।’

‘विश्वास सफलता का पहला कदम है और शंका पराजय की पहली सीढ़ी।’

‘यह आवश्यक है कि हमें स्वयं पर गर्व हो और हम स्वयं को उस गर्व के योग्य बनाएँ।’

## वीर उसको जानिए

‘परिस्थिति जितनी भी कठिन हो, आपको उतना ही शांत होना चाहिए। तभी आप उस परिस्थिति का सफलतापूर्वक सामना कर पाएँगे।’

‘कर्मण्ये वाधिकारस्ते...’—कर्म ही आपका अधिकार है। बिना हार-जीत की परवाह किए कर्म करते रहो।

‘हमारे जीवन में विकट परिस्थितियों का समय ही वह समय होता है, जब हमें छोटी-छोटी चीजों का महत्त्व पता चलता है और खुद जीवन का महत्त्व पता चलता है।’

‘हमारा स्वयं में विश्वास ही हमारी शक्ति है। स्वयं में अपने विश्वास को कभी कम न होने दें।’

‘अपनी योग्यता को आपको स्वयं परिभाषित करना है।’

‘जीवन में प्रेरणा, प्रसन्नता और सकारात्मकता फैलाने के लिए हमें कुछ विशेष नहीं करना होता। हमें बस खुद प्रसन्न और हँसमुख रहना होता है। इससे खुद ही चारों ओर सकारात्मकता फैलती है।’

## जीवन में वापसी

अस्पताल में लगभग दो साल रहने के बाद जुलाई 1997 में मुझे अस्पताल से छुट्टी भी दे दी गई और सेना में सेवा से सेवानिवृत्त भी कर दिया गया। उन दिनों सेना में एक कानून लाया जा रहा था कि विकलांग हुए व्यक्ति को भी सेना से सेवानिवृत्त नहीं किया जाएगा और उसे किसी कार्यालय में उचित कार्य दे दिया जाएगा। लेकिन मेरे मन में कोई शंका नहीं थी। अब इतना विकलांग होने के बाद सेना के लिए कुछ उतना अच्छा न कर पाऊँ, लेकिन समाज और देश के लिए अवश्य कर पाऊँगा, ऐसी मेरी सोच थी। अब मैं समाज को अपना योगदान देना चाहता था।

जब मैं सेना से सेवानिवृत्त हुआ तो मेरे मेडिकल सर्टिफिकेट (प्रमाण-पत्र) में लिखा था—‘100% disabled for life’, यानी कि ‘जीवन भर के लिए 100% अयोग्य’। मुझे पता था कि अवसर मिला तो एक दिन मैं अपनी योग्यता अवश्य साबित करके दिखाऊँगा।

लेकिन अब मेरे सामने एक युद्धभूमि थी और जीतने के लिए एक महायुद्ध। मैं बड़ी कठिनाई से अपनी व्हीलचेयर ही थोड़ी-बहुत चला पाता था और मेरे हाथ भी कुछ थोड़ा ही काम करते थे। ऐसी परिस्थिति में मैं बाहर की दुनिया में क्या कर पाऊँगा? स्वयं का ध्यान रखना और सकुशल रहना भी एक चुनौती होने वाली थी। मुझे नहीं पता था कि मैं कैसे सफल होऊँगा, किंतु मैं सफल होऊँगा, इस बात पर मेरा पूरा विश्वास था।

‘जीवन में जब भी निर्णय लेना हो तो सबसे कठिन विकल्प को

## वीर उसको जानिए

**चुनो। ऐसा करके ही तुम जीवन में बड़ी उपलब्धियाँ हासिल कर सकोगे।'**

मैंने निर्णय लिया कि मैं कंप्यूटर में आगे पढ़ाई करूँगा। पुणे शहर के एक विख्यात अंतरराष्ट्रीय कॉलेज में मैंने स्नातकोत्तर की डिग्री के लिए प्रवेश पाने का निर्णय लिया। किंतु इस कॉलेज में प्रवेश पाने की कोशिश करनेवालों की बहुतेरी भीड़ थी। अतः एक प्रवेश परीक्षा को पास करना था, जिसमें 30,000 से अधिक विद्यार्थी प्रवेश के लिए भाग लेने वाले थे और जहाँ तक मुझे ध्यान है, कुल 50 के लगभग छात्र ही प्रवेश पा सकते थे।

कठिन मुकाबला था। इस परीक्षा में बहुत सा गणित था और ऐसे प्रश्न थे, जिसमें कागज पर लिखकर ही जवाब निकाला जा सकता था। मैं उतना लिखने में असमर्थ था और मेरा मुकाबला ऐसे विद्यार्थियों से था, जो पढ़ाई में माहिर थे। बहुत से विद्यार्थी इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त कर चुके थे। यह वास्तव में मेरी मानसिक योग्यता की परीक्षा थी।

अस्पताल में रहते हुए मैंने अपनी मानसिक योग्यता को बढ़ाया था। साधारण प्रतिभावाले विद्यार्थियों से मुकाबला करना होता तो एक बात थी, किंतु यहाँ मुझे विशेष प्रतिभाशाली विद्यार्थियों से मुकाबला करना था और मैं लिखकर उत्तर नहीं निकाल सकता था। मुझे मन में ही उत्तर निकालना था।

मैं इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ और मैंने कॉलेज जाना शुरू किया। बहुत कठिनाई थी। ऐसी हालत में प्रतिदिन एक ऑटो रिक्शा में अपनी व्हीलचेयर और खुद को डाल मैं 10 किलोमीटर का सफर तय करता और लगभग 10 घंटे कक्षा में रहता। कक्षा में जाने और कक्षा से आने के लिए 40 सीढ़ियाँ चढ़नी व उतरनी पड़ती थीं। मेरे सहपाठियों ने मेरी सदैव बहुत सहायता की और मैं कक्षा में आ-जा सका।

यह दो साल का स्नातकोत्तर का कोर्स था और इसमें बहुत पढ़ाई करनी पड़ती। बड़ी-बड़ी और कठिन परीक्षाएँ भी होतीं। मेरी कठिनाई इसलिए बहुत

## वीर उसको जानिए

अधिक थी कि मैं लिख नहीं पाता था। सब कठिन प्रश्न दिमाग में सुलझा, उनका जवाब बोलकर एक नियुक्त व्यक्ति के द्वारा लिखवाना पड़ता।

मैंने कठिन परिश्रम जारी रखा और जब अंतिम परीक्षा हुई तो मेरे 68 प्रतिशत अंक आए थे, जो प्रथम श्रेणी में बहुत अच्छे अंक थे। प्रथम स्थान पानेवाले छात्र के अंक मुझसे मात्र 3 प्रतिशत अधिक थे। मैं अपने परीक्षा फल से प्रसन्न था। मैंने अपनी योग्यता को साबित किया था।

उस समय वर्ष 1997 में कंप्यूटर में इतनी बड़ी योग्यता (स्नातकोत्तर/masters डिग्री) पाने की बात से मुझे देश में तो क्या, पूरे विश्व में कहीं भी नौकरी मिल सकती थी। मेरे सहपाठियों को नौकरी मिल भी रही थी, लेकिन मैं किसी अंतरराष्ट्रीय कंपनी में नौकरी करने का इच्छुक नहीं था। मैं कुछ अलग करना चाहता था। मेरे निकट जनों और सहपाठियों को अचरज था कि मैं इतनी बढ़िया नौकरियाँ पाने के अवसर क्यों छोड़ रहा हूँ; लेकिन मेरा अपने भविष्य के बारे में भिन्न विचार था।

मैं आनेवाले समय में अपने देश और समाज के लिए कार्य करना चाहता था। मेरा विचार था कि जिस मिट्टी में मैंने जन्म लिया, उस मिट्टी के प्रति और वहाँ के लोगों के प्रति मेरा कर्तव्य बनता है कि मैं वहाँ के सुधार के लिए कार्य करूँ। जिस समाज ने हमें पाला और जहाँ से हमने इतना कुछ सीखा और पाया, उस समाज का हमपर ऋण है और हमारा कर्तव्य है कि हम उस समाज के लिए जितना हो सके उतना करें।

मैं जानता था कि मेरे पास साधन व योग्यता नहीं थी और ऐसा करने में समय लगने वाला था; किंतु मैं समय और श्रम दोनों देने के लिए तत्पर था।

मैंने एक स्कूल में कंप्यूटर के अध्यापक की नौकरी कर ली। यह स्कूल मेरे घर से लगभग 22 किलोमीटर दूर था। पर मैं बहुत खुश था। एक अध्यापक होना मेरे लिए बड़े गर्व की बात थी।

एक साल तक उस विद्यालय में पढ़ाने के साथ ही मैंने पुणे विश्वविद्यालय

### वीर उसको जानिए

से एक राष्ट्रीय स्तर की लेक्चरर बनने की परीक्षा (UGC NET) भी सफलतापूर्वक उत्तीर्ण कर ली। अब मैं किसी भी महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय में लेक्चरर बन सकता था। किंतु मेरी रुचि छोटे और स्कूली बच्चों को पढ़ाने में ही अधिक थी। मैंने विद्यालय में पढ़ाना जारी रखा।



## स्वावलंबन : एक प्रयास और सफलता

मुझे स्वयं कहीं भी आने-जाने में कठिनाई होती थी। चालक सहित गाड़ी होने से तो आ-जा सकता था, किंतु चालक हमेशा तो उपलब्ध नहीं रहेगा और आपको आना-जाना तो किसी भी समय पड़ सकता है। बिना कहीं आने-जाने की योग्यता के तो मैं जीवन में कुछ भी नहीं कर पाऊँगा।

मैंने निर्णय लिया कि मैं स्वयं ही गाड़ी चलाऊँगा। मेरे ऐसा निर्णय लेते ही मुझे चारों ओर से विरोध का सामना करना पड़ा। मेरे परिवार जन एवं मित्रगण, सबने मेरा विरोध किया। वे सब मेरी सुरक्षा को लेकर चिंतित थे। उनका कहना था कि जब आजकल साधारण और सेहतमंद लोग भी सड़क पर गाड़ी नहीं चला सकते तो मैं अपनी अवस्था में इतनी भीड़-भाड़वाली सड़कों पर गाड़ी कैसे चलाऊँगा। विरोध तो हुआ, किंतु मेरा विश्वास अडिग था।

बहुत दिनों तक मैंने एक दुपहिया स्कूटर को काट-पीट कर कुछ ऐसा बनाने का प्रयास किया, जिसे मैं चला सकूँ। उसमें संतुलन बनाए रखने के लिए दो पहिए और लगाए। एक अलग तरह का हैंडल भी लगाया, अलग तरह की कुरसी लगाई और भी बहुत से ताम-झाम लगाए। लेकिन कई महीनों या लगभग एक साल की मेहनत के बाद भी मैं इसमें सफल न हो सका। मैं कुछ हताश था।

फिर मैंने सोचा कि क्यों न मैं एक स्तर आगे की सोचूँ! इस स्कूटर को कार के समान बनाने के बजाय मैं कार ही क्यों न चलाऊँ! मैंने ठान लिया कि मैं अब एक चार पहिया गाड़ी को ही, यानी कि एक कार को ही कुछ परिवर्तित

## वीर उसको जानिए

कर अपने चलाने योग्य बनाऊँगा।

यह बड़ी हर्षित व उत्तेजित करनेवाली सोच थी। यदि मैं कार चला सका तो बहुत आजाद हो जाऊँगा। बाकी लोगों की तरह कहीं भी आ-जा सकूँगा। पूर्ण विकलांगता और अयोग्यता से सामान्य जीवन की ओर जाने में यह एक मुख्य कदम साबित होगा। मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि अब तो मैं यह करके ही रहूँगा। मेरे लिए शीघ्र सफल होना आवश्यक था; क्योंकि किसी को भी यह विश्वास नहीं था कि मैं सफल हो पाऊँगा। अतः मेरे पास समर्थन और सहयोग अधिक दिन नहीं रहने वाला था—और बिना समर्थन व सहयोग के मेरे लिए यह उपलब्धि हासिल कर पाना और कठिन हो जाता।

सेना द्वारा बैटरी से चलनेवाली एक व्हीलचेयर खरीदने के लिए मुझे 80,000 रुपए दिए गए। मैंने अनुमति माँगी कि मैं इस पैसे से एक पुरानी कार खरीद सकूँ। यह अनुमति मुझे मिल गई। अपनी ओर से 25,000 रुपए और मिला। मैंने एक आठ साल पुरानी एक कार खरीदी, जो कि ऑटोमैटिक गियरवाली कार थी। मेरे बड़े भाई ने मेरा बहुत प्रोत्साहन किया और अपना सहयोग दिया। मैं एक दिन के समय में ही कार को सड़क पर चलाने लगा। यहाँ बताने योग्य बात यह है कि इससे पहले मैंने कभी कार नहीं चलाई थी। चोट लगने से पूर्व तो मैं मात्र स्कूटर ही चला पाया था।

मैं खूब कार चलाने लगा। घूमने जाता, दोस्तों से मिलने जाता और काम पर भी जाता। खुद से गाड़ी चला पाना और सब जगह आ-जा सकना मेरे लिए दोबारा जीवन मिलने के समान था। मैं वनों में, झीलों के किनारे और पर्वतों में गाड़ी चलाकर जाता।

पुणे शहर के बाहर एक सिंहगढ़ पर्वत था, जहाँ हम प्रशिक्षण के दिनों में पैदल चढ़कर जाते थे। मैं अकसर उस पहाड़ी रास्ते पर गाड़ी चलाकर ऊपर तक जाता और वहाँ उड़ रहे बादलों व धुंध के बीच किनारे पर बैठ सामने फैली घाटी की सुंदरता को निहारता।

मैंने अपना जीवन फिर से पा लिया था।



## वीर उसको जानिए

‘यदि आपका स्वयं में विश्वास टूट हो तो यह आपकी सबसे बड़ी शक्ति है।’

गाड़ी चला पाना मेरे लिए दोबारा जन्म लेने के समान था। मैं कहीं भी, कभी भी आ-जा सकता था। मैं अपने इस नए मिले जीवन का आनंद ले रहा था। मैंने विकलांग लोगों के लिए विशेष गाड़ी चलाने के लाइसेंस के लिए ट्रांसपोर्ट ऑफिस में अर्जी दी और मुझे पहले गाड़ी सीखनेवाला लाइसेंस मिल गया।

छह महीने के बाद जब मैंने पक्के लाइसेंस के लिए अर्जी दी तो वहाँ नियुक्त अधिकारी का रवैया बहुत नकारात्मक था। गाड़ी चलाने में निपुण होने के बावजूद उसने मुझे लाइसेंस देने से इनकार कर दिया।

कानूनन मुझे लाइसेंस लेने का अधिकार था, लेकिन उस अधिकारी के नकारात्मक रवैए के कारण मुझे बहुत कष्ट उठाना पड़ा। मैंने मुंबई में राज्य के सबसे बड़े ट्रांसपोर्ट ऑफिस में अर्जी दी।

मैंने एक समाचार-पत्र को चिट्ठी लिख अपनी समस्या से अवगत कराया। मेरी कहानी और समस्या पर एक पत्रकार ने लेख भी लिखा और प्रकाशित किया। इसके बाद मुझे बहुत लोगों से समर्थन के पत्र आने लगे और बहुत सी जनता का समर्थन भी मिला। अंततः मुझे मुंबई के ट्रांसपोर्ट कमिश्नर के आदेश पर लाइसेंस दे दिया गया। लाइसेंस देने से पहले गाड़ी चलाने की मेरी योग्यता को अच्छे से परखा गया, जिसमें मैं सफल रहा।

इस सफलता के बाद मेरा साक्षात्कार उस समाचार-पत्र ने फिर से छापा और इसमें मैंने सब लोगों का उनके समर्थन के लिए धन्यवाद किया। मैंने यह भी कहा के अगर मुझे हर कार्य के लिए दो गुना परिश्रम करना पड़ता है तो फिर मुझे अयोग्य/diabled क्यों कहा जाए? मुझे तो ‘दोगुनी योग्यतावाला व्यक्ति’ कहा जाना चाहिए।

□

## दिल्ली में मेरी वापसी एक कठिन निर्णय

वर्ष 2000 के आते-आते मेरे पिता के सेना से सेवानिवृत्त होने का समय आ गया। अब हमें पुणे में मिला सैन्य आवास खाली करना था। मेरे पास दो विकल्प थे—या तो मैं यहाँ पुणे में एक छोटा सा मकान खरीदकर रह सकता था या मैं दिल्ली के निकट बसे गुडगाँव शहर में अपने पैतृक स्थान के बहुत निकट रह सकता था।

मेरे जैसी चोटवाले व्यक्ति के लिए पुणे एक उपयुक्त शहर था। रीढ़ की हड्डी की चोटवाले व्यक्तियों के लिए यहाँ विशेष अस्पताल थे। मेरे जैसी चोट वाले व्यक्ति के लिए ठंडा या गरम मौसम सह पाना बहुत कठिन होता है; क्योंकि ऐसे व्यक्ति का शरीर काम नहीं करता है। पुणे में बारह महीने अच्छा मौसम रहता था, लेकिन फिर भी कभी-कभी सर्दी और गरमी से मुझे भयंकर कष्ट का सामना करना पड़ता था। फिर दिल्ली का मौसम तो तेज गरमी व ठंड के लिए जाना जाता है। मैं वहाँ कैसे निर्वाह कर पाऊँगा? पुणे में जीवन इतना सरल था कि यहाँ आने के बाद कोई भी व्यक्ति इस जगह को छोड़कर जाना नहीं चाहता था।

लेकिन मैं जानता था कि मेरे जो उद्देश्य थे, उन्हें मैं अपने पैतृक स्थान के पास रहकर अधिक अच्छे तरीके से प्राप्त कर पाऊँगा। मैं सामाजिक कार्य के द्वारा समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन लाना चाहता था। मैं गाँव में बच्चों की शिक्षा की बेहतरी के लिए कार्य करना चाहता था। मैं जरूरतमंद बच्चों की मदद करना चाहता था, लेखन करना चाहता था और साहसिक खेलों

### वीर उसको जानिए

(adventure sports) में कुछ उपलब्धियाँ प्राप्त करना चाहता था।

मैंने निर्णय लिया कि चाहे यह मेरे लिए कितना भी कठिन हो, मैं दिल्ली आकर अपने कार्य को आगे बढ़ाऊँगा।

‘जीवन में जब भी आपके सामने कुछ विकल्प हों तो आप सबसे कठिन विकल्प चुनें। सबसे कठिन विकल्प को चुनकर ही आप अपने जीवन को सार्थक कर सकते हैं।’

‘मैं कैसे कर पाऊँगा, यह मुझे नहीं पता था; किंतु मैं कर पाऊँगा, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास था।’

□

## दिल्ली में वापसी

वर्ष 2000 में पुणे से सब समेटकर मैं और मेरा परिवार दिल्ली आ गए। मेरा जीवन एक चक्रव्यूह के समान चल रहा था। मैं घूम-फिरकर फिर वहीं आ जाता था। सबसे पहले मेरा जन्म वर्ष 1973 में यहाँ दिल्ली में हुआ, फिर 1980-84 तक मैं यहाँ पढ़ा, फिर चोट लगने के बाद मेरा ऑपरेशन यहाँ हुआ और अब मैं यहाँ अपने कार्य के लिए और समाज में अपना योगदान देने के लिए आया था। जहाँ मैं गुड़गाँव/गुरुग्राम में रह रहा था, वह हजारों वर्ष पूर्व गुरु द्रोण का आश्रम था और जहाँ मैं कार्य कर रहा था, वह धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र से अधिक दूर नहीं था। हाँ, यह मेरा कुरुक्षेत्र था और जो महाभारत की लड़ाई मुझे लड़नी थी, वह अब मेरे सामने थी।

‘कर्मण्येवाधिकारस्ते’...कर्म ही अधिकार है

जब मैं दिल्ली पहुँचा तो मुझे बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, क्योंकि मेरा शरीर काम नहीं करता था, गरमी में मुझे बहुत तेज बुखार हो जाता और मुझे अपने सिर पर थोड़ा पानी डालते रहना पड़ता। बहुत बार मेरे शरीर का तापमान इतना बढ़ जाता कि मैं अपनी सुध-बुध खो बैठता।

मुझे खुद यह ध्यान नहीं कि कितनी ही बार मैं गरमी से लगभग बेहोश-सा हो गया था। सर्दियों में मैं ठिठुरता रहता, लेकिन मैंने अपने काम को रुकने नहीं दिया। मैं बच्चों को कंप्यूटर और गणित पढ़ाता। मैं गाँव में जाकर बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाता।

धीरे-धीरे मैंने अपने आपको ऐसे ढाल लिया कि मैं इस माहौल में भी पूरी लगन और कुशलता के साथ कार्य कर सकूँ। □

## एक असंभव लक्ष्य

पुणे में रहते हुए ही मेरी नजर एक दिन एक समाचार पर पड़ी थी। उसमें लिखा था कि तीन युवक अपनी मोटरसाइकिल पर हिमालय में दुनिया की सबसे ऊँची सड़क 'खर्दुंग ला', जो समुद्र-तल से 18,380 फीट की ऊँचाई पर है, तक गए थे। यह सफर तय करने में उन्हें 25 दिन से ज्यादा लगे थे।

मुझे अपना लक्ष्य मिल गया था। मैंने मन में ठान लिया था कि एक दिन मैं उस पहाड़ी की चोटी तक जाऊँगा। मैं कैसे जा पाऊँगा, यह मुझे नहीं पता था; किंतु मैं जा पाऊँगा, ऐसा मेरा विश्वास था। मेरे जैसे व्यक्ति के लिए इतने दिन सड़क और पहाड़ों में निकालना और शून्य से 40 डिग्री कम तापमानवाली जगह जाना या जाने की सोचना असंभव ही नहीं बल्कि हास्यास्पद भी था। मैंने किसी को अपने उद्देश्य के बारे में नहीं बताया; किंतु मैंने अपने स्तर पर जानकारी इकट्ठी करनी शुरू कर दी।

इस बीच मुझे पता चला कि दिल्ली से लगभग 70 कि.मी. दूर मेरठ शहर के निकट एक हवाई अड्डे पर छोटे हवाई जहाज और ग्लाइडर उड़ाना सीखने की सुविधा उपलब्ध है। मैं इस अवसर को छोड़ने वाला नहीं था। मैंने तैयारी की और मेरठ में जाकर हवाई जहाज उड़ाने का प्रशिक्षण लिया।

एक खुले ग्लाइडर में बैठ उसे आसमान में ऊँचाइयों तक उड़ाना एकदम पक्षी की तरह उड़ने के समान था। कभी-कभी ऊँचाइयों पर उड़ते हुए हम एक ऊँचे उड़ने बाज पक्षी का पीछा करते। वह मेरे जीवन के सबसे खूबसूरत

## वीर उसको जानिए

अनुभवों में से एक था। मैंने जीवन में हमेशा यह लक्ष्य रखा कि जब भी मुझे कुछ नया अनुभव करने का और सीखने का अवसर मिले तो मैं उस अवसर का अवश्य सदुपयोग करूँ।

**‘जीवन में जब भी कुछ सीखने व अनुभव करने का अवसर मिले तो ऐसे अवसर का सदुपयोग करो और उसे व्यर्थ न जाने दो।’**

मैं अपनी गाड़ी चलाकर लेह-लद्दाख जाना चाहता था; किंतु यदि किसी को अपना यह उद्देश्य बताता तो उसे यह हास्यास्पद और मूर्खतापूर्ण ही लगता। मैंने बहुत कोशिश की कि मैं उस रास्ते के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकूँ, ताकि मैं उसी अनुसार अपनी तैयारी भी कर सकूँ। लेकिन उन दिनों इंटरनेट पर भी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं थी।

मुझे कहीं से यह पता लगा कि लेह-लद्दाख का मार्ग साल में सिर्फ दो महीने के लिए ही खुलता है और बाकी समय बर्फ से ढका रहता है। (हालाँकि यह जानकारी सही नहीं थी; किंतु मुझे यह ज्ञात नहीं था और मैंने इसी जानकारी के आधार पर अपनी तैयारी शुरू कर दी।)

मुझे लगा कि यदि यह मार्ग गरमियों में कुल दो माह के लिए ही खुलता है तो शायद वह मई व जून के माह होंगे; क्योंकि यह सबसे गरमीवाले महीने होते हैं। मैंने यह निर्णय लिया कि मैं मई महीने की 20 तारीख को अपने सफर की शुरुआत करूँगा।

मेरी कार बहुत पुरानी हो चुकी थी और यह मारुति 800 उस समय की सबसे छोटी गाड़ी थी। क्या मैं ऐसी गाड़ी को सबसे ऊँचे पहाड़ी दर्रे तक ले जा पाऊँगा? यह उद्देश्य तो असंभव-सा प्रतीत हो रहा था।

**‘जीवन में आपको अपनी इच्छा के अनुसार परिस्थितियाँ कभी नहीं मिलेंगी। किंतु आपको विश्वास होना चाहिए कि परिस्थितियाँ चाहे कैसी भी हों, आप अवश्य सफल होंगे।’**

मैंने कुछ पैसे लगा अपनी गाड़ी की मरम्मत करवाई, ताकि वह ऐसे

### वीर उसको जानिए

कठिन सफर को तय कर सके। मेरे पहले सफर पर मेरा साथ देने के लिए मेरा मौसेरा भाई धर्मेन्द्र एवं उसका दोस्त उपेंद्र तैयार हुए और हमने जाने की तैयारी शुरू कर दी। ऐसे पहाड़ी दर्रों और हिमालय की चोटियों के बीच वह एक कठिन सफर साबित होने वाला था। जो भी सामान हमें आवश्यक और उपयोगी लगा, वह हमने अपने साथ रख लिया।

□

## हिमालय की ओर : पहला प्रयास

**ज**ब मैंने अपने परिवार और मित्रों को अपने निर्णय के विषय में बताया तो सबने मेरे निर्णय का विरोध किया। सबने बहुत प्रयास किया कि मैं अपना निर्णय बदल लूँ; किंतु मैं अपने निर्णय पर अडिग था। 20 मई को कुछ परिवारजनों और शुभचिंतकों की उपस्थिति में हम लोग शाम 5 बजे गुड़गाँव से रवाना हुए। गरमी बहुत थी और मेरा इरादा था कि हम रात के रहते चंडीगढ़ तक का सफर तय कर लेंगे और जब सुबह होगी तो हम पहाड़ी चढ़ रहे होंगे।

मैं देर रात तक गाड़ी चलाता रहा। रात हम अंबाला शहर पहुँचे, जहाँ कुछ घंटे विश्राम कर हम सुबह 4 बजे फिर चल पड़े। दिन होते-होते हम हिमाचल की पहाड़ियाँ चढ़ रहे थे। चंडीगढ़ से मनाली तक का 250 किलोमीटर का रास्ता घुमावदार मोड़ों से भरा हुआ था। सड़क लगातार दाएँ या बाएँ मुड़ रही थी। पूरे दिन इन रास्तों पर लगातार दाएँ और बाएँ गाड़ी के स्टेयरिंग को मोड़ते हुए मेरे हाथ न जाने कितनी बार सुन्न हो चुके थे।

अगर हमें मात्र मनाली तक जाना होता तो शायद मैं रुककर हाथों को आराम दे सकता था, लेकिन हमें तो लेह तक जाना था। मैं पहले लंबे सफर पर गाड़ी चला चुका था। दिल्ली से पुणे दो बार जा चुका था और मसूरी व नैनीताल के पहाड़ी रास्तों पर भी गाड़ी चला चुका था। मेरा अनुभव यह था कि हम सड़क पर सफर करते जितने अधिक दिन लेंगे, उतनी ही हमारे लिए यह यात्रा कठिन होती जाएगी।

गाड़ी लगातार चलाते हुए हम दोपहर बाद तक मनाली पहुँच गए। मैंने



## वीर उसको जानिए

होटल के कमरे में आराम करने का फैसला किया; क्योंकि मैं पिछले दिन की शाम से गाड़ी चला रहा था। धर्मेन्द्र और उपेंद्र ने तो मेरे गाड़ी चलाते समय आराम कर लिया था। मेरे लिए विश्राम करना आवश्यक था, क्योंकि आगे एक लंबा सफर था। धर्मेन्द्र व उपेंद्र आगे के मार्ग की जानकारी लेने और रास्ते के लिए खाने की कुछ चीजें खरीदने चले गए।

कुछ घंटे बाद जब वे दोनों वापस आए तो जो जानकारी उन्होंने दी, उसके अनुसार आगे का सफर बहुत कठिन साबित होने वाला था।

मनाली से लेह का रास्ता बस दो ही दिन पहले खुला था और पूरे मार्ग पर जहाँ-तहाँ बर्फ की दीवारें थीं, जो किसी भी समय टूट-टूटकर सड़क पर गिर सकती थीं और राह को रोक सकती थीं।

दिन के समय में पिघलती बर्फ का पानी नालों के रूप में सड़क के ऊपर बहता है। बहते पानी के इन नालों को पार करते समय बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ भी फँस जाती हैं।

मनाली से सड़क द्वारा लेह जाने का यह सबसे अनुचित समय था। ऊपर से हमारी गाड़ी इतनी पुरानी और खराब हालत में थी। बीच में लगभग 400 किलोमीटर तक कोई सहायता उपलब्ध नहीं थी। वह सिर्फ पहाड़ी दर्रों का रास्ता था। उसमें न कोई पेट्रोल डलवाने की जगह थी, न कोई दुकान; किसी भी तरह की सुविधा नहीं थी।

हमने अपना सामान बाँधा और अगले दिन सुबह 3 बजे निकलने का प्लान बनाया। इतनी सुबह निकलने का प्लान इसलिए बनाया, क्योंकि इतनी सुबह की ठंड में बर्फ पिघलना शुरू नहीं करती और सड़क पर कम पानी होता है।

सुबह 3 बजे अपनी गाड़ी में बैठ हम पहले पहाड़ी दर्रे रोहतांग को चढ़ने लगे। सड़क बहुत टूटी हुई और खराब थी। चढ़ाई भी बहुत ज्यादा थी; लेकिन हम चढ़ते गए। गाड़ी के शीशे बंद होने के कारण बाहर की ठंड का

## वीर उसको जानिए

पूरा अहसास हमें नहीं था। किंतु मुझे पता था कि बाहर की ठंड असहनीय होगी। धर्मेंद्र और उपेंद्र बहुत उत्साहित थे कि वे बिना गरम कपड़े पहने ही लेह पहुँच जाएँगे। मैंने कुछ नहीं कहा।

जैसे ही हम दर्रे के ऊपर पहुँचने वाले थे कि गाड़ी एक जगह बर्फ में फँस गई और दोनों नीचे उतरकर कार को धक्का लगाने लगे। गाड़ी बर्फ से बाहर निकली तो दोनों दौड़कर गाड़ी में बैठे। उनके हाथ-पैर नीले पड़ गए थे और दोनों बुरी तरह ठिठुर रहे थे। मैंने भी उनको चिढ़ाने का मौका नहीं छोड़ा। 'और मत पहनो गरम कपड़े।' मैंने कहा। उन्होंने भी स्वयं पर व्यंग्य करते हुए फटे गरम कपड़े पहन लिये।

हम शीघ्र ही ऊपर पहुँच गए। सुबह होती हुई रोशनी में आस-पास की बर्फ से ढकी पहाड़ियों और वादियों की अतुल्य सुंदरता को कुछ समय निहार हम आगे चल पड़े। रास्ते के दोनों ओर बर्फ की दीवारें बनी हुई थीं। बहुत ही रोमांचक सफर था। दूर-दूर तक कोई मनुष्य तो दूर, परिंदा भी पर नहीं मार रहा था। बस, नीचे घाटी में से इन दो पहाड़ी शृंखलाओं के बीच से होकर बहती नदी की आवाज आ रही थी।

यह लाहौल-स्पीति की घाटी थी। इतने एकांत में कुछ भय भी लग रहा था कि यहाँ तो राह बतानेवाला भी कोई नहीं मिलेगा। राह में एक-दो जगह ऐसी भी आई जहाँ दाईं ओर किसी गाँव तक और घाटी के दूसरी ओर रास्ता जाता था; किंतु मानचित्र के अनुसार मैंने उलटे हाथवाला रास्ता चुना। घाटी से नीचे उतरते हुए हम लकड़ी के तख्तों से बने एक पुल को पार कर नदी के दूसरी ओर खोखसर नाम के गाँव में पहुँचे। गाँव तो क्या था, गाँव के नाम पर कुछ खोखेनुमा दुकानें थीं, जहाँ पर चाय की सुविधा थी।

वहाँ बैठकर हमने चाय पी। सामने स्वच्छ पारदर्शी पानी की बहती नदी और चारों ओर बर्फ से ढकी ऊँची पहाड़ियों के बीच हमारा हर पल हमारे जीवन का सबसे सुंदर पल था। कुछ समय रुककर हम फिर चल पड़े।

नदी के साथ-साथ चलते इस घाटी की सुंदरता से हम मंत्रमुग्ध-से थे।

## वीर उसको जानिए

दोपहर बाद फिर नदी को पार कर हम दारचा गाँव पहुँचे। यह इस घाटी का अंतिम गाँव था। एक स्थानीय तिब्बती निवासी के पत्थरों से बने घर में हमने शरण ली। उन्होंने अपने घर में ही यात्रियों के रुकने और खाने की व्यवस्था कर रखी थी। पिछली खिड़की के बाहर पहाड़ी की तलहटी में बर्फ की एक गुफा में से नदी निकल रही थी। इसी घर में तीन-चार और यात्रियों ने भी शरण ली थी, जिसमें बस का एक ड्राइवर भी था।

रात हुई और हम अजनबी आग के चारों ओर बैठ उस तिब्बती गृहिणी के हाथ के बने आलू के पराँठों का चाय के साथ आनंद लेते, आपस में बातें करने लगे। बस ड्राइवर ने बताया कि आगे का रास्ता बहुत खराब है और फौजी कानबाई की गाड़ियाँ भी फँस गई थीं। उसकी सरकारी बस को भी सिर्फ इसी गाँव तक आने की अनुमति थी।

अगले पहाड़ी दर्रे पर बर्फ की दीवारों से पिघलकर पानी के बड़े झरने सड़क के ऊपर से बहते हैं और इसमें बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ भी फँस जाती हैं। यह समय सड़क से लेह जाने का प्रयास करने का सबसे अनुचित समय था। अगस्त का महीना सबसे उचित होता है।

इस नई जानकारी के परिप्रेक्ष्य में मैंने धर्मेन्द्र व उपेंद्र के साथ सोने से पहले आपस में विचार-विमर्श किया। हमारी गाड़ी हमें पहले ही कई जगह परेशान कर चुकी थी। हमें गाड़ी की मरम्मत की कतई जानकारी नहीं थी। अगले लगभग 400 किलोमीटर तक कोई सहायता उपलब्ध भी नहीं होगी। जहाँ बड़ी-बड़ी फौजी गाड़ियाँ भी फँस रही थीं वहाँ हमारी गाड़ी के इस सफर को तय करने की संभावना न के बराबर थी।

मेरा विचार था कि उस दिन हम आगे जाने के लिए तैयार नहीं हैं, अतः हमें आगे नहीं जाना चाहिए। इस राह में लेह और हमारे बीच दुनिया के सबसे ऊँचे चार पहाड़ी दर्रे थे, जो रोहतांग दर्रे से बहुत ऊँचे थे और इस राह में सफर करते जाने कितने ही लोगों की मौत ऊँचाई पर कम ऑक्सीजन के कारण और बर्फ में फँस जाने से ठंड के कारण हो चुकी थी।

### वीर उसको जानिए

मेरे निर्णय का उपेन्द्र ने समर्थन किया, किंतु धर्मेन्द्र बहुत उत्तेजित था। वह नहीं चाहता था कि हम वापस मुड़ें। मुझे अपनी समझदारी से फैसला करना था। साहसी खेलों में मैंने एक बात सीखी थी—‘साहस और मूर्खता में बहुत कम अंतर होता है। बिना पूरी तैयारी के खतरा उठाना मूर्खता होगी।’ और मुझे आगे जाना मूर्खता लग रही थी।

हमें और तैयारी की आवश्यकता थी। हमने निर्णय लिया कि हम आगे नहीं जाएँगे। मुझे विश्वास था कि मैं शीघ्र लौटूँगा और इस सफर को पूरा करूँगा।

□

## हिमालय की ओर दूसरा प्रयास

अपने पिछले असफल प्रयास का मुझे दुःख था, लेकिन मैं जानता था कि अगर हम उस सफर पर नहीं गए होते तो हमें रास्ते और जगह के बारे में इतनी जानकारी कभी नहीं मिलती। अब मैं मिली हुई जानकारी के आधार पर तैयारी कर सकता था।

मैं इस असफलता का रोना रोकर समय व्यर्थ नहीं करना चाहता था। मैंने अपने अगले प्रयास की तैयारी शुरू कर दी। मैं अधिक दिनों तक इस असफलता के बाद हाथ-पर-हाथ धरे बैठा नहीं रह सकता था। मैंने निर्णय लिया कि मैं एक महीने बाद पुनः प्रयास करूँगा। धर्मेन्द्र और उपेंद्र अपनी व्यस्तताओं के कारण इतने कम समय में दोबारा जाने में असमर्थ थे। इस बार के मेरे साथी बने केशव और अंकुश। केशव मेरा सहायक लड़का था और अंकुश मेरा स्टूडेंट, जिसने अभी दसवीं की परीक्षा पास की थी।

मेरे दोनों साथी लगभग सोलह साल की उम्र के थे। हालाँकि हमारे बीच मित्रता का रिश्ता था, लेकिन वे दोनों मुझसे उम्र में बहुत कम थे। दोनों मेरे साथ जाने के लिए उत्साहित थे और दोनों के माता-पिता की भी अनुमति थी। दोनों को मैं अपने सगे छोटे भाइयों की तरह मानता था। हमने मिलकर तैयारी करनी शुरू कर दी। अंकुश बहुत लगन से तैयारी कर रहा था। वह न सिर्फ गाड़ी को मैकेनिक के पास ले जाकर गाड़ी को तैयार करवाता, बल्कि खुद भी पूरे समय गाड़ी की मरम्मत के बारे में जानकारी हासिल करता रहता। उसकी यह मेहनत हमारे सफर में सबसे अधिक काम आने वाली थी।

## वीर उसको जानिए

मैंने 2 जुलाई, 2002 को निकलने का निर्णय किया। सब सामान बाँधकर हम 2 जुलाई की रात को 10 बजे के आस-पास दिल्ली से रवाना हुए। हमें रवाना करने आए लोगों में मात्र अंकुश के माता-पिता और मेरे माता-पिता ही थे। किसी को भी यह खबर नहीं थी कि हम ऐसा प्रयास कर रहे हैं। यह सिर्फ हमारी जंग थी। सुबह होते-होते हम मनाली की पहाड़ियाँ चढ़ रहे थे। हम आपस में खूब हँसी-मजाक करते और अंकुश व केशव में तो जमकर लड़ाई भी होती; लेकिन अंत में वह मेरा सुझाव मान लड़ाई बंद कर देते। कार में बीच-बीच में ऊँचा संगीत चलाने को लेकर भी लड़ाई होती।

इतने में ताबड़तोड़ बारिश शुरू हो गई। मैंने एक जगह गाड़ी साइड में लगा आराम भी कर लिया, क्योंकि बारिश में कुछ दिख नहीं रहा था। लगातार चढ़ाई चढ़ते शाम तक हम मनाली पहुँच गए और एक होटल में रुककर हमने अगले दिन के सफर की तैयारी शुरू कर दी। फिर हमें ज्ञात हुआ कि हमने जो गरम कपड़ों का अलग बस्ता बनाया था, वह तो हम घर ही भूल आए थे; क्योंकि मैदानों तक तो गरमी थी, इसलिए हमें गरम कपड़ों के न होने का पता नहीं चला। लेकिन अब इतनी ठंड में तो हमारा बुरा हाल हो रहा था। हमने ठंड से बचने के लिए दो-तीन जोड़ी कपड़े एक के ऊपर एक पहन लिये।

अगले दिन सुबह हम 3 बजे निकले और रोहतांग दर्रे को पार कर लाहौल स्पीति की घाटी में उतरने लगे। मेरा इरादा था कि हम दारचा गाँव में न रुकें, बल्कि शाम होने तक हम अगले पहाड़ी दर्रे को पार कर सर्चू पहुँच जाएँ। अगला पहाड़ी दर्रा रोथंग दर्रे से 1,500 फीट और ऊँचा था तथा उसका रास्ता बुरी तरह टूटा हुआ था। बर्फ में से पिघलकर आता पानी सड़क पर से नालों के रूप में बहता था। ऐसा मुझे अपने पिछले सफर में पता चला था। दोपहर बाद का समय इस रास्ते को पार करने का सबसे अनुचित समय था, क्योंकि इस समय गरमी के कारण बर्फ पिघलने से सबसे अधिक पानी सड़क पर से बहता मिलेगा।

लेकिन हमारे पास अधिक विकल्प नहीं थे। मैं मनाली से लेह का रास्ता

## वीर उसको जानिए

अधिकतम दो दिनों में तय करना चाहता था और इसके लिए एक दिन में कम-से-कम सचू तक पहुँचना आवश्यक था। अतः मैंने यह निर्णय लिया था कि हम सचू जाकर ही रुकेंगे। यह एक कठिन निर्णय था, लेकिन कठिन राह में कठिन निर्णय लेने पड़ते हैं।

**‘कठिन उद्देश्यों को पाने के लिए कठिन राह चुननी पड़ती है, कठिन निर्णय लेने पड़ते हैं।’**

दोपहर बाद हमने दारचा गाँव को पार किया। गाँव से निकलते समय मैंने एक बार मुड़कर उस घर की ओर देखा, जहाँ हम पिछली बार रुके थे और फिर मैं आगे बढ़ गया।

अगले पहाड़ी दर्रे का नाम बारालाच्ला था और यह पहले पार किए गए रोहतांग दर्रे से लगभग 1,500 मीटर अधिक ऊँचा था। यह पहाड़ी दर्रा अपने खतरनाक टूटे-फूटे रास्तों और उनपर पड़ी बर्फ एवं उनपर बहते नालों के लिए जाना जाता था। लेह के रास्ते में यह हमारी सबसे बड़ी चुनौती थी। अगर हमने इस रास्ते को पार कर लिया तो हम लेह की ओर आधे से अधिक रास्ता तय कर चुके होंगे।

टूटे-फूटे पहाड़ी रास्ते पर चढ़ते हमें आगे किसी बड़े झरने की आवाज सुनाई दे रही थी और हमारे कुछ पीछे एक ट्रक भी इस रास्ते पर चढ़ रहा था।

फिर जैसे ही हम उस टूटे-फूटे पहाड़ी रास्ते के एक तीव्र मोड़ के ऊपर से मुड़े तो सामने का दृश्य देख हमारे तो होश ही उड़ गए। पहाड़ी के ऊपर पड़ी बर्फ से पिघलता पानी एक बड़े और तेज बहते झरने के रूप में सड़क पर गिर दूसरी ओर से नीचे खाई में बह रहा था। वह दृश्य देखकर भी मानो असंभव-सा लग रहा था।

अंकुश ने तुरंत कहा, ‘सर, गाड़ी साइड में लगा लो, नहीं तो फँस जाएगी।’

## वीर उसको जानिए

मैंने पल भर में ही सोचा कि अगर हमने गाड़ी साइड में लगा ली और यह पीछे आ रहा ट्रक बिना रुके निकल गया तो फिर जाने कब सहायता आए। मैंने फैसला किया कि हम गाड़ी पानी में उतारेंगे। मैंने अंकुश को कहा, 'मैं गाड़ी पानी में उतार रहा हूँ। अगर गाड़ी फँसी तो कैसे-न-कैसे निकाल लेंगे।'

मैंने जल्दी सोचते हुए अनुमान लगाया कि जिस ओर पहाड़ी पर से सड़क पर पानी गिर रहा है, वहाँ घर्षण के कारण पानी गहरा होगा और दूसरी ओर पानी तेजी से बहकर खाई में गिर रहा था। अधिक किनारे पर चलाने से गाड़ी के पानी के साथ बहकर खाई में गिर जाने का डर था। मैंने जल्द अनुमान लगा कुछ किनारे की ओर ही गाड़ी पानी में उतार दी। गाड़ी तुरंत गहरे पानी और पत्थरों के बीच फँस गई। गाड़ी के फँसते ही अंकुश और केशव धक्का लगाने के लिए पानी में उतर गए।

किंतु उन्हें यह पता नहीं था कि पानी कितना ठंडा है। मुझे पता था कि बर्फ से निकलता पानी कितना ठंडा होता है। पहाड़ी की बर्फ से पिघलता पानी इतना ठंडा होता है कि यह आपके पैर में चाकुओं के लगने के बराबर दर्द करता है। अंकुश और केशव इस पानी में उतर तो गए, लेकिन फिर चीखते-चिल्लाते और उछलते-कूदते पानी से बाहर भाग गए। मैंने गाड़ी की स्पीड को दबाए रखा। अगर मैं स्पीड को छोड़ देता तो इंजन बंद हो जाता और उसमें पानी घुस जाता। उसके बाद गाड़ी स्टार्ट होने की संभावना भी जाती रहती। तेज बहता पानी एक ओर के दरवाजे से कार में घुस बहकर दूसरी ओर से बाहर निकल रहा था।

शीघ्र ही वह ट्रक भी पहुँच गया और उसके चालक दल के तीन-चार व्यक्तियों ने केशव व अंकुश के साथ मिल, कार को धक्का लगा पानी से बाहर निकाला। कार को पानी से निकालते समय केशव तो ठंडे पानी से हो रहे दर्द के कारण एक ट्रकवाले की पीठ पर ही चढ़ गया। कार को धक्का लगाते सब चीख-चिल्ला भी रहे थे और हँस भी रहे थे। जैसे ही हमारी कार बाहर निकली, हम ट्रकवालों को धन्यवाद कह आगे चल पड़े। केशव



## वीर उसको जानिए

और अंकुश के पैर ठंडे पानी के कारण नीले पड़ गए थे और वे दोनों अपने पैरों को मसल रहे थे।

उस पहाड़ी दर्रे को पार करते हुए हमने कुछ और पहाड़ी नालों को पार किया; लेकिन बाकी नाले उतने खतरनाक नहीं थे जितना पहलेवाला था। टूटी-फूटी सड़कों पर चलते और नालों को पार करते हम सरचू पहुँच गए; लेकिन हमारी कार का बंपर और कई हिस्से तो रास्ते में ही टूटकर गिर चुके थे।

सरचू में बस कुछ टैंट/तंबू लगे हुए थे, जिसमें यात्री कुछ शुल्क अदा कर रुक सकते थे। तंबू लगभग खुले जैसे ही थे और उनके बीच से चीरती बर्फीली हवा चल रही थी। सौभाग्य से रजाइयों की कमी न थी। मैंने तीन मोटी रजाइयाँ ओढ़ लीं। यह इतनी भारी थी कि दम घुट रहा था और बीच-बीच में साँस लेने के लिए मुँह को उघाड़ना पड़ता। देर रात तक मैं ठिठुरता रहा। फिर पता नहीं कब नींद आई। दो-तीन घंटे की ही नींद रही होगी।

सुबह 3 बजे उठ हम फिर चल पड़े। हम दो पहाड़ी दर्रे पार कर चुके थे; लेकिन अब भी लेह और हमारे बीच दुनिया के तीन सबसे ऊँचे पहाड़ी दर्रे खड़े थे, जिनको पार कर हमें लेह पहुँचना था।

हम आगे बढ़े और अगले पहाड़ी दर्रे को चढ़ने लगे। यहाँ सड़क की हालत तो पहले से बहुत बेहतर थी, लेकिन चढ़ाई बहुत ज्यादा थी। कार कई जगह जवाब दे देती और अधिक चढ़ाईवाली जगह तो अंकुश और केशव को नीचे उतर कार के साथ-साथ पैदल चढ़ना पड़ता। कार बहुत जगह रुकी भी, लेकिन अंकुश ने कैसे-न-कैसे उसे चला दिया।

अंकुश और केशव की सेहत धीरे-धीरे खराब हो रही थी। अधिक ऊँचाईवाले इस क्षेत्र में ऑक्सीजन की कमी, हवा में वाष्प (moisture) की कमी और शून्य से नीचे तापमान की वजह से बहुत से सैलानियों की जान हर साल जाती है। अंकुश और केशव दोनों को चक्कर, उलटी और सिरदर्द हो रहा था। मैं उनकी सेहत के लिए चिंतित था।

## वीर उसको जानिए

जब एक पहाड़ी दर्रे के बाद ढलान का इलाका आता तो मैं लंबे समय तक दोनों को सोने देता और खुद गाड़ी चलाता रहता। हमारी सुरक्षा के लिए उस दिन शाम ढलने से पहले हमारा लेह पहुँच जाना आवश्यक था। लेह में मेरा एक मित्र फौज में अधिकारी था और लेह में सुविधाएँ भी उपलब्ध थीं।

अगले दो पहाड़ी दर्रे पर हमारी गाड़ी चढ़ाई में कई बार रुकी, लेकिन उनको पार कर हम पांग नामक जगह पहुँचे। ऊँचाई पर ऊँची चोटियों के बीच पांग एक बंजारे तिब्बतियों का समूह था, जिसमें कुछ तंबूनुमा घर और दुकानें थीं। इसमें कुछ खाने की चीजें उपलब्ध थीं। हमने गरम मैगी नूडल्स खाईं और कुछ सूप पिया।

इस ऊँचे स्थान पर रात गुजारते समय बहुत से सैलानियों की जान हर साल जाती थी। इसीलिए मैंने दोपहर में बर्फीले नालों से भरे बरलाच्ला दर्रे को पार करने का निर्णय लिया था, ताकि हमें इस दर्रे पर रुकना न पड़े। हमारे पास लेह पहुँचने के लिए पर्याप्त समय था। कुछ देर रुककर हम फिर चल पड़े। आगे 40 किलोमीटर लंबा खुला मैदान था। इतनी ऊँचाई पर यह इतना बड़ा और दूर पहाड़ियों से घिरा मैदान बहुत ही सुंदर लग रहा था। हमने इसके बहुत से फोटो भी खींचे।

गाड़ी को तेज भगाते हुए हमने शीघ्र ही वह मैदान पार कर लिया और दुनिया के दूसरे सबसे बड़े पहाड़ी दर्रे तान्गलान्गला को चढ़ने लगे। यह लगभग 17,500 फीट की ऊँचाई पर था। अब लेह और हमारे बीच मात्र यह पहाड़ी दर्रा था। एक जगह चढ़ाई में हमारी गाड़ी रुक गई और फिर अंकुश की लगातार कोशिशों के बाद भी गाड़ी ने चलने का नाम नहीं लिया। शाम होने को थी।

हमारे सुरक्षित रहने के लिए हमारा लेह पहुँचना आवश्यक था।

अंकुश ने मायूस होकर कहा, 'सर, मुझे नहीं लगता कि हम में से कोई भी जिंदा बचकर पहुँचेगा।'

## वीर उसको जानिए

उस समय तो हमने कुछ नहीं कहा, लेकिन बाद में उसकी इसी बात को याद कर हम बहुत बार खूब हँसे। कुछ और प्रयास के बाद हम गाड़ी को चला सके और अंकुश व केशव दौड़कर चलती गाड़ी में कूद गए। हमने इस दर्रे को भी पार किया और लेह घाटी में उतरने लगे।

जैसे ही हम लेह शहर के पास पहुँचे तो मैंने एक बोर्ड देखा, जो दाईं ओर इशारा कर रहा था और जिस पर लिखा था—‘खार्दुंग ला 40 किलोमीटर’। 18,340 फीट की ऊँचाई पर यही वह दुनिया का सबसे ऊँचा पहाड़ी दर्रा था, जहाँ पहुँचने के उद्देश्य से हम निकले थे और अब यह हमसे मात्र 40 किलोमीटर दूर था। मैंने दाहिने देखा, जो एक ऊँची विशालकाय पहाड़ी थी, जो मानो मुझे चुनौती दे बुला रही हो।

हमने अपने मित्र के घर पहुँचकर विश्राम किया। एक दिन वहाँ रुककर हमने अपनी गाड़ी की मरम्मत की और उसे आगे के सफर के लिए तैयार किया।

अगले दिन हम सुबह-सुबह उस पहाड़ी दर्रे पर चढ़ने के लिए निकल पड़े। शुरू से ही चढ़ाई बहुत तीव्र थी। गाड़ी की गति धीमी होती गई और एक हद के बाद गाड़ी ने चढ़ने से इनकार कर दिया। अंकुश व केशव नीचे उतरे और गाड़ी के साथ चलने लगे। सड़क पर बर्फ से पिघल थोड़ा-थोड़ा पानी बह रहा था। यह थोड़ा पानी बहुत खतरनाक था, क्योंकि कई जगह यह पानी छाँव पड़ने से जम जाता है और इस बर्फ की पतली परत पर गाड़ी फिसल जाती है तथा खाई में जा गिरती है। अतः मैं बहुत ध्यान से गाड़ी चला रहा था।

फिर गाड़ी ने बिलकुल आगे जाने से इनकार कर दिया। इस पर मैंने और अंकुश ने एक तरीका निकाला। मैं पूरी स्पीड देता और अंकुश गाड़ी को तुरंत गियर में डाल देता। इससे गाड़ी कुछ और फीट चढ़ जाती। हम चोटी से कुल 3-4 किलोमीटर ही रह गए थे और पूरी कोशिश कर रहे थे। इतनी ऊँचाई पर अधिक शारीरिक ताकत लगाना मौत को आमंत्रित करने के समान

## वीर उसको जानिए

होता है।

मुझे अपनी समझ को ठीक इस्तेमाल करना था, वरना हम तीनों की जान को खतरा हो सकता था। केशव के सिर में बहुत बुरा दर्द हो रहा था और वह रास्ते से एक बर्फ का ढेला उठा उसे अपने सिर पर लगा चल रहा था। एक समय के बाद मेरी आँखों के आगे अँधेरा छाने लगा।

हम चोटी से शायद 1 या 2 किलोमीटर ही रह गए थे, लेकिन हालात सीमा को पार कर चुके थे। हमने अपने असंभव लक्ष्य को लगभग पा ही लिया था। इतनी दूर इतनी पुरानी टूटी-फूटी गाड़ी को लेकर शायद ही कोई आया हो कभी। यहाँ कोई हमें बचाने आने वाला नहीं था। तीनों की खराब हालत को देख मैंने वहाँ से वापस मुड़ने का फैसला किया। मैं नहीं चाहता था कि हम में से कोई भी जान गँवाए।

यह सफर मेरे जीवन के सबसे यादगार सफर के रूप में हमेशा स्मरणीय रहेगा। यह सफर खास इसलिए था, क्योंकि हम इतने कम साधनों के रहते भी इस सफर को पूरा कर सके। हमने इतनी जानलेवा परिस्थितियों का सामना भी किया, इतने दुनिया के सुंदरतम प्राकृतिक दृश्य देखे और इतने सीखने के अनुभव प्राप्त किए।

**‘जीवन में आप सबसे अधिक तब सीखते हैं, जब आप कठिनतम परिस्थितियों का सामना कर रहे हों।’**

हाँ, मन में इसमें कहीं संकोच नहीं कि चोटी के ऊपर तक न पहुँचने का दुःख भी कहीं था, लेकिन दिल में प्रसन्नता और संतुष्टि अधिक थी।

□

## वीर उसको जानिए

अब तक :-

‘जीवन में जब भी निर्णय लेना हो तो सबसे कठिन विकल्प को चुनो। ऐसा करके ही तुम जीवन में बड़ी उपलब्धियाँ हासिल कर सकोगे।’

‘यदि आपका स्वयं में विश्वास दृढ़ हो तो यह आपकी सबसे बड़ी शक्ति है।’

‘जीवन में जब भी आपके सामने कुछ विकल्प हों तो आप सबसे कठिन विकल्प चुनें। सबसे कठिन विकल्प को चुनकर ही आप अपने जीवन को सार्थक कर सकते हैं।’

‘मैं कैसे कर पाऊँगा, यह मुझे नहीं पता था; किंतु मैं कर पाऊँगा, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास था।’

‘कर्मण्येवाधिकारस्ते’...कर्म ही अधिकार है

‘जीवन में जब भी कुछ सीखने व अनुभव करने का अवसर मिले तो ऐसे अवसर का सदुपयोग करो और उसे व्यर्थ न जाने दो।’

‘जीवन में आपको अपनी इच्छा के अनुसार परिस्थितियाँ कभी नहीं मिलेंगी। किंतु आपको विश्वास होना चाहिए कि परिस्थितियाँ चाहे कैसी भी हों, आप अवश्य सफल होंगे।’

‘कठिन उद्देश्यों को पाने के लिए कठिन राह चुननी पड़ती है, कठिन निर्णय लेने पड़ते हैं।’

‘जीवन में आप सबसे अधिक तब सीखते हैं, जब आप कठिनतम परिस्थितियों का सामना कर रहे हों।’

## अंतिम विजय : एक खोज

वर्ष 2002 के जुलाई माह में यह सफर तय कर मैंने अपना कार्य आगे बढ़ाया। मैंने कुछ व्यक्तिगत उपलब्धियाँ हासिल की थीं और कुछ मैं करना चाहता था; लेकिन मेरा उद्देश्य मात्र मेरी व्यक्तिगत उपलब्धियों तक सीमित नहीं था।

मैंने जीवन में इतने कष्ट उठाए थे। जो कठिनाइयाँ मेरे जीवन में आईं, उन्हें मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ। ये कठिनाइयाँ मुझे ईश्वर द्वारा दिया गया एक अवसर था, जिसमें मैं एक सफल और सकारात्मक जीवन जी कर सबके सामने एक उदाहरण बन सकता था। जब नवीन इतने कष्ट उठाते हुए भी जीवन का पूर्ण आनंद ले सकता है और जीवन को सकारात्मक रूप से जी सकता है तो अवश्य अन्य लोग भी ऐसा कर सकते हैं।

**‘जीवन में कठिनाइयों और चुनौतियों को अपना सौभाग्य समझो। कठिनाइयाँ और चुनौतियाँ तुम्हारे लिए स्वयं की योग्यता को प्रमाणित करने का अवसर होती हैं।’**

मैं समाज में एक सकारात्मक योगदान देना चाहता था। मैंने बचपन से अपने नानाजी को समाज-सुधार और ग्राम-सुधार के लिए काम करते देखा था। मेरा यह विश्वास था कि मैं एक दिन समाज के लिए एक सकारात्मक योगदान कर पाऊँगा।

मेरा यह विश्वास था कि अगर समाज में कुछ सकारात्मक परिवर्तन लाना है तो यह परिवर्तन आनेवाली पीढ़ी ही ला सकती है। अतः मेरी इच्छा थी कि

## वीर उसको जानिए

मैं बच्चों और विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए कार्य करूँ।

जीवन में इतनी बड़ी चोट लगने के बाद और लगभग संपूर्ण विकलांगता के बाद भी मैं जीवन में वापस आया था और मैंने शिक्षा व साहसिक खेलों के क्षेत्र में उपलब्धियाँ प्राप्त की थीं। मुझे बहुत से विद्यालयों में एक प्रेरणात्मक वक्ता के रूप में बुलाया जाने लगा। मैं स्वयं भी गाँव के छोटे विद्यालयों में जाता और बच्चों को पढ़ाता। धीरे-धीरे मेरा कार्य जाना जाने लगा और कुछ समाचार-पत्रों ने मेरी कहानी पर लेख आदि भी लिखे। कुछ टी.वी. समाचार चैनलों ने भी मेरा साक्षात्कार प्रसारित किया।

मैंने अपने जीवन में एक सिद्धांत सीखा और अपनाया है, जिसे मैं 'असीमित योग्यता' का सिद्धांत कहता हूँ। मेरा मानना है कि हममें असीमित योग्यता होती है। हमारी योग्यता की कमी हमें कुछ करने से नहीं रोक सकती। हमारी मानसिकता हमें रोक सकती है। यदि हम यह सोचते हैं कि हम किसी कार्य को नहीं कर पाएँगे तो अवश्य ही हम विफल होंगे और यदि हमें विश्वास है कि हम किसी कार्य को करने में समर्थ हैं तो अवश्य सफल होंगे।

मुझे चोट लगे आठ वर्ष हो चुके थे। अब समय आ गया था कि मैं कुछ बड़ा लक्ष्य हासिल करूँ, जो मात्र मेरी व्यक्तिगत उपलब्धि न हो और जिससे मेरा असीमित योग्यता का सिद्धांत भी प्रमाणित हो और मेरे समाज-सेवा के कार्य को आगे बढ़ाने में भी सहायता मिले। मैं अपने समक्ष एक असंभव लक्ष्य रखना चाहता था। मैंने सोचा कि मैं नई दिल्ली से लेकर दुनिया के सबसे ऊँचे पहाड़ी दर्रे खर्दुंग ला तक बिना रुके गाड़ी चलाऊँगा। यह लक्ष्य किसी को भी असंभव लगेगा, ऐसा मुझे ज्ञात था। लेकिन मुझे विश्वास था कि मैं इसे पा सकता हूँ और इसके द्वारा अपनी असीमित योग्यता के सिद्धांत को प्रमाणित कर सकता हूँ।

इस लक्ष्य को पाने के लिए मुझे एक नई गाड़ी की आवश्यकता होगी। मेरी पुरानी गाड़ी तो बहुत खराब हो चुकी थी और अब शहर में चलाने लायक हालत में भी नहीं थी। किंतु अब बिना गियर की गाड़ी उचित नहीं थी। एक

## वीर उसको जानिए

तो उस कंपनी ने बिना गियर की गाड़ी बनाना बंद कर दिया था और बाकी बिना गियर की गाड़ियाँ बहुत महँगी थीं और दूसरे, बिना गियर की गाड़ी उन ऊँचे पहाड़ी दर्रों पर चढ़ने के लिए उचित भी नहीं थी।

मेरी जैसी चोटवाले व्यक्ति के लिए गियर की गाड़ी चलाना असंभव था। गियरवाली गाड़ी में क्लच, ब्रेक, स्पीड, गियर एवं स्टीयरिंग के पाँच यंत्र मुझे सँभालने थे और इन पाँच यंत्रों के सँभालने के लिए मेरे पास कुल दो हाथ थे। सामान्य व्यक्ति तो अपने हाथ और पैरों का प्रयोग कर गाड़ी चला सकता है, लेकिन मेरे लिए तो यह असंभव था। भारत तो क्या अमेरिका में भी ऐसा कोई यंत्र उपलब्ध नहीं था, जिसकी सहायता से मेरे जितनी अपंगता वाला व्यक्ति गियरवाली गाड़ी चला सके। किंतु यदि मुझे आगे बढ़ना था तो मेरे पास और कोई विकल्प नहीं था। मुझे किसी तरह गियर वाली गाड़ी ही चलानी थी।

**‘मैं कैसे कर पाऊँगा, यह मुझे नहीं पता था; किंतु मैं अवश्य कर पाऊँगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास था।’**

मैंने एक गियरवाली गाड़ी खरीद ली। मुझे विश्वास था कि जब मैं कार्य करने लगूँगा तो कुछ-न-कुछ तरीका निकल ही आएगा। छह महीनों के अथक प्रयास के बाद मैं ऐसा यंत्र तैयार कर सका, जिससे मैं गियरवाली गाड़ी को चला सकूँ। शुरू में यह कठिन अवश्य था, लेकिन मुझे विश्वास था कि आनेवाले समय में मैं इसमें सुधार कर इसे और बेहतर बना पाऊँगा। मैंने गियरवाली गाड़ी चलाने का अभ्यास शुरू कर दिया।

□



## असंभव से भी असंभव अभियान

मेरी इच्छा थी कि मैं कोई इतना असंभव दिखनेवाला साहसिक अभियान सफलतापूर्वक करूँ, जिससे मैं अपने 'असीमित योग्यता' के सिद्धांत को प्रमाणित कर सकूँ और उस अभियान की सफलता के द्वारा बच्चों के लिए सामाजिक कार्य के लिए समर्थन भी जुटा सकूँ।

मैंने निर्णय लिया कि मैं नई दिल्ली से लेकर दुनिया के सबसे ऊँचे पहाड़ी दर्रे 'खर्दुंग ला' तक बिना रुके कम-से-कम समय में गाड़ी पहुँचाऊँगा। यह एक विश्व कीर्तिमान होगा। ऐसा कर पाना हर किसी को असंभव ही लगेगा, लेकिन मुझे पूर्ण विश्वास था कि मैं ऐसा सफलतापूर्वक कर सकता हूँ।

मैंने जब राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय रिकॉर्ड रखनेवाली संस्था 'लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' से संपर्क किया तो उन्होंने मुझसे कहा कि यदि मैं अपने कीर्तिमान बनाने में दुनिया के सबसे ऊँचे पहाड़ी दर्रे का नाम लाना चाहता हूँ तो मुझे खर्दुंग ला से भी ऊँचे पहाड़ी दर्रे मार्सिमिक ला तक जाना पड़ेगा।

जब मैंने 18,632 फीट ऊँचे मार्सिमिक दर्रे के बारे में जानने का प्रयास किया तो मुझे पता चला कि यह पहाड़ी दर्रा खर्दुंग से सौ गुना दुर्गम एवं कठिन है। बहुत से साहसिक खिलाड़ी जब बड़ी-बड़ी गाड़ियों को ले जाकर वहाँ लेह में तैयारी के बाद इस पहाड़ी दर्रे पर चढ़ने का प्रयास करते हैं तो भी चढ़ नहीं पाते; क्योंकि इस पहाड़ी दर्रे पर सड़क ही नहीं है और कच्चे रास्तों तथा बिना रास्तों के ही गाड़ी को चढ़ाना पड़ता है। यह पहाड़ी दर्रा विश्व के सबसे दुर्गम पहाड़ी दर्रे के रूप में विख्यात था। मार्सिमिक का तिब्बती भाषा में अर्थ

## वीर उसको जानिए

होता है—‘मौत का व्यूह’।

मुझे इस पहाड़ी दर्रे तक दिल्ली से बिना रुके जाना था। यह तो मेरे लिए भी असंभव लक्ष्य हो गया था। मेरे पास तो एक छोटी गाड़ी थी। उसको लेकर मैं ऐसे कठिन सफर को कैसे तय करूँगा, लेकिन मेरे पास यही अवसर था। मैं इस अवसर को जाने नहीं दे सकता था। मैंने लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के कार्यालय को फोन कर सूचित किया कि मैं इस सफर को तय करूँगा और ऐसा विश्व कीर्तिमान बनाऊँगा, जिसे कोई कभी तोड़ न सके। मैंने इसी विश्वास पर चलने का निर्णय लिया था कि मैं कुछ-न-कुछ तरीका निकाल ही लूँगा।

मैंने कुछ टी.वी. चैनलों से संपर्क किया और मुझे कुछ से यह आश्वासन भी मिल गया कि यदि मैं ऐसा अभियान आरंभ करता हूँ तो वे इस अभियान को अवश्य टी.वी. पर दिखाएँगे।

उनसे यह आश्वासन मिलने के बाद मेरे लिए विभिन्न गाड़ी निर्माता कंपनियों से संपर्क करना आसान हो गया, क्योंकि मेरी साहसिक यात्रा विभिन्न टी.वी. चैनलों पर दिखाई जाने वाली थी, अतः इस बात की अच्छी संभावना थी कि कोई गाड़ी निर्माता कंपनी अपने प्रचार हेतु मुझे अपनी गाड़ी उपलब्ध करवा दे। एक मजबूत गाड़ी मेरे साहसिक अभियान की सफलता के लिए आवश्यक थी।

मैंने अपनी साहसिक यात्रा की इंटरनेट पर वेबसाइट बनाई और उसकी रिपोर्ट तैयार कर कई कंपनियों को भेजी। मैं सुबह से लेकर रात तक रिपोर्ट बनाने और भेजने में व्यस्त रहता। अंततः मेरी मेहनत रंग लाई। हमारे देश की सबसे बड़ी कंपनियों में से एक ‘टाटा मोटर्स’ अपनी गाड़ी टाटा सफारी मुझे उपलब्ध कराने को तैयार हो गई। और भी कुछ कंपनियाँ पेट्रोल व अन्य खर्चे उठाने के लिए तैयार हो गईं। अब मेरा मिशन जोर पकड़ने लगा। देश-विदेश में मेरे मिशन के चर्चे होने लगे। लोग यह अनुमान लगाते कि क्या नवीन ऐसा असंभव मिशन कर पाएगा ?

मेरे इस विश्व कीर्तिमान स्थापित करनेवाले मिशन के चर्चे विभिन्न

## वीर उसको जानिए

समाचार पत्रों और टी.वी. चैनलों में होने लगे। यह देख बहुत से लोग मेरे मिशन से जुड़ना चाहते थे और मेरे साथ जाना भी चाहते थे। लेकिन मेरा विश्वास अपने पुराने साथियों अंकुश और केशव पर ही था। हम तीनों ने मिलकर इस मिशन की तैयारी शुरू कर दी। अच्छी तैयारी ही मिशन की सफलता को सुनिश्चित कर सकती थी।

यह एक असंभव मिशन था और इसमें मेरी योग्यताओं की हर तरह से परीक्षा होने वाली थी। इस मिशन के सफल होने की बहुत ही कम संभावना थी; किंतु मैं बिना परवाह किए अपने मिशन की तैयारी में लगा हुआ था। मेरे लिए यही वह अवसर था, जब मैं अपने सिद्धांत व अपनी योग्यता को प्रमाणित कर सकता था और अपने भविष्य के सामाजिक कल्याण हेतु कार्य के लिए समर्थन जुटा सकता था। अतः मैं बिना किसी हिचक के अपने कार्य में लगा हुआ था।

इस असंभव मिशन में आनेवाली चुनौतियाँ कुछ इस प्रकार थीं—

1. यह दुनिया का सबसे दुर्गम माना जानेवाला रास्ता था। बर्फ और पानी से भरे इस टूटे-फूटे रास्ते में गाड़ी में कभी भी कोई समस्या आ सकती थी और ऐसा होने से हमारा मिशन खतरे में पड़ सकता था। इन दुर्गम रास्तों पर दुर्घटना होने की संभावना भी अधिक थी।
2. बर्फबारी और भूस्खलन के इस रास्ते में बर्फ गिरने या पहाड़ी के सरकने अथवा धँसने से रास्ते अकसर बंद हो जाते हैं और फिर महीनों तक बंद रह सकते हैं।
3. दिल्ली में 0 से 40 डिग्री ऊपर तापमान से मार्सिमिक में शून्य से 40 डिग्री नीचे तापमान तक जाने में किसी की भी सेहत कभी भी बिगड़ सकती थी। छोटी सी लापरवाही जानलेवा हो सकती थी। इस रास्ते का सफर तय करते हजारों लोग अब तक अपनी जान गँवा चुके थे।

### वीर उसको जानिए

4. जहाँ पहाड़ों की ऊँचाइयाँ 15,000 फीट से ऊँची होती हैं, वहाँ हवा का दबाव कम होता है और साँस लेने के लिए ऑक्सीजन भी कम होती है। कम समय में अधिक ऊँचाइयों तक जाने में सिर दर्द, चक्कर, उलटी, नाक से खून बहना और फेफड़ों में पानी घुस जाने जैसी स्वास्थ्य समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं और ये जानलेवा हो सकती हैं। हमें तो बिना रुके 18,632 फीट की ऊँचाई तक जाना था।
5. मुझे दो दिन और दो रात तक दुनिया के कठिनतम रास्तों पर बिना रुके गाड़ी चलाकर वहाँ तक पहुँचना था, जहाँ पहुँचने के लिए अन्य लोगों को दस दिन का समय लगा था और सिर्फ दो-चार गिने-चुने लोग ही वहाँ जा पाए थे। क्या मैं ऐसा असंभव कार्य कर पाऊँगा?
6. मार्सिमिक की 18,632 फीट की ऊँचाई तक पहुँचने से पहले मुझे दुनिया के सात सबसे ऊँचे पहाड़ी दरों को बिना रुके पार करना था।

□

## एक असंभव मिशन

मैंने एक असंभव मिशन को अपना उद्देश्य बना लिया था। यह एक ऐसा मिशन था, जिसे पहले न किसी ने किया था और न भविष्य में कोई कर पाएगा। यह असंभव मिशन अब मेरी पहचान बन गया था। मेरे जीवन का आगे का कार्य मात्र इसकी सफलता पर निर्भर था। यदि मैं इसमें सफल होऊँगा तो जीवन के सभी कार्यों में सफल होऊँगा, ऐसा मेरा विश्वास था। भय, संकोच और शंका को मैंने अपने दिल से निकाल दिया था।

मेरा मिशन प्रसिद्ध होने लगा था। कंपनियाँ, समाचार-पत्र, टी.वी. चैनल और बहुत से लोग मेरे मिशन से जुड़ गए थे। जगह-जगह विद्यालयों में मेरे मिशन की सफलता के लिए और मेरे सकुशल रहने के लिए प्रार्थनाएँ की जातीं।

यह मात्र एक साहसिक मिशन ही नहीं था, अपितु यह बहुत से लोगों के लिए एक आशा की किरण और प्रेरणा का स्रोत बन गया था। लोगों में यह आशा थी कि यदि नवीन इतनी चोट लगने के बाद और ऐसी अवस्था में भी इतनी ऊँचाइयों तक पहुँच सकता है तो हम भी अपने जीवन में जो उद्देश्य चुन लें, उसे अवश्य पा सकते हैं। मेरे मिशन का सफल होना अति आवश्यक था और यह मेरी जिम्मेदारी थी कि मैं न सिर्फ अपने लिए बल्कि सबकी आशाओं के लिए सफल होऊँ।

मैंने अपने मिशन का एक उद्देश्य और भी रखा; क्योंकि मेरा मिशन बहुत प्रचारित हो रहा था तो मैंने उस प्रचार की सहायता से मानसिक रूप से

### वीर उसको जानिए

विकलांग बच्चों की सहायता कर रही एक संस्था के लिए धन जुटाने की व्यवस्था की, ताकि उन जरूरतमंद बच्चों तक सहायता पहुँच सके।

मुझे 'टाटा मोटर्स' से गाड़ी मात्र एक सप्ताह पहले मिली। समय बहुत कम था और गाड़ी को ऐसे मिशन के लिए तैयार करना था। मैंने, अंकुश एवं मेरे मित्र अजय ने मिलकर तीन दिन में दिन-रात काम कर गाड़ी को तैयार किया और हाथ से चलाने के लिए आवश्यक परिवर्तन किए। इतने कठिन मिशन के आरंभ होने से पहले यह आवश्यक था कि मैं अधिक-से-अधिक विश्राम कर लूँ। किंतु विश्राम का तनिक भी समय नहीं था। हमें या तो गाड़ी की तैयारी में लगे रहना पड़ता या किसी समारोह के आयोजन में जाना पड़ता।

□

## मिशन मारिंसिमिक की शुरुआत

9 सितंबर, 2004

दिन के समय नई दिल्ली के इंडिया गेट पर आयोजित एक समारोह में देश के वीर अमर शहीद जवानों को श्रद्धांजलि से मेरे मिशन की औपचारिक शुरुआत हुई। यह मात्र एक औपचारिक शुरुआत थी। समय के सदुपयोग के हिसाब से वास्तविक शुरुआत तो अगले दिन सुबह 3 बजे होनी थी।

दिन के समारोह के बाद अंकुश और केशव गाड़ी की तैयारी व सामान लादने में जुट गए और मैं सात-आठ घंटे सो लिया। अब मुझे लगातार बिना रुके और सोए दो दिन व दो रात गाड़ी चलानी थी।

रात के 12 बजे उठकर मैं तैयार होने लगा। लगभग रात के 2 बजे हम घर से निकले और इंडिया गेट की ओर चल पड़े। रात के उस समय हमें अलविदा कहने को मात्र मेरे और अंकुश के माता-पिता ही उपस्थित थे। उनसे आशीर्वाद लेकर हम निकल पड़े थे। गाड़ी में मैं, अंकुश, केशव और टाटा सफारी कंपनी का एक मेकैनिक विनोद था।

2.45 बजे के आस-पास हम इंडिया गेट पहुँचे। रात के अँधेरे में जलते बल्बों की रोशनी में इंडिया गेट और उसके समक्ष कुछ किलोमीटर दूर राष्ट्रपति भवन बहुत सुंदर लग रहा था। इंडिया गेट पर NDTV चैनल के पत्रकार रॉबर्ट और कैमरामैन विनोद हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्हें हमारे साथ सफर करना था और न सिर्फ हमारी यात्रा को कैमरे में उतारना था, बल्कि यह प्रमाणित भी करना था कि हमने यात्रा सफलतापूर्वक एवं नियमानुसार पूरी की है। उनके

## वीर उसको जानिए

प्रमाणित करने पर ही हमारी यात्रा को विश्व कीर्तिमान (world record) का दर्जा मिलना था।

कुछ समय रॉबर्ट और कैमरामैन विनोद ने हमारी गाड़ी के शॉट अपने कैमरे में उतारे और फिर ठीक 3 बजे हम अपने असंभव सफर पर चल पड़े। रॉबर्ट ने लॉग बुक में लिखा—‘इंडिया गेट, सुबह के 3 बजे, नई दिल्ली, सितंबर 10, 2004।’ सुबह के अँधेरे में मैं अपने गंतव्य पर निकल पड़ा था।

यह परीक्षा की घड़ी थी और मुझे अपने आप को अधिक-से-अधिक शांत रखना था। उत्तेजित होने से हमारी बहुत सी योग्यता और ऊर्जा व्यर्थ चली जाती है। अपने आपको शांत और अपने ध्यान को अपने लक्ष्य पर केंद्रित रखना आवश्यक होता है। मेरा ध्यान हार-जीत की संभावना पर नहीं था। मेरा ध्यान मात्र मेरे सामने के रास्ते और मेरे काम पर था।

**‘अपने लक्ष्य को पाने के लिए अपने आपको शांत रखना और अपने ध्यान को लक्ष्य अथवा मार्ग पर केंद्रित रखना अति आवश्यक है।’**

सुबह के अँधेरे में दिल्ली की सड़कों से होते हुए कुछ ही समय में मैंने चंडीगढ़ की ओर जानेवाले राष्ट्रीय राजमार्ग को पकड़ लिया। सुबह के इस समय सड़क लगभग खाली और सुनसान ही थी। बीच-बीच में कोई इक्का-दुक्की साइकिल या ट्रैक्टर ही कहीं सड़क पर दिखाई देते। मेरे इतने सुबह निकलने का एक कारण यह भी था कि मैदानी क्षेत्र में जहाँ यातायात अधिक होने के कारण मेरी गति धीमी हो सकती थी, वहाँ मैं इस समय शीघ्र ही पार निकल जाऊँगा।

गाड़ी की गति जितनी अधिक हो, आपको उतना ही अधिक ध्यान रखना पड़ता है और इससे आप शीघ्र थक जाते हैं। मुझे तो दो दिन व दो रात से भी कुछ अधिक लगातार गाड़ी चलानी थी। अतः मैं ध्यानपूर्वक अपनी गति को एक नियंत्रित स्तर पर बनाए हुए था।



## वीर उसको जानिए

बीच-बीच में मैं पूर्व दिशा की ओर देख सुबह के होने की रोशनी को पहचानने की कोशिश करता और अपनी गरदन को दाएँ व बाएँ भी हिलाता, ताकि मेरी गरदन में एक ही परिस्थिति में रहने के कारण खिंचाव या अकड़न न आ जाए। कुछ देर में धीरे-धीरे सुबह की रोशनी हुई, जिससे मेरे गाड़ी चलाने की गति और सरलता बढ़ गई। सुबह होते-होते हम चंडीगढ़ पहुँच गए। वहाँ से पहाड़ों की चढ़ाई शुरू हुई और अगले 300 किलोमीटर तक इस चढ़ाई को लगातार चढ़ मुझे पहले पहाड़ी दर्रे रोहतांग तक पहुँचना था।

हम मात्र गाड़ी में पेट्रोल डलवाने के लिए ही रुक रहे थे और मैं लगातार गाड़ी चलाए जा रहा था। मेरे अभियान के साथ बहुत से लोगों की आशाएँ जुड़ी हुई थीं। मैंने भविष्य के लिए जो सामाजिक व प्रेरणात्मक कार्य करने का विचार बनाया हुआ था, उस कार्य की सफलता के लिए इस अभियान का सफल होना अत्यंत आवश्यक था। किंतु अपने मन में मैंने विफलता के भय को एक पल के लिए भी आने नहीं दिया।

**‘विफलता का भय विफलता का मुख्य कारण है। कभी इस भय को अपने समीप न आने दें।’**

पूरे दिन लगातार गाड़ी चला, शाम होते-होते, मैं मनाली पहुँच गया। वहाँ एक सैन्य शिविर के बाहर सड़क पर बहुत से सिपाही अपने अधिकारी कर्नल रायजादा के साथ मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने मेरे प्रोत्साहन के लिए ‘भारत माता की जय’ के नारे लगाए और हमें कुछ खाने-पीने का सामान दिया। वहाँ हमारे दल में एक फौजी सूबेदार मोग्लिस्वरण भी जुड़ गया; क्योंकि मेरा यह साहसी अभियान सेना द्वारा समर्थित था और मोग्लिस्वरण को हमारी सहायता के लिए नियुक्त किया गया था।

‘भारत माता की जय’ के नारों के बीच शाम होते-होते हम वहाँ से चल पड़े। वहाँ से रोहतांग दर्रे की दुर्गम चढ़ाई प्रारंभ हुई। सड़क बहुत टूटी हुई थी और उस पर जगह-जगह पानी बह रहा था। अमावस की रात का अँधेरा भी हो गया। वह रास्ता इतना दुर्गम था कि इस पर सैलानी दिन में सफर करने से

## वीर उसको जानिए

भी संकोच करते थे और हम इस चढ़ाई को रात में चढ़ रहे थे।

रोहतांग दर्रे के ऊपर 15,000 फीट ऊँचाई तक पहुँचते-पहुँचते बादलों ने हमें घेर लिया। अमावस की रात थी। एक इंच का रास्ता भी दिखाई नहीं दे रहा था। धुंध और बादल के बीच हमारी गाड़ी की रोशनी सामने धुंध से टकराकर वहीं रह जा रही थी।

अत्यंत सावधानीपूर्वक गाड़ी चलाता मैं रात के 9 बजे रोहतांग दर्रे तक पहुँचा और आगे बढ़ गया। बीच-बीच में रॉबर्ट और विनोद सफर को वर्णन के साथ अपने कैमरे में उतारे जा रहे थे। रॉबर्ट कॉपी में हमारे हर जगह पहुँचने का समय लिखे जा रहा था।

बादलों से निकल हम लाहौल-स्पीति की घाटी में उतरने लगे। आधी रात के समय रोहतांग से उतर और नीचे बहती नदी को पार कर हम खोक्सर गाँव के समीप पहुँचे। आधी रात के समय भी सैनिकों का एक दल वहाँ हमारे प्रोत्साहन के लिए खोक्सर के सैनिक शिविर के पास सड़क पर खड़ा था। उन सबने 'भारत माता की जय' के नारे लगाकर मेरा प्रोत्साहन किया। वहाँ हमने पीने के गरम पानी की बोतलें लीं। हम इतनी जल्दी इतनी ऊँचाइयों तक जा रहे थे, इसलिए हमारे लिए आवश्यक था कि हम गरम पानी पीते रहें।

वहाँ से आगे निकलकर हमने लाहौल स्पीति की घाटी को पार किया और इस घाटी के अंतिम गाँव दारचा को पार कर मैं एक छोटे से सैनिक शिविर पट्सेओ पहुँचा। वहाँ हमने अपनी गाड़ी में पेट्रोल डलवाया। सुबह के 3 बज रहे थे। बिना विश्राम किए गाड़ी चलाते अब मुझे 24 घंटे से ऊपर हो चुके थे। मेरे आगे 16,500 फीट की ऊँचाई पर अगला जटिल पहाड़ी दर्रा बरलाचला था। मैंने इस पहाड़ी दर्रे पर चढ़ना प्रारंभ किया। सुबह होते-होते उस पहाड़ी दर्रे को पार कर मैं सरचू के सैनिक शिविर पहुँच गया।

सुबह हो चुकी थी। यहाँ भी सैनिक हमारी प्रतीक्षा में थे। खाना भी तैयार था, किंतु हमारे पास समय नहीं था। एक-एक मिनट जरूरी था। हम सिर्फ गरम पानी की बोतलें लेकर आगे बढ़ गए। घाटी और नाले को पार कर हम

## वीर उसको जानिए

अगले पहाड़ी दर्रे 'नकीला' पर चढ़ने लगे। यह दुनिया की जटिलतम खड़ी चढ़ाई थी। भयंकर चढ़ाई और घुमावदार मोड़ों पर लगातार बहुत देर तक गाड़ी चला मैं इस पहाड़ी दर्रे के ऊपर भी पहुँच गया।

तीन पहाड़ी दर्रे पार हो चुके थे, लेकिन अभी मेरे व मेरे लक्ष्य के बीच चार पहाड़ी दर्रे और खड़े थे। मैं लगभग 30 घंटे गाड़ी चला चुका था। लक्ष्य असंभव होने लगा था। आनेवाला रास्ता बीते हुए रास्ते से भी जटिल था। मैं बिना कोई चिंता किए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता जा रहा था।

देखते-ही-देखते मैंने अगला पहाड़ी दर्रा 'लाच्छानाला' भी पार कर लिया। और एक भीड़ी सँकरी सी घाटी में से होता हुआ अगले सैन्य शिविर 'पांग' पहुँच गया। शाम होने वाली थी। बिना खाना खाए दो दिन हो चुके थे। वहाँ तुरंत हमने कुछ खाने के लिए लिया। मेरे पास तो खाने का समय भी नहीं था, क्योंकि मुझे गाड़ी में पेट्रोल डलवाना था। मैंने तुरंत गाड़ी में पेट्रोल डलवाया। इतने में मेरे साथ सफर कर रहे सब सदस्यों ने जल्दी-जल्दी खाना खा लिया। मैंने भी कुछ निवाले खा लिये और हम आगे बढ़ गए।

नदी को पार कर और कुछ चढ़ाई चढ़ हम अच्छी गति में मोरे के मैदान को पार करने लगे। इतनी ऊँचाई पर चारों ओर पहाड़ियों से घिरे ये मैदान बहुत ही सुंदर लगते हैं। इन मैदानों को पार कर मैं दुनिया के दूसरे नंबर के सबसे ऊँचे पहाड़ी दर्रे 'तान्लानाला' पर चढ़ने लगा। अँधेरा होने से पहले मैं उस पहाड़ी दर्रे के ऊपर 17,500 फीट की ऊँचाई पर पहुँच गया। वहाँ हमारे साथ सफर कर रहे टाटा सफारी के मेकैनिक विनोद की तबीयत खराब हो गई और उसके सीने में दर्द होने लगा। अँधेरे में पहाड़ी दर्रे से उतरकर हम एक सैनिक शिविर में पहुँचे। वहाँ चिकित्सा उपलब्ध थी।

वहाँ डॉक्टर को दिखा विनोद को साथ लेकर हम आगे बढ़ सकते थे, किंतु मैं नहीं चाहता था कि किसी की जान को खतरा हो। आगे और अधिक चढ़ाई और दुर्गम रास्ते थे। अतः विनोद को विश्राम और इलाज के लिए वहीं सैनिक शिविर में छोड़ हम आगे बढ़ गए।

## वीर उसको जानिए

सुबह के 3 बज रहे थे और हमारे आगे दो अत्यधिक दुर्गम पहाड़ी रास्ते थे। हमें चलते हुए पूरे दो दिन तथा दो रातें हो चुकी थीं और उससे भी अधिक समय से मैं जाग रहा था। अब सिर्फ दोपहर तक का समय था। मार्सिमिक दर्रे के ऊपर पहुँचने के लिए। यदि न पहुँच पाए तो हमारा अभियान विफल हो जाएगा।

जैसे ही हम चले, कैमरामैन विनोद मेरी फिल्म बना रहा था और रॉबर्ट ने मुझसे पूछा, 'दो दिन का समय हो चुका है। क्या तुम्हें लगता है कि हम इस मिशन को पूरा कर सकेंगे?'

मैंने कहा, 'हाँ, हम अवश्य सफल होंगे। हम दुनिया के पाँच सबसे ऊँचे और दुर्गम पहाड़ी दर्रे पार कर चुके हैं। अब सिर्फ दो बचे हैं। उनको हम अब पार करेंगे।'

मैंने कह तो दिया, किंतु मैं जानता था कि हमारे पास बहुत सीमित समय शेष था और सामने असंभव चुनौती थी। मैं नहीं चाहता था कि किसी भी हाल में परिस्थिति मुझे पर हावी हो। मेरा लक्ष्य मछली की आँख के समान मेरे सामने था और उसके अतिरिक्त न मुझे कुछ दिख रहा था, न सूझ रहा था।

कारू नामक जगह के सैनिक शिविर से शुरू कर कुछ हलकी ढलान और चढ़ाई के इलाके को पार कर मैं दुनिया के तीसरे सबसे ऊँचे पहाड़ी दर्रे पर गाड़ी चढ़ाने लगा। मुझे कुछ साँस की समस्या होने लगी, किंतु मैंने अपना ध्यान सामने सड़क पर रखा और बढ़ता गया। एक गोली भी ली। कुछ समय बाद मैं ठीक हो गया। हम ऊपर पहुँच गए और मेरे सहयात्रियों ने उतरकर कुछ चित्र खींचे। मेरी किस्मत अच्छी थी, क्योंकि मौसम साफ था और धूप भी निकली थी। हम आगे बढ़ गए।

कुछ आगे उतरने के बाद एक सैनिक चौकी पर एक सैनिक हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। उसे हमारे साथ चलना था और मार्सिमिक दर्रे का मार्ग खोजने में हमारी सहायता करनी थी; क्योंकि मार्सिमिक की पहाड़ी पर सड़क नहीं थी, अतः आस-पास की पहाड़ियों में भटक जाने की पूरी संभावना थी।

## वीर उसको जानिए

पहाड़ियों से उतरते हुए हम आगे बढ़े। ढलान के समाप्त होते-होते सामने की पहाड़ियों के बीच से ज्यों ही हम निकले तो सामने का दृश्य अद्भुत था। यह परमात्मा की चित्रकारी थी। हमारे सामने 250 किलोमीटर लंबी एकदम साफ पानी की झील थी। एक बिंदु के बराबर भी गंदगी कहीं नहीं थी। सब एक चित्र के समान प्रतीत हो रहा था। हम उस चित्र में मानो समा-से गए थे।

हमारे साथ आए सैनिक ने बाईं ओर इशारा कर हमें वह चोटी दिखाई, जहाँ हमें पहुँचना था। भयानक दृश्य था। कहीं कोई सड़क नहीं थी। कुछ जगह फौज की विशालकाय गाड़ियों के पहियों के निशान थे और उनमें गाड़ी चलाना संभव नहीं था, क्योंकि पहियों के निशान बहुत गहरे धँसे हुए थे और उनके अंदर गाड़ी चलाने से हमारी गाड़ी के फँस जाने की संभावना थी। और तो और, पहाड़ी की तलहटी तक पहुँचने का रास्ता भी नहीं मिल रहा था।

समय का अभाव था। मैंने अधिक समय न गँवाते हुए दलदल, पत्थरों और चट्टानों के बीच से ही गाड़ी निकालनी शुरू की। इतने में एक ऊँची चट्टान मेरी गाड़ी के नीचे टकराई, किंतु मैं बढ़ता गया। वहाँ रुकना संभव नहीं था। मैं आशा कर रहा था कि हमारी गाड़ी को ऐसी कोई क्षति न हुई हो, जिससे आगे दिक्कत हो।

जैसे ही मैं इस दलदल और पत्थर चट्टानों के रास्ते से निकल पहाड़ पर चढ़ने लगा, मेरे सामने ढीली मिट्टी की एक एकदम सीधी चढ़ाई आई। देखकर ऐसा बिलकुल नहीं लग रहा था कि इस चढ़ाई पर कोई भी गाड़ी चढ़ सकती है। इस चढ़ाई पर तो पैदल चढ़ना भी संभव प्रतीत नहीं हो रहा था। किंतु कोई और रास्ता खोजने का या अधिक सोचने का समय नहीं था।

मैंने गाड़ी को तुरंत सबसे अधिक ताकतवाले गियर 'फोर बाई फोर लोअर' में लगाया, ईश्वर का नाम लिया और चढ़ना शुरू किया। इस 'फोर बाई फोर लोअर' गियर की पहली बार आवश्यकता पड़ी थी, लेकिन इस पहाड़ी पर तो शुरू से ही यह गियर लग गया था।

## वीर उसको जानिए

इस ढीली मिट्टी की चढ़ाई पर कुछ फिसलती, कुछ इधर-उधर हिलती-डुलती-सी हमारी गाड़ी चढ़ने लगी। संतुलन बनाए रखना आवश्यक था। कुछ ही समय में यह चढ़ाई खत्म हुई और हम आगे चढ़ने लगे। चढ़ाई भी बहुत थी और जगह-जगह पर बड़े-बड़े पत्थर व चट्टानें थीं। बड़ी सावधानी से गाड़ी को कभी बाईं तो कभी दाईं ओर चलाकर चढ़ाना पड़ रहा था। गाड़ी ढलान की ओर बहुत झुकी रहती और अधिक झुकाव से गाड़ी के पलट जाने का डर भी था। अतः मुझे बहुत सावधानी से गाड़ी चलानी पड़ रही थी।

अचानक मेरी नजर गाड़ी के इंजन का तापमान बतानेवाली सुई पर गई। सुई खतरे के निशान को लगभग पार ही कर चुकी थी। मैंने तुरंत गाड़ी बंद कर दी और अंकुश ने नीचे उतर बोनट (इंजन का ढक्कन) खोल दिया। अगर तापमान देखने में मुझे थोड़ी और देर हुई होती तो गाड़ी का इंजन बैठ जाता और फिर गाड़ी को वहाँ से संभवतः क्रेन के द्वारा उठाकर ही ले जाया जा सकता। अंकुश ने इंजन पर कुछ समय पानी डाल उसका तापमान कम किया और फिर हम आगे बढ़े।

इंजन का तापमान हर कुछ समय में बढ़ जाता और फिर हमें रुकना पड़ता। संभवतः चट्टान के टकराने से गाड़ी को नुकसान हुआ था और इसीलिए तापमान बढ़ रहा था। बार-बार रुकने के कारण समय भी अधिक लग रहा था। हमें दोपहर तक चोटी पर पहुँचकर वापस मुड़ना था, अन्यथा हम रात से पहले किसी सुरक्षित स्थान पर नहीं पहुँच पाते और इस ऊँचाई पर रात बिताने की सोचना मृत्यु को न्योता देने के समान था। अतः हमारे पास बहुत कम समय शेष था।

गाड़ी बार-बार रुक रही थी और सबको लग रहा था कि हम ऊपर नहीं पहुँच पाएँगे।

मोग्लिस्वरण ने कहा, “सर, समय हो रहा है और हमें वापस मुड़ना पड़ेगा।”

मैंने घड़ी की ओर देखा और कहा, “यदि हम 2 बजे तक ऊपर नहीं

## वीर उसको जानिए

पहुँचे तो वापस मुड़ जाएँगे।”

उस पहाड़ी पर रात गुजारना निश्चित ही मृत्यु के समान था। मैं नहीं चाहता था कि मेरे कारण मेरे साथ सफर कर रहे किसी भी व्यक्ति की जान खतरे में पड़े। केशव को कुछ समय से सिर दर्द और चक्कर की शिकायत हो रही थी।

वापस मुड़ने का समय होने ही वाला था और हम एक खड़ी चढ़ाई के सामने जाकर रुक गए थे। आगे चोटी कितनी दूर है, कुछ भी दिख नहीं रहा था। इस खड़ी चढ़ाई के कितना आगे और जाना है, कुछ अनुमान नहीं था। समय भी हो गया था और जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो सब निराशा में चेहरे नीचे किए हुए थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हमारा अभियान असफल हो गया था। मैं बहुत शांत था। मैंने गाड़ी का शीशा नीचे कर बाहर की परिस्थिति को आँका।

साँय-साँय करती हवा चल रही थी और मुझे अपने अंदर आती-जाती साँसों की आवाज भी सुनाई दे रही थी।

क्या मेरा मिशन असफल हो गया था ?

क्या मैं फिर हार गया था ?

यदि मैं स्वयं ही हार गया तो मैं दुनिया को जीत और सकारात्मकता का पाठ कैसे पढ़ाऊँगा ?

मैंने स्वयं से ये प्रश्न किए। मेरे अंदर से एक सैनिक की आवाज आई, ‘नहीं, मैं हार नहीं सकता। एक सैनिक कभी हार नहीं सकता।’

मैंने मुड़कर अपनी बाईं ओर बैठे अंकुश की ओर देखा और कहा, ‘अंकुश!’

उसने मेरी ओर देखकर कहा, ‘हाँ, सर!’

## वीर उसको जानिए

मैंने कहा, 'अब ऊपर जाकर ही रुकेंगे।'

उसने भी तुरंत कहा, 'ठीक है, सर। अब ऊपर जाकर ही रुकेंगे।'

मैंने गाड़ी को स्टार्ट कर गियर में लगाया और पूरी स्पीड दे दी। मेरे एक इशारे पर अंकुश ने हैंड ब्रेक हटा दिया और गाड़ी चढ़ने लगी। दाईं और बाईं ओर काटते मैं गाड़ी को इस खड़ी चढ़ाई पर चढ़ाने लगा। कुछ पल में ही गाड़ी का तापमान खतरे के निशान को पार कर गया। किंतु इस चढ़ाई पर रुकना संभव नहीं था, अतः मैं चढ़ाता गया। गाड़ी का इंजन किसी भी समय फट सकता था।

फिर जैसे ही गाड़ी इस खड़ी चढ़ाई के ऊपर पहुँची, हमारे सामने कुछ 20 गज के फासले पर एक सफेद पत्थर था, जिस पर इस पहाड़ी दर्रे का नाम 'मार्सिमिक' लिखा था। हम चोटी पर पहुँच गए थे। हम सफल हो गए थे।

मैं अपनी असीमित योग्यता की सोच को प्रमाणित करने निकला था और उसको सफलतापूर्वक प्रमाणित कर दिया था।

मैंने इतनी प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए इस पर्वत पर विजय नहीं पाई थी, अपितु मैंने तो स्वयं पर विजय पाई थी। और वह ही होती है 'अंतिम विजय', जिसकी खोज में जाने-अनजाने हर व्यक्ति रहता है। यह विजय और इस विजय को पाने की खोज सदैव चलती रहती है। वह खोज कभी समाप्त नहीं होती।

वह पत्थर मेरे सामने था, किंतु स्वयं पर विजय पा सकने के बाद मेरे लिए उस पत्थर तक पहुँचना आवश्यक नहीं रह गया था। हम सबके मन में एक मार्सिमिक के समान पहाड़ होता है, जिसको हम पूरी उम्र जीतने का प्रयास करते रहते हैं। इस पर्वत के सम्मान में और इसलिए कि मेरी खोज यहाँ समाप्त न हो, अपितु प्रारंभ हो, मैंने उस पत्थर तक न पहुँचने का निर्णय लिया और उस पत्थर से पाँच गज पहले ही अपनी गाड़ी रोक ली।

वहाँ से अपनी व्हीलचेयर पर उतरकर मैं उस पत्थर तक गया और पीछे



## वीर उसको जानिए

मुड़कर पहाड़ी श्रृंखला की सुंदरता व विशालता को निहारने लगा। मेरे हृदय में असीम शांति थी।

विनोद उस दृश्य को कैमरे में उतार रहा था। रॉबर्ट ने इस मिशन की सफलता पर मुझे अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए कहा। मैंने कहा, 'हम सबके मन में प्रश्नों और शंकाओं का एक मार्सिमिक पहाड़ होता है और उसी पहाड़ पर विजय पाने के प्रयास का नाम जीवन है। मेरा जीवन इस पर्वत के ऊपर पहुँचने से पहले बहुत खूबसूरत था और यहाँ पहुँचने के बाद यह जीवन और भी खूबसूरत होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।'

अपने इस मिशन को पूरा कर जब मैं वापस पहुँचा तो मेरा भव्य स्वागत हुआ। विभिन्न टी.वी. चैनल मेरे मिशन और उसकी सफलता पर समाचार दिखा रहे थे।

विभिन्न समारोहों में मुझे बुलाया जाता और सम्मानित किया जाता। मेरा नाम 'लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' में विश्व कीर्तिमान (वर्ल्ड रिकॉर्ड) की श्रेणी में शामिल हुआ। 'लिम्का बुक' ने उस वर्ष के पाँच सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों में मेरा नाम सम्मिलित किया और 'टाइम्स ऑफ इंडिया' समाचार-पत्र ने मुझे उस वर्ष के विशिष्ट उपलब्धियाँ हासिल करनेवाले भारतीयों की सूची में सम्मिलित किया, जिसमें अमिताभ बच्चन और सचिन तेंदुलकर जैसे नाम भी थे।

राज्य के मुख्यमंत्री ने मुझे 'राज्य गौरव' के सम्मान से सम्मानित किया। थल सेना प्रमुख ने मुझे प्रशस्ति-पत्र और मेडल से सम्मानित किया।

यह मेरे लिए बहुत प्रसन्नता और संतुष्टि की बात थी कि मुझे इस प्रकार सम्मानित किया जा रहा था। लेकिन मेरा स्वयं का यह मानना था कि यह तो मात्र वह स्थान था, जहाँ से मैं अपने आगे के जीवन और सामाजिक कार्य की शुरुआत कर सकता था। मेरा विचार था कि मैं जल्द-से-जल्द साधन व समर्थन जुटा सकूँ और जरूरतमंद बच्चों की सहायता कर सकूँ।

□

## वीर उसको जानिए

**अब तक :-**

‘जीवन में कठिनाइयों और चुनौतियों को अपना सौभाग्य समझो। कठिनाइयाँ और चुनौतियाँ तुम्हारे लिए स्वयं की योग्यता को प्रमाणित करने का अवसर होती हैं।’

‘मैं कैसे कर पाऊँगा, यह मुझे नहीं पता था; किंतु मैं अवश्य कर पाऊँगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास था।’

‘अपने लक्ष्य को पाने के लिए अपने आपको शांत रखना और अपने ध्यान को लक्ष्य अथवा मार्ग पर केंद्रित रखना अति आवश्यक है।’

‘विफलता का भय विफलता का मुख्य कारण है। कभी इस भय को अपने समीप न आने दें।’

मेरे सामाजिक कार्य की शुरुआत

## वो जरूरतमंद बच्ची

एक झकझोर देनेवाली घटना

**मैं** अपने समाज-सेवा के कार्य को शुरू करने और आगे बढ़ाने की बात ही सोच

रहा था कि एक दिन मेरे साथ कुछ घटित हुआ। रात 9 बजे का समय था और कड़के की ठंड भरी रात थी। हड्डियाँ जमा देनेवाली ठंड पड़ रही थी और धुंध भी थी। सब लोग सर्दियों के भारी कपड़ों से लदे और अपने दस्ताने से ढँके हाथों को भी अपनी जेबों में छुपा ठिठुरते-से इधर-उधर जा रहे थे।

मैंने देखा कि तीन वर्ष की एक बच्ची मात्र एक फटी हुई कमीज पहने नंगे बदन व नंगे पैर फुटपाथ पर खड़ी है और रो रही है। कुछ भीख माँगनेवाले बच्चे उसे अपने साथ ले आए थे और अब यहाँ छोड़कर इधर-उधर खेलने या भीख माँगने लग गए थे। मैंने तुरंत उन बच्चों को बुलवाया और अच्छी डाँट मारते हुए उस बच्ची को घर ले जाने के लिए कहा। वे बच्चे मेरी डाँट से घबराकर उस बच्ची को अपने साथ लेकर वहाँ से गायब हो गए। लेकिन मैं सोचता रह गया।

वह दृश्य उस दिन मेरे मन में ऐसा छपा कि आज तक नहीं निकला है। उस असहाय बच्ची की मदद न कर पाने पर मैंने स्वयं को बहुत असहाय महसूस किया और अब भी करता हूँ।

महात्मा गांधी ने कहा था, 'किसी समाज की उन्नति इस बात से आँकी जा सकती है कि उस समाज में सबसे दुर्बल और कमजोर सदस्य की क्या दशा है।'

## वीर उसको जानिए

हमारे समाज में सबसे कमजोर और जरूरतमंद ये बच्चे ही हैं। अतः मैंने निर्णय कर लिया कि साधन हों या न हों, समर्थन हो या न हो, मैं अपना समाज-सेवा का कार्य तुरंत प्रारंभ करूँगा और अधिक-से-अधिक जरूरतमंद बच्चों तक साधन व सहायता पहुँचाने की कोशिश करूँगा।

इसी उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए मैंने 'अपनी दुनिया : अपना आशियाना' नामक संस्था की स्थापना की। मैंने देखा था कि अन्य संस्थाएँ सिर्फ एक विशेष श्रेणी के बच्चों की ही सहायता करती थीं। कोई सिर्फ शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों के लिए, कोई सिर्फ मानसिक रूप से विकलांग बच्चों के लिए तो कोई सिर्फ अनाथ बच्चों के लिए काम करती थी। मैं चाहता था कि अगर मेरे पास कोई भी जरूरतमंद बच्चा आए तो मैं उसकी सहायता कर सकूँ।

धीरे-धीरे आनेवाले वर्षों में मैंने विभिन्न तरह से जरूरतमंद बच्चों के लिए परियोजनाएँ चलाईं। गली में भीख माँगनेवाले बच्चों के लिए, दैनिक भते पर काम करते गरीब मजदूरों के बच्चों के लिए, गाँवों के बच्चों के लिए, विकलांग बच्चों के लिए एवं अनाथ व असहाय बच्चों के लिए मैंने कार्य किया।

मेरा यह मानना है कि हमें स्वयं में और समाज में सुधार लाने के लिए कार्य करना चाहिए। परिस्थितियाँ और सरकार तो हमारा प्रतिबिंब हैं। यदि हम में और समाज में सुधार आएगा तो परिस्थितियाँ अपने आप सुधर जाएँगी।

हाँ, मैं एक सैनिक हूँ। मैं एक सैनिक बनना चाहता था। मैं फौजी सैनिक न बन सका, किंतु एक सामाजिक सैनिक हूँ। आज की सबसे बड़ी लड़ाई समाज में लड़ी जानी है—समाज-सुधार की लड़ाई।

'जो स्वयं से लड़ता है, अपनी कमजोरियों से लड़ता है, वो ही जीतता है। जो सदैव दूसरों से लड़ता रहता है, वो हमेशा जीतकर भी हार जाता है।'

हम सबका कर्तव्य है कि जिस समाज ने हमें जन्म दिया, संरक्षण दिया

## वीर उसको जानिए

और पाला है, हम उस समाज के उद्धार के लिए कार्य करें और उसमें अपना पूरा योगदान दें।

मेरी यह अंतिम विजय की खोज और लड़ाई सदैव चलती रहेगी। जीवन इसी लड़ाई और इसी खोज का नाम है। जब तक मैं जीवित हूँ, तब तक मेरा कार्य ही मेरे लिए प्रमुख रहेगा।

मेरे सामाजिक कार्य के लिए मुझे विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उनमें से कुछ हैं—

1. 3 दिसंबर, 2006 को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा 'राष्ट्रीय कार्य आदर्श पुरस्कार' प्राप्त हुआ।
2. 2010 में 'कर्मवीर चक्र' से सम्मानित किया गया।
3. 2011 में 'माइंड ऑफ स्टील पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।
4. 2012 में 'कर्मवीर पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।
5. 2012 में ही 'सी.एन.एन.' टी.वी. चैनल के द्वारा 'रियल हीरो' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार मुझे सचिन तेंदुलकर के हाथों मिला।

मैं आभारी हूँ और भाग्यशाली हूँ कि मुझे इतने सम्मान मिले; किंतु मेरा वास्तविक कार्य तो आगे है। आनेवाले समय में मैं समाज और देश की उन्नति में अधिक-से-अधिक योगदान देना चाहता हूँ।

इस देश को सामाजिक सैनिकों की आवश्यकता है। हाँ, मैं एक सैनिक हूँ, एक सामाजिक सैनिक और मैं हमेशा एक सैनिक रहूँगा। हम सबको एक सामाजिक सैनिक बनना है।

जय भारत! वंदे मातरम्! जय हिंद!

□

## जीवन की सीख

**मे**रे जीवन में जो भी कुछ मैंने सीखा उसे कुछ सिलसिलेवार यहाँ लिख रहा हूँ। हाँ, यह अवश्य कहना चाहूँगा के किसी भी शिक्षा अथवा सिद्धांत के पीछे उसका सही संदर्भ देखना भी आवश्यक है। किसी भी शिक्षा को आँखें बंद करके प्रयोग नहीं करना चाहिए। परिस्थिति को देखते हुए और अपने विवेक का प्रयोग कर ही निर्णय लेना चाहिए।

1. अच्छे कर्म करने में विश्वास रखें—कर्म के फल का अभिप्राय यह नहीं होता के अच्छा कर्म करने से इनाम मिलेगा, कार्य में उन्नति होगी, समृद्धि मिलेगी या ख्याति प्राप्त होगी। कर्म के फल का अभिप्राय है के अच्छा कर्म करने से उस कार्य में आनंद आता है और संतुष्टि मिलती है। वहीं बुरा कार्य करने से कोई शारीरिक आनंद अथवा सुख तो पा सकता है किंतु उसके पश्चात विचलित अथवा परेशान रहता है। अपने लिए अथवा दूसरों के लिए अच्छा कार्य करना सदैव शांतिप्रदायक एवं आनंदपूर्ण होता है।
2. अच्छी एवं शिक्षाप्रद बातों को हमेशा याद रखें—अच्छी एवं शिक्षाप्रद बातें सुनने के साथ साथ यह भी उतना ही आवश्यक है के हम उन्हें याद भी रखें और अपने जीवन में उन्हें अपनाएँ। अच्छी एवं शिक्षाप्रद बातें हम सबको सुनने को मिलती हैं, किंतु साधारणतः हम उन बातों को सुनकर भूल जाते हैं और उन बातों का लाभ नहीं उठा पाते। मेरा यह मानना है की किसी भी प्रार्थना के करने से अधिक आवश्यक है के हम अच्छी और शिक्षाप्रद बातों को समय समय पर याद करें। मेरा यह

## वीर उसको जानिए

मानना है के यदि हम प्रार्थना करना भूल भी जाएँ तो शायद इश्वर हम पर क्रोधित न हो, किंतु यदि हम शिक्षाप्रद बातों को याद रख और उनका प्रयोग कर कुछ अच्छा कर पाएँ तो ईश्वर हमसे अधिक प्रसन्न होगा।

3. हमेशा सकारात्मकता को एकत्र करें—अपने जीवन में सकारात्मकता को संजो-संजो कर अपने आस पास सकारात्मकता का एक पर्वत बना लें। सकारात्मक सोच, सकारात्मक मित्र और सकारात्मक कार्य, इन सबको अपने जीवन में एकत्र करें और अपने पास संजो कर रखें। इससे हमारे पास इतनी सकारात्मकता एकत्र हो जाती है कि फिर थोड़ी-बहुत नकारात्मकता, नकारात्मक घटनाएँ अथवा नकारात्मक लोग हमें प्रभावित नहीं कर पाते।
4. स्वयं में अपने विश्वास को हमेशा बढ़ाएँ—विश्वास सफलता का मुख्य कारण है और भय एवं शंका विफलता के मुख्य कारण हैं। विश्वास परिश्रम से आता है। जितना परिश्रम करोगे, तैयारी करोगे, विश्वास उतना ही बढ़ेगा। भय और शक की किसी भी बात के मन में आते ही तुरंत उसे निकाल दूर करें और अपने आप को निरंतर यह विश्वास दिलाते रहें के आप अवश्य सफलतापूर्वक परिश्रम कर पाओगे और अपने उद्देश्य में अवश्य सफल होवोगे। ऐसा करने पर ही आपके सफल होने की संभावना अधिकतम रहेगी। यह मात्र एक कही सुनी बात नहीं है अपितु मैंने इसे अपने जीवन में निरंतर क्रियान्वित किया है और सदैव सफलता प्राप्त की है।

महाभारत का वह किस्सा हम सबको पता है जिसमें कर्ण और अर्जुन के युद्ध के समय जब भी कर्ण विश्वास के साथ कहता था के वह सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर है तो उसका सारथी शल्य उसके मन में यह कहकर शंका डाल देता था के वह अच्छा धनुर्धर तो है किंतु अर्जुन सर्वश्रेष्ठ है। वहीं जब भी अर्जुन का विश्वास कम होता तो कृष्ण भगवान् यह

## वीर उसको जानिए

कहकर उसका विश्वास बढ़ा देते की वह सर्वश्रेष्ठ है। अतः हमें सदैव अपने विश्वास को बढ़ाते रहना चाहिए।

5. अपने ध्यान को अपने उद्देश्य पर केंद्रित रखें—अपनी सोच और अपने प्रयासों को सदैव अपने उद्देश्यों पर केंद्रित रखें। किसी भी व्यर्थ की सोच में समय न गँवाएँ। हम अपना अधिकतम समय व्यर्थ की बातों में गँवा देते हैं। इस से हमारे पास अपने उद्देश्य पर लगाने के लिए कम समय बचता है। अपने ध्यान एवं अपने श्रम को अपने उद्देश्य पर केंद्रित रखना आवश्यक है।
6. किसका भला होगा? यह सोचकर ही कार्य करें—किसी भी बात को कहने से पहले और किसी भी कार्य को करने से पहले यह सोच लें के उस बात के कहने से या उस कार्य के करने से किसका भला होगा। यदि किसी का भला नहीं होगा तो उस बात को न कहें और उस कार्य को न करें।
7. सफलता को अपना निर्णय बना लें—सफलता एक संभावना नहीं होनी चाहिए। सफलता एक निर्णय होना चाहिए। सफल होने का निर्णय कर लें और फिर यह देखें के सफल होने के लिए क्या क्या करा जा सकता है। इसके बाद अपनी सारी योग्यता उन सब कार्यों को करने में लगा दें जिनसे सफलता प्राप्त की जा सकती है।
8. अपनी तैयारी को मजबूत करें—आप सफल होंगे या नहीं होंगे यह सिर्फ और सिर्फ एक बात पर निर्भर करेगा के आपने तैयारी कितनी करी है। अपनी तैयारी को उस स्तर तक ले जाएँ जहाँ हारने की कोई संभावना ही न रहे। यहाँ यह बताना भी आवश्यक है के हमें अधिक से अधिक विस्तार से तैयारी करनी चाहिए और अधिक-से-अधिक विषयों और विकल्पों को ध्यान में रखते हुए तैयारी करनी चाहिए।
9. भाग्य के विषय में न सोचें—किस्मत या भाग्य के विषय में अधिक सोच अपना समय व्यर्थ न गँवाएँ। किस्मत आपको एक बार रोक



## वीर उसको जानिए

सकती है, किस्मत आपको दो बार रोक सकती है किंतु किस्मत आपको हर बार नहीं रोक सकती। निरंतर प्रयास करते रहेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी।

10. प्रतिदिन अपने लक्ष्य को पाने के लिए कार्य करें—हम में से सब लोग अपने जीवन में कुछ ख्वाब देखते हैं। कुछ जीवन में सपनें होते हैं कुछ पाने के अथवा कुछ कर दिखाने के। किंतु हम में से अधिकतर लोग उन सपनों को पाने में असमर्थ रहते हैं।

मैं जब छात्रों/बच्चों से मिलता हूँ मैं उनसे पूछता हूँ—

‘क्या आपके जीवन में कुछ सपनें अथवा उद्देश्य हैं जिन्हें आप अपने जीवन में पाना चाहते हैं?’

छात्र जवाब देते हैं—‘हाँ, अवश्य हमारे जीवन के सपनें हैं कुछ पाने के, कुछ कर दिखाने के’

मैं फिर उनसे पूछता हूँ—‘उन सपनों को पाने के लिए और पाने की दिशा में आज आपने क्या किया? कुछ किया?’

छात्रों का जवाब होता है ‘आजतो कुछ नहीं किया’

मैं पूछता हूँ ‘कल कुछ किया था?’

वो बोलते हैं ‘कल भी कुछ नहीं किया था’

फिर मैं पूछता हूँ ‘आज भी कुछ नहीं किया, कल भी कुछ नहीं किया था, फिर अपने सपनों को कैसे पाओगे’

हम प्रतिदिन इतनी सारी गतिविधियाँ और कार्य करते हैं, मनोरंजन करते हैं, समय व्यय करते हैं, किंतु अपने जीवन के सपनों को पाने की दिशा में कुछ नहीं करते। यदि हमें अपने जीवन के सपनों को पाना है जो हमें चाहिए के हम निरंतर प्रतिदिन उस दिशा में कुछ-न-कुछ कार्य करें और उस दिशा में आगे

## वीर उसको जानिए

बढ़ें। हमारा कार्य हमारे लिए सबसे पहले आना चाहिए।

11. हमारा जीवन हमेशा कर्मप्रधान होना चाहिए—जब तक हमारा जीवन कर्मप्रधान रहेगा, तब तक हमें कोई समस्या नहीं होगी। और अगर हमारा जीवन भावना प्रधान हो गया तो हमें सिर्फ समस्या ही होगी। किसी भी परिस्थिति में यह देखना आवश्यक है के हम कर क्या सकते हैं और हमें करना क्या है।
12. सबसे मीठा बोलें और मित्रता रखें—हमें हमेशा प्रयास करना चाहिए के हम सबसे मीठा बोलें और सब के साथ मित्रता रखें। हाँ, हमारे मतभेद भी हो सकते हैं और होंगे भी, किंतु हमारा प्रयास होना चाहिए के आपसी मतभेदों पर ध्यान देने के बजाय उन विषयों पर ध्यान दें जिसमें हमारी सहमती हो और उनपे ध्यान दे हम अपने और दूसरों के लिए कुछ अच्छा कर सकें।
13. हमेशा ऊँचा लक्ष्य रखें—हमें कोशिश करनी चाहिए के हमारी जीत का अंतर अधिक-से-अधिक हो और यह भी कोशिश करनी चाहिए के हमारा उद्देश्य अथवा लक्ष्य अधिक-से-अधिक ऊँचा हो। इस से हमारे जीतने अथवा सफल होने की संभावना अधिकतम रहती है।
14. निर्धारित समय से बहुतपहले काम खत्म करें—हमें प्रयास करना चाहिए के हम किसी भी काम को उसके निर्धारित समय से बहुत पहले सम्पन्न कर लें। इस से हमारे पास हमेशा अतिरिक्त समय रहता है उस काम में रह गई कमियों को दूर करने के लिए या किसी और काम को करने के लिए भी समय रह जाता है। इस से हम किसी भी काम को समय पे और श्रेष्ठ तरीके से कर पाते हैं।
15. किसी से नफरत न करो—हमारे जीवन में यह आवश्यक है के हम किसी से भी नफरत न करें। यहाँ तक के अपने शत्रु से भी नफरत न करें। हाँ, हमें अपने शत्रु के विरुद्ध कार्रवाई करनी पढ़ सकती है, किंतु नफरत नहीं करनी चाहिए।

## वीर उसको जानिए

चाणक्य ने चानाक्यनीतिमें कहा है के अगर आपके शत्रु ने आपके मन में अपने लिए नफरत पैदा कर दी तो समझ लो उसने आधी लड़ाई तो जीत ही ली। क्योंकि नफरत करने के बाद हम उस व्यक्ति अथवा शत्रु के वश में हो जाते हैं जिस से हम नफरत करते हैं और हमारा हारना लगभग निश्चित हो जाता है।

उदहारण के रूप में मैं आपको महाभारत का उदहारण दे सकता हूँ। पांडव कौरवों से नफरत नहीं करते थे, किंतु कौरव पांडवों से नफरत करते थे और हम यह जानते हैं के जीत किसकी हुई थी।

16. संकट और कठिनाई से न डरो—जीवन में हम संकट और कठिनाई उठाए बिना कोई सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। किसी भी खेल, कार्य अथवा व्यवसाए में सफल होने के लिए कुछ जोखिम तो उठाना ही पड़ता है। किंतु हमारा प्रयास होना चाहिए के हम अपने श्रम, साहस और तय्यारी से उस जोखिम को कम-से-कम बना दें और अपनी सफलता की संभावना को अधिक-से-अधिक कर लें।
17. स्वयं पर विजय पाने का प्रयास करें—किसी और पे विजय पाने से अधिक आवश्यक है कि हम स्वयं पर विजय पाएँ। यदि हमने स्वयं पर विजय नहीं पाई है तो हमारे किसी भी और विजय के पाने की संभावना कम हो जाती है और हम यदि विजय पा भी लें तो उस विजय का महत्त्व नहीं रह जाता। हमें अपना अधिकतम समय और प्रयास किसी से लड़ने के बजाय अपनी कमियों को दूर करने में लगाना चाहिए।

□

## प्रेरणात्मक शायरी

मेरी कुछ प्रेरणात्मक शायरी यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ

1. ऐ खुदा, दे कुछ और तकलीफ मुझे, नई कोई चुनौती तो दे  
के जिंदगी को और जीने को जी चाहता है  
कुछ जो आँधियों को उठा, कुछ तूफान तो हों  
के आसमानों को फिर छूने को जी चाहता है
2. संभल कर चलते हैं वो जो नहीं जानते  
जिया तो जाता ही है बेखौफ हो कर
3. हमसे दुश्मनी की ख्वाइश रखते हैं वो,  
के जो हमारे जवाब के काबिल भी नहीं
4. नसीब और मुकद्दर की बातें बुजदिलों से पूछो,  
हम तो जाँबाज हैं, हम हर सफर मुकम्मल किया करते हैं
5. किस बात का गम मनाता है साथी, किस बात का है खैफ तुझको  
ये दुनिया सब मिट्टी है मेरे Bhaai, और फिर तू?, तू तो मिट्टी  
भी नहीं

वीर उसको जानिए

6. मोहब्बत की शमा जलाआ दोस्तों,  
और ये न सोचो के रोशन जहाँ होगा के नहीं
7. नवीन जिंदगी को बहुतों ने जिया होगा, लेकिन अब हम जिएँगे  
और जिंदगी को हमारे नाम से जाना जाएगा
8. ऐसे रुखसत हुए हमारे जनाजे से वो, के मुड के नहीं देखा, फिर याद  
नहीं करते नवीन, ये इल्म नहीं उनको, हम जैसे आशिकमौत से मरा नहीं करते।

—नवीन गुलिया

□□□